हिंदी भाषा शिक्षण

वर्ष - द्वितीय, सेमेस्टर - चतुर्थ

द्विवर्षीय डी0एल0एड0 पाठ्यक्रम पर आधारित संदर्भ सामग्री

वर्ष - 2024

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

राज्य हिन्दी संस्थान · उ.प्र. वाराणसी
उत्तिष्ठत जाग्रत

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश)

डी०एल०एड० पाठ्यक्रम पर आधारित हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रशिक्षण सन्दर्भ सामग्री का विकास

वर्ष - द्वितीय, सेमेस्टर - चतुर्थ

वर्ष - 2024

मुख्य संरक्षक : **डॉ० एम.के. शन्मुगा सुन्दरम,** प्रमुख सचिव, बेसिक शिक्षा, उ०प्र० शासन।

संरक्षक : **श्रीमती कंचन वर्मा,** महानिदेशक (स्कूल शिक्षा), उ०प्र० तथा राज्य परियोजना निदेशक, उ०प्र० सभी के लिए शिक्षा परियोजना परिषद्, लखनऊ।

निर्देशन : **श्री गणेश कुमार,** निदेशक, राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

परामर्श : **डॉ० पवन कुमार,** संयुक्त निदेशक (एस०एस०ए०), राज्य शैक्षिक अनुसंधान एवं प्रशिक्षण परिषद, उ०प्र०, लखनऊ।

समन्वयन : **श्रीमती चन्दना रामइकबाल यादव,** निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।
डॉ० ऋचा जोशी, पूर्व निदेशक, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

समीक्षा : **डॉ० रामसुधार सिंह,** (पूर्व विभागाध्यक्ष, हिन्दी विभाग, यू०पी० कॉलेज, वाराणसी), **प्रो० सत्यपाल शर्मा,** (प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, बी०एच०यू०), **डॉ० उदय प्रकाश,** (प्रोफेसर, श्री बलदेव पी०जी० कालेज, बड़ागाँव, वाराणसी)

सम्पादन : **डॉ० प्रदीप जायसवाल,** शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।
श्री देवेन्द्र कुमार दुबे, शोध प्रवक्ता, राज्य हिन्दी संस्थान, उ०प्र०, वाराणसी।

लेखक मंडल : **डॉ० प्रसून कुमार सिंह** (प्रवक्ता, डायट, प्रयागराज), **डॉ० दिनेश कुमार यादव** (प्रवक्ता, डायट, कौशाम्बी), **डॉ० अजीत कुमार धुसिया** (प्रवक्ता, डायट, मऊ), **डॉ० जितेन्द्र गुप्ता** (प्रवक्ता, डायट, सन्त कबीर नगर), **श्री अमरेन्द्र कुमार मिश्र** (प्रवक्ता, डायट, प्रतापगढ़), **डॉ० मनीष कुमार यादव** (प्रवक्ता, सी०टी०ई०, वाराणसी), **डॉ० हरिओम त्रिपाठी** (प्रवक्ता, डायट, सुलतानपुर), **श्री योगिराज मिश्र** (प्रवक्ता, रा०शि०सं०, प्रयागराज), **श्री आदर्श कुमार सिंह** (प्रवक्ता, डायट, देवरिया), **श्री विनय कुमार मिश्र** (प्रवक्ता, डायट, फतेहपुर), **श्री सुदर्शन यादव** (से०नि० प्रवक्ता, डायट, गोरखपुर), **डॉ० अभिषेक दुबे** (प्रवक्ता, वि०ना०रा०इ० कॉलेज, भदोही), **श्री हरिओम तिवारी** (प्रवक्ता, शां०स्व०भा०इ० कॉलेज, अमिला, मऊ), **डॉ० निर्मल जायसवाल** (प्रवक्ता, रा०इ० कॉलेज, प्रयागराज), **डॉ० प्रेमलता** (प्रवक्ता, पं०दी०उ०मा०इ० कॉलेज, अम्बेडकरनगर), **डॉ० चंचल** (प्रवक्ता, बा०इ० कॉलेज, मऊ), **डॉ० दीपा द्विवेदी** (प्रवक्ता, रा०बा०इ० कॉलेज, सुल्तानपुर), **डॉ० विभा सिंह** (स०अ०, कि०इ० कॉलेज, बरहनी, चन्दौली), **श्री मनमोहन सिंह यादव** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, खानपुर, गाजीपुर), **डॉ० नीलम वर्मा** (स०अ०, रा०हा० स्कूल, गरला, चन्दौली), **डॉ० विशालाक्षी देवी** (स०अ०, रा०बा०इ० कॉलेज चोलापुर, वाराणसी), **डॉ० प्रतिभा मिश्रा** (स०अ०, उ०प्रा०वि० पाली, भदोही), **श्री प्रवीण कुमार द्विवेदी** (स०अ०, उ०प्रा०वि० धरतीडोलवा, सोनभद्र), **श्री मिथिलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० पचेवरा, मीरजापुर), **श्री शैलेश कुमार सिंह** (स०अ०, प्रा०वि० कैनाल बस्ती, मीरजापुर), **श्री विकास शर्मा** (स०अ०, क०वि० नगला सूरजभान, आगरा) **श्री रामनारायण द्विवेदी** (स०अ०, प्रा०वि० अयोध्या, वाराणसी), **डॉ० भानुप्रकाश धर द्विवेदी** (स०अ०, कं०वि० बढ़ैनी कला, वाराणसी), **डॉ० सरोज पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० गाडीवानपुर, वाराणसी), **श्री हिमांशु मिश्रा** (स०अ०, कं०वि० ढोलो, सोनभद्र), **डॉ० नितिकेश यादव** (स०अ०, क०वि० चकवा, जौनपुर), **डॉ० अखिलेश कुमार पाण्डेय** (स०अ०, प्रा०वि० होलापुर, वाराणसी), **श्रीमती गायत्री त्रिपाठी** (स०अ०, क०वि० मल्टीस्टोरी राबर्टगंज, सोनभद्र), **श्री वेद चन्द्रनाथ त्रिपाठी** (स०अ०, क०वि० मानिकपुर लार, देवरिया)

डिजायनिंग एवं ग्राफिक्स : **श्री विकास शर्मा** (सहायक अध्यापक, कम्पोजिट विद्यालय नगला सूरजभान, शमसाबाद, आगरा)

आवरण : **श्री कासिम फ़ारुखी,** (प्रवक्ता–कला, राज्य शिक्षा संस्थान, उ०प्र०, प्रयागराज)

आभार प्रशिक्षण संदर्भ साहित्य के विकास में अनेक पुस्तकों का अवलोकन व पाठ्यसामग्री का उपयोग किया गया है। हम उनके प्रति आभारी हैं।

निदेशक की कलम से

गणेश कुमार
निदेशक

राज्य शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद, उत्तर प्रदेश, लखनऊ।
फोन (कार्यालय) : 0522–2780385, 2780505
(फैक्स) : 0522–2781125
ई–मेल : dscertup@gmail.com

संदेश

भाषा अभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम है। भाषायी कौशल के समुचित विकास से सभी विषयों को सीखना सरल, सुगम एवं प्रभावी हो जाता है। बच्चों में अपेक्षित भाषायी कौशल विकसित करने के उद्देश्य से शिक्षकों को प्रभावी प्रशिक्षण प्रदान करना हमारी प्राथमिकता है। हिन्दी शिक्षण को सरल, रुचिकर व बोधगम्य बनाने, रचनात्मक चिंतन एवं प्रभावी संप्रेषण कौशल के विकास एवं प्रशिक्षकों में क्षमता संवर्धन हेतु राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी द्वारा द्विवर्षीय डी0एल0एड0 पाठ्यक्रम पर आधारित **'हिन्दी भाषा शिक्षण'** हेतु प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है।

प्रस्तुत प्रशिक्षण साहित्य के माध्यम से शिक्षक–प्रशिक्षकों एवं डी0एल0एड0 प्रशिक्षुओं में प्रभावी हिन्दी शिक्षण कौशल एवं भाषायी दक्षताओं की समझ को बेहतर बनाने हेतु नवाचारी गतिविधियों, क्रिया–कलापों, युक्तियों, आदर्श शिक्षण प्रविधि एवं योजनाएँ, आदर्श प्रश्न–पत्र, केस स्टडी, श्रव्य–दृश्य सामग्री आदि को समाहित करते हुए आदर्श भाषा शिक्षण के क्रियान्वयन को प्रोत्साहित किया गया है। इसके माध्यम से राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 में उल्लिखित भाषायी कौशल के विकास सम्बन्धी अनुशंसा को क्रियान्वित करने में भी सफलता मिलेगी।

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी का यह प्रयास सराहनीय है। हिन्दी भाषा शिक्षण हेतु प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री के विकास एवं प्रयोग से जुड़े सम्बन्धित समस्त हितधारकों को मेरी बधाई एवं शुभकामनाएँ।

29/11/2024

(गणेश कुमार)

प्राक्कथन

राष्ट्रीय शिक्षा नीति 2020 मानती है कि शिक्षा व्यवस्था में मौलिक सुधारों का केंद्र शिक्षक होता है। अतः यह आवश्यक हो जाता है कि शिक्षकों को गुणवत्तापूर्ण प्रशिक्षण प्रदान किया जाए। इसी के दृष्टिगत डी0एल0एड0 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम पर आधारित सेमेस्टरवार (कुल चार सेमेस्टर) प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री का विकास किया गया है। इस प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री द्वारा डी0एल0एड0 प्रशिक्षण हेतु प्रामाणिक व उपयोगी संदर्भ सामग्री के अंतर्गत सरल एवं सहज गतिविधियों एवं क्रिया–कलापों का संकलन करते हुए उनके कक्षा–कक्ष में क्रियान्वयन हेतु प्रोत्साहित किया गया है।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति की अनुशंसा इस बात को महत्व देती है कि गतिविधियाँ एवं शिक्षण अधिगम सहायक सामग्री आदि के अनुप्रयोग से बच्चे तेजी से विषय की अवधारणाओं को समझ लेते हैं। इस परिप्रेक्ष्य से प्रस्तुत पुस्तक में भाषाई कौशलों के विकास, हिंदी भाषा की ध्वनियों को सुनकर समझते हुए शुद्ध उच्चारण करना, देवनागरी लिपि की विशेषताएँ, विराम चिह्नों का प्रयोग, रचनात्मकता तथा शिक्षण विधियों को नवाचारी तरीके से सीखने–समझने का प्रयास किया गया है। इसकी सहायता से जहाँ एक और प्रशिक्षक डी0एल0एड0 शिक्षकों को आनंदपूर्ण ढंग से प्रशिक्षित कर सकेंगे, वहीं दूसरी ओर डी0एल0एड0 प्रशिक्षु भी इसकी सहायता से विद्यालय में बच्चों को खेल–खेल में भाषाई कौशल सिखा पाने में सक्षम होंगे।

मेरा विश्वास है कि डी0एल0एड0 के हिन्दी विषय के पाठ्यक्रम पर आधारित सेमेस्टरवार विकसित प्रशिक्षण संदर्भ सामग्री शिक्षक–प्रशिक्षकों को प्रभावी प्रशिक्षण करने में उपयोगी सिद्ध होगी तथा सेवापूर्व प्रशिक्षण प्राप्त कर रहे डी0एल0एड0 प्रशिक्षुओं के लिए भी अपनी अर्थपूर्ण भूमिका निभाएगी।

(चन्दना रामइकबाल यादव)
निदेशक
राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश,
वाराणसी।

विषय सूची

इकाई 1
पृष्ठ संख्या : 9–12

अनिवार्य संस्कृत में अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग आदि का ध्यान रखते हुए उच्चारण वाचन एवं लेखन

1.1 अनुस्वार
1.2 विसर्ग
1.3 हलन्त
1.4 अनुनासिक
1.5 श, ष, स के उच्चारण की शुद्धता

इकाई 2
पृष्ठ संख्या : 13–18

पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़ कर समझना

2.1 पर्यावरण संरक्षण
2.2 नारी शिक्षा
2.3 महामारी (कोविड-19)
2.4 जल संरक्षण
2.5 जनसँख्या नियंत्रण
2.6 अशिक्षा

इकाई 3
पृष्ठ संख्या : 19–22

दिए गये अनुच्छेदों के शीर्षक लिखना

3.1 शीर्षक का चुनाव
3.2 अच्छे अनुच्छेद की विशेषताएँ

इकाई 4
पृष्ठ संख्या : 23–68

उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित निबन्ध, क़हानी, एकांकी, यात्रा वृत्तान्त, जीवनी, आत्मकथा, पत्र लेखन, नाटक के लेखकों का सामान्य परिचय उनका अध्ययन व अध्यापन कार्य

4.1 कविता (काव्य)
4.2 कविता (काव्य) के भेद
4.3 प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ
4.4 निबन्ध (निबन्ध की विशेषताएँ, निबन्ध के प्रकार)
4.5 प्रमुख निबंधकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ
4.6 कहानी (कहानी के तत्त्व, कहानी के प्रकार, कहानी के शैलीगत भेद)
4.7 प्रमुख कहानीकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी रचनाएँ
4.8 एकांकी (एकांकी शिक्षण की विधियाँ, एकांकी के तत्त्व)
4.9 हिन्दी एकांकी का विकास
4.10 हिन्दी की प्रमुख एकांकी
4.11 प्रमुख एकांकी रचनाकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ
4.12 यात्रा वृत्तान्त (यात्रा वृत्तान्त की विशेषताएँ)
4.13 प्रमुख यात्रा वृत्तान्त एवं उनके लेखक
4.14 जीवनी
4.15 हिन्दी के प्रमुख जीवनी लेखक
4.16 पत्र लेखन
4.17 हिन्दी के प्रमुख पत्र साहित्य और उनके लेखक
4.18 प्रमुख पत्र लेखन के रचनाकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ
4.19 नाटक
4.20 नाटक के तत्त्व
4.21 हिन्दी नाटकों का विकास
4.22 हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार

इकाई 5

पृष्ठ संख्या : 69–77

अनिवार्य संस्कृत के पाठों का अध्यापन, नीति श्लोकों को कंठस्थ कराना

इकाई 6

पृष्ठ संख्या : 78–84

संस्कृत के शब्द भंडार में वृद्धि हेतु कठिन शब्दों को चुनना, संकलन करना और वाक्य प्रयोग कराना

6.1 कठिन शब्द और उनके अर्थ स्पष्टीकरण की प्रक्रिया

- पाठ योजना प्रारूप(व्याकरण)
- पाठ योजना (कहानी)
- क्रियात्मक अनुसंधान
- प्रतिदर्श प्रश्न-पत्र
- संदर्भग्रंथ सूची

इकाई 1

अनिवार्य संस्कृत में अनुस्वार, हलन्त, विसर्ग आदि का ध्यान रखते हुए उच्चारण वाचन एवं लेखन

1.1 अनुस्वार
1.2 विसर्ग
1.3 हलन्त
1.4 अनुनासिक
1.5 श, ष, स के उच्चारण की शुद्धता

प्रशिक्षण सम्प्राप्ति

- ❖ प्रशिक्षु अनुस्वार, हलन्त और विसर्ग आदि का ध्यान रखते हुए शुद्ध उच्चारण करते हैं।
- ❖ अनुस्वार, हलन्त और विसर्ग से बने शब्दों को प्रशिक्षु सुनकर शुद्ध लेखन करते हैं।
- ❖ प्रशिक्षु अशुद्धियों का ध्यान रखते हुए उचित प्रवाह के साथ वाचन करते हैं।

विचारों/भावों का संप्रेषण हम भाषा के माध्यम से करते हैं। जब भाषा का उच्चारण शुद्ध हो तब अंतर्निहित भावों का आदान–प्रदान सहजता पूर्वक हो जाता है। इसी उद्देश्य को ध्यान में रखते हुए इस इकाई में अनुस्वार, विसर्ग और हलन्त आदि से संबंधित व्याकरणिक बिन्दुओं पर कार्य किया गया है। इस इकाई में शुद्ध उच्चारण, उचित प्रवाह से वाचन तथा सुनकर शुद्ध लेखन जैसे विषय सम्मिलित हैं।

प्रशिक्षक हेतु निर्देश

1. उच्चारण विधा से संबंधित मुद्रित पृष्ठ को प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं में वितरित करेंगे और उसका वाचन कराएँगे।
2. प्रोजेक्टर पर प्रशिक्षक उच्चारण विधा वाली श्रव्य–दृश्य सामग्री प्रशिक्षुओं को दिखाएँगे तथा उस पर चर्चा करेंगे।
3. अनुस्वार, विसर्ग और हलन्त के प्रयोग वाले शब्दों को प्रशिक्षक बोलेंगे तथा प्रशिक्षु उसे सुनकर अभ्यास–पुस्तिका पर लिखेंगे।

नोट– प्रशिक्षकों को अनुस्वार (ं) और अनुनासिक (ँ) की अवधारणा स्पष्ट होनी चाहिए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षु उच्चारण विधा से संबंधित मुद्रित पृष्ठ आदि की सहायता से बच्चों को शुद्ध उच्चारण और वाचन का अभ्यास कराएँगे।
2. प्रशिक्षु प्रोजेक्टर/मोबाइल/कंप्यूटर/लैपटॉप/टैबलेट जैसी उपलब्ध सामग्रियों के द्वारा उच्चारण से संबंधित श्रव्य–दृश्य सामग्री बच्चों को दिखाएँगे एवं उस पर चर्चा करेंगे।
3. प्रशिक्षु बच्चों को अभ्यास–पुस्तिका पर उच्चारण से संबंधित शब्द/वाक्य सुनकर लिखने का अभ्यास कराएँगे तथा उनकी त्रुटियों आदि का भी निवारण करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

गतिविधि 1

गतिविधि का नाम : आओ शब्द लिखें

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : अनुस्वार, अनुनासिक, हलन्त और विसर्ग के प्रयोग से युक्त मुद्रित पृष्ठ, उच्चारण–विधा से संबंधित श्रव्य–दृश्य सामग्री, प्रोजेक्टर, कुछ सादे पन्ने एवं लेखनी आदि।

- ❖ प्रशिक्षक प्रतिभागियों में से किसी एक को बुलाकर उसे पूर्व लिखित उच्चारण संबंधी 15 शब्दों की सूची देंगे। उसे यह निर्देश भी देंगे कि आप इसका उच्चारण करेंगे तथा सदन में उपस्थित सभी लोग उसे सुनकर लिखेंगे।

प्रत्येक शब्द को केवल दो बार उच्चारित करेंगे। अंत में देखेंगे कि लोगों ने कितनी त्रुटियाँ की हैं। उसी समय भाषा के शुद्ध उच्चारण और लेखन की पृष्ठभूमि तैयार करेंगे।

शाकम्, सूपः, पायसः, किञ्चित्, निम्बुकः, दुःखितान्, शृंगाटकः, अस्मान्, तर्हि, तडागः, बाढम्, तिस्रः, कोऽपि, मिष्टान्नम्, पञ्च, सञ्जातः, पक्वान्नम्, अकरोत्, मह्यम्, सर्वेऽपि।

1.1 अनुस्वार (ं)

संस्कृत भाषा में नासिका से उच्चरित होने वाले अनुस्वार (ं) का प्रयोग वर्णों के ऊपर चिह्न (ं) लगाकर करते हैं। प्रायः ऐसे प्रयोगों से भाषा का सौंदर्य बढ़ जाता है; जैसे– कंकतम्, अंकः, रंगः, अंगम्, चंचलः।

1.2 विसर्ग (:)

विसर्ग का प्रयोग प्रायः शब्दों के अंतिम वर्ण के बाद में करते हैं जिसका संकेत (:) है। इसका उच्चारण स्थान कंठ है; जैसे– बालः, लघुः, काकः, भ्रमरः, पथः।

कभी–कभी विसर्ग का प्रयोग शब्दों के मध्य वर्णों में भी किया जाता है यथा– दुःखम्, निःश्वासः।

1.3 हलन्त (्)

संस्कृत भाषा में हलन्त का प्रयोग स्वर रहित व्यंजन वर्णों के रूप को प्रदर्शित करने के लिए होता है। जैसे–बुद्धि, अद्य ,पश्चात्, अर्थात्, उपनिषद्, अवदत् अकरोत्। ध्यातव्य है कि हलन्त से युक्त शब्द के उच्चारण में स्वर युक्त व्यंजन वर्ण का आधा समय ही उस हलन्त युक्त वर्ण के उच्चारण में लगे।

नोट–संस्कृत भाषा में हल् संपूर्ण व्यंजन वर्णों का बोधक है, किन्तु हलन्त कहने पर स्वर रहित व्यंजन वर्ण का बोध होता है। इसका चिह्न व्यंजन वर्ण के नीचे एक तिरछी रेखा (्) है।

इस प्रकार जिस भी व्यंजन वर्ण के नीचे यह हलन्त (्) का संकेत लगा रहता है, वह स्वर रहित व्यंजन वर्ण का बोध कराता है, जिसे हम अद्र्ध व्यंजन वर्ण या हलन्त वर्ण कहते हैं।

नोट–हलन्त शब्द हल् और अन्त (हल्+अन्त) के योग से बना है। हल् शब्द का तात्पर्य सम्पूर्ण व्यंजन वर्णों से है तथा अन्त शब्द का अर्थ अन्तिम शब्दावयव से है। निष्कर्षतः हम यह कह सकते हैं कि हलन्त का चिह्न (्) जिन व्यंजन वर्णों के अंत में लगता है वे सभी आधे व्यंजन वर्ण हो जाते हैं और उन्हें हलन्त वर्ण कहते हैं।

1.4 अनुनासिक (ँ)

अनुनासिक शब्द अनु उपसर्ग और नासिक शब्द के योग से बना है। यहाँ अनु, पश्चात् या बाद अर्थ का द्योतक है, जबकि नासिक पद से नाक से उच्चरित होने वाले वर्ण का बोध होता है। ऐसे वर्ण जो मुख सहित नासिका से उच्चरित होते हैं वे अनुनासिक कहे जाते हैं। इसका प्रतीक चिह्न यह (ँ) है। उदाहरण के लिए वर्गान्त पाँचों वर्ण (ङ्, ञ् ,ण्, न्, म्) का उच्चारण मुख और नासिका दोनों से होता है। इसीलिए ये बिना संकेत के भी अनुनासिक हैं। शेष किसी भी वर्ण के ऊपर यह (ँ) संकेत लगने पर वह अनुनासिक हो जाता है। जैसे– कँ, खँ, गँ, ऊँ आदि।

गतिविधि का नाम : अनुस्वार(ं), विसर्ग (:), अनुनासिक (ँ) एवं हलन्त (्) संबंधी गतिविधि

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : आवश्यकतानुसार

गतिविधि 2

❖ सर्वप्रथम प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को चार समूह में विभक्त करेंगे। प्रत्येक समूह का क्रमशः अनुस्वार, विसर्ग, अनुनासिक एवं हलन्त नामकरण किया जाएगा तथा अनुस्वार, विसर्ग, अनुनासिक एवं हलन्त से सम्बन्धित चार प्रकार के फ्लैश कार्डों का निर्माण किया जाएगा।

शब्द–कार्डों पर अनुस्वार, विसर्ग, अनुनासिक एवं हलन्त लिखा रहेगा एवं उनका प्रतीक चिह्न भी लिखा जाएगा। निर्माण कार्य के समय प्रशिक्षक सभी समूहों के कार्यो का सूक्ष्म निरीक्षण करते रहेंगे। निर्माण कार्य सम्पन्न हो जाने पर सभी समूहों से अभिनयात्मक प्रस्तुतीकरण कराया जाएगा। यह प्रस्तुतीकरण संक्षिप्त एवं सरल शब्दों में परिचयात्मक मात्र होगा। **यथा–**

भवान् कः?
अहम् अनुस्वारः।
अहं विसर्गः। आदि।

1.5 श, ष, स की शुद्धता

श, ष, स के उच्चारण एवं लेखन में लोग प्रायः अशुद्धियाँ करते हैं। इनका शुद्ध उच्चारण एवं लेखन करने के समय इनके समस्थानिक वर्णों की मन में संकल्पना कर लेने से यह त्रुटि सहज ही ठीक की जा सकती है। जैसे– श के उच्चारण या लेखन से पहले उसके समस्थानिक इ, ई, च, छ, ज, झ, ञ, य में से किसी एक वर्ण का मन में ध्यान कर लें पुनः उसी स्थान से श का उच्चारण करें। इसी प्रकार 'ष' के साथ ऋ, ट, ठ, ड, ढ, ण, र का तथा स के साथ लृ, त, थ, द, ध, न, ल की कल्पना कर लें।

गतिविधि 3

सभी प्रशिक्षुओं को चार समूह में बाँट देंगे और उन्हें निर्देश देंगे कि आप लोगों में से प्रत्येक समूह से एक–एक लोग आएँगे और दिए गए अनुच्छेद को पढेंगें तथा उस समूह से ही एक प्रशिक्षु उसे लिखेगा। जिस समूह का उच्चारण और लेखन ज्यादा शुद्ध होगा वह विजेता समूह घोषित होगा।

बोध परीक्षण

1. कोई दो अनुनासिक प्रयोग वाले शब्द बताएँ।
2. कोई ऐसा वर्ण बताइए जो उसी स्थान से उच्चरित होता हो जहाँ से 'श' का उच्चारण होता है?
3. (क) शीलं भूषयते कुलम्।
   (ख) हस्तस्य भूषणं किम् अस्ति?
   (ग) बान्धवः कः भवति।
   (घ) खगकुलं किं करोति?

वाक्यों में आए हुए हलन्त, अनुस्वार तथा विसर्गयुक्त शब्दों को निर्धारित स्तम्भों में लिखिए–

हलन्त युक्त शब्द	अनुस्वार युक्त शब्द	विसर्ग युक्त शब्द

समेकन

उच्चारण, वाचन, और लेखन एक दूसरे से इस प्रकार अन्योन्याश्रित रूप से जुड़े हैं कि यदि व्यक्ति का उच्चारण पक्ष कमजोर हुआ तो वह न शुद्ध लेखन कर पाएगा और न ही प्रवाह के साथ वाचन कर सकेगा। इसलिए इन तीनों ही पक्षों पर पृथक्–पृथक् पर्याप्त अभ्यास करना चाहिए। इसके लिए गतिविधि आधारित, खेल आधारित आदि माध्यमों से अभ्यास किया जा सकता है, यथा– शब्द–अन्त्याक्षरी, श्लोक–अन्त्याक्षरी, विपरीतार्थक शब्द–खेल, सम्भाषण–प्रतियोगिता, तद्‌भव–तत्सम खेल आदि का आश्रय ले सकते हैं। जैसे एक खेल गतिविधि प्रस्तुत है–

इकाई 2
पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़ कर समझना

2.1 पर्यावरण संरक्षण
2.2 नारी शिक्षा
2.3 महामारी (कोविड-19)
2.4 जल संरक्षण
2.5 जनसँख्या नियंत्रण
2.6 अशिक्षा

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़कर समझ विकसित करते हैं एवं उसका दैनिक जीवन में प्रयोग करते हैं।
2. प्रशिक्षु पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य साहित्यिक पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों आदि का अध्ययन करते हैं तथा उसमें निहित उद्देश्यों को समझते हुए व्यक्त करते हैं।
3. प्रशिक्षु साहित्यिक पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, समाचार पत्रों में निहित शैक्षिक, परिवेशीय, सांस्कृतिक मान्यताओं पर आपस में बातचीत करते हैं।
4. प्रशिक्षु सामाजिक, राजनैतिक, धार्मिक, सांस्कृतिक एवं सामाजिक घटनाओं, राजनैतिक परिवर्तनों एवं नये आविष्कारों के विषय को समझते हैं और अपने विचार व्यक्त करते हैं।

भाषा की चारों दक्षताओं (सुनना, बोलना, पढ़ना, लिखना) में पठन एक अत्यन्त महत्वपूर्ण दक्षता है। पठन दक्षता से तात्पर्य मात्र सार्थक ध्वनि चिह्नों को पहचानना ही नहीं, अपितु पहले से सुनी हुई सार्थक ध्वनियों को पढ़कर उनका अर्थ ग्रहण करना भी है। वास्तव में अर्थ ग्रहण की प्रक्रिया पूर्ण हो जाने पर भी पठन कौशल का पूर्ण विकास नहीं माना जा सकता। पठन दक्षता का पूर्ण विकास तब माना जा सकता है जब विद्यार्थी अर्थ ग्रहण करने के साथ–साथ लिखित सामग्री पर अपना विचार प्रस्तुत कर सके और व्यवहार में प्रयोग करने में समर्थ हो सकें। विद्यार्थियों में पठन कौशल विकसित करने से पूर्व पठन के अवयवों के बारे में जानना अत्यन्त महत्वपूर्ण है। ये निम्नलिखित हैं–

- ध्वनि के प्रतीक चिह्नों को देखकर पहचानना।
- वर्णों के प्रयोग से शब्दों का निर्माण करना।
- शब्दों को उचित गति से उच्चरित करना।
- वाक्य को सार्थक इकाईयों में बाटकर पढ़ना।
- संदर्भ के अनुसार भाव–ग्रहण करना।
- पठित सामग्री के साथ पूर्व अर्जित ज्ञान का सम्बन्ध स्थापित करना।
- पठित सामग्री पर अपना मंतव्य स्थिर करना।
- अपने द्वारा स्थिर किए गए मंतव्य के अनुसार व्यवहार करना।

इस प्रकार स्पष्ट है कि पढ़ना कोई यांत्रिक प्रकिया न होकर एक मानसिक प्रकिया है, जिसमे देखने, पहचानने, बोलने, कल्पना करने, तर्क करने से लेकर निर्णय करने एवं लिए गए निर्णय के आधार पर आचरण करने तक के क्रिया–कलाप सम्मिलित होते हैं।

बच्चे प्रारम्भ में पढ़ना सीखते हैं और तत्पश्चात सीखने के लिये पढ़ते हैं। सीखने के लिये पढ़ने की आदत को विकसित करने में स्वतंत्र पठन एक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वहन करता है। स्वतंत्र पठन की आदत बालक के भीतर समझ पैदा करती है। पैदा हुई यह समझ उसे और अधिक पढ़ने के लिये प्रेरित करती है। इस प्रकार उत्तरोत्तर बढ़ती हुई पठन की भूख छात्रों को पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तु को पढ़ने हेतु उत्प्रेरित करती है।

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

1. प्रकरण से सम्बन्धित पुस्तक, चार्ट पेपर, बिग–बुक तथा अन्य शिक्षण सामग्री का क्रम संयोजन कर लेना चाहिए।

2. प्रकरण से सम्बन्धित शिक्षण उद्देश्यों के अनुसार स्पष्ट शिक्षण चक्र का निर्माण कर लेना चाहिए।
3. अतिरिक्त शिक्षण सामग्री का चयन मूल पाठ के पूरक सामग्री के रूप में हो।
4. चयनित अतिरिक्त शिक्षण सामग्री सहज एवं बोधगम्य हो।
5. चयनित शिक्षण सामग्री दैनिक जीवन में उपयोगी एवं नैतिक मूल्यों से संबंधित हो।
6. कक्षा के स्तर के अनुरूप ही रुचिकर शिक्षण सामग्री का चयन होना चाहिए।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. प्रशिक्षक द्वारा दिए गए निर्देशों का पालन करेंगे।
2. सक्रिय रूप से अपने–अपने समूह में कार्य करेंगे।
3. प्रशिक्षण कक्ष में संचालित गतिविधियों में भाग लेंगे।
4. प्रशिक्षक द्वारा दिए गए गृहकार्य, प्रोजेक्ट कार्य में अपेक्षित दिशा निर्देश का पालन करेंगे।
5. परिवेशीय विषयों से सम्बन्धित अतिरिक्त शिक्षण सामग्री का संकलन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

गतिविधि

गतिविधि का नाम : जीवनी का परिचय

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : परिवेशीय विषयों से सम्बन्धित समाचार पत्रों के संपादकीय अंश

उद्देश्य : विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

❖ सभी प्रशिक्षुओं को आवश्यकतानुसार समूह में विभाजित करके विभिन्न परिवेशीय विषयों से सम्बन्धित समाचार पत्रों के संपादकीय अंशों, सामाजिक समस्याओं से सम्बन्धित लेख, दहेज प्रथा, बाल विवाह, विज्ञान की प्रगति आदि विषयों पर तैयार किए गए लेखों को प्रशिक्षुओं के समूहों में वितरित करेंगे।

प्रदत्त सामग्री को पढ़ने हेतु समय का निर्धारण करेंगे। निर्धारित समयावधि के उपरांत सभी समूहों से एक–एक प्रशिक्षु को बुलाकर विषय वस्तु का प्रस्तुतीकरण कराएंगे। इससे प्रशिक्षु विविध विषयों की प्रासंगिकता से अवगत होंगे एवं पाठ्यपुस्तक के अतिरिक्त अन्य पाठ्यवस्तुओं को भी पढ़ने हेतु प्रेरित होंगे।

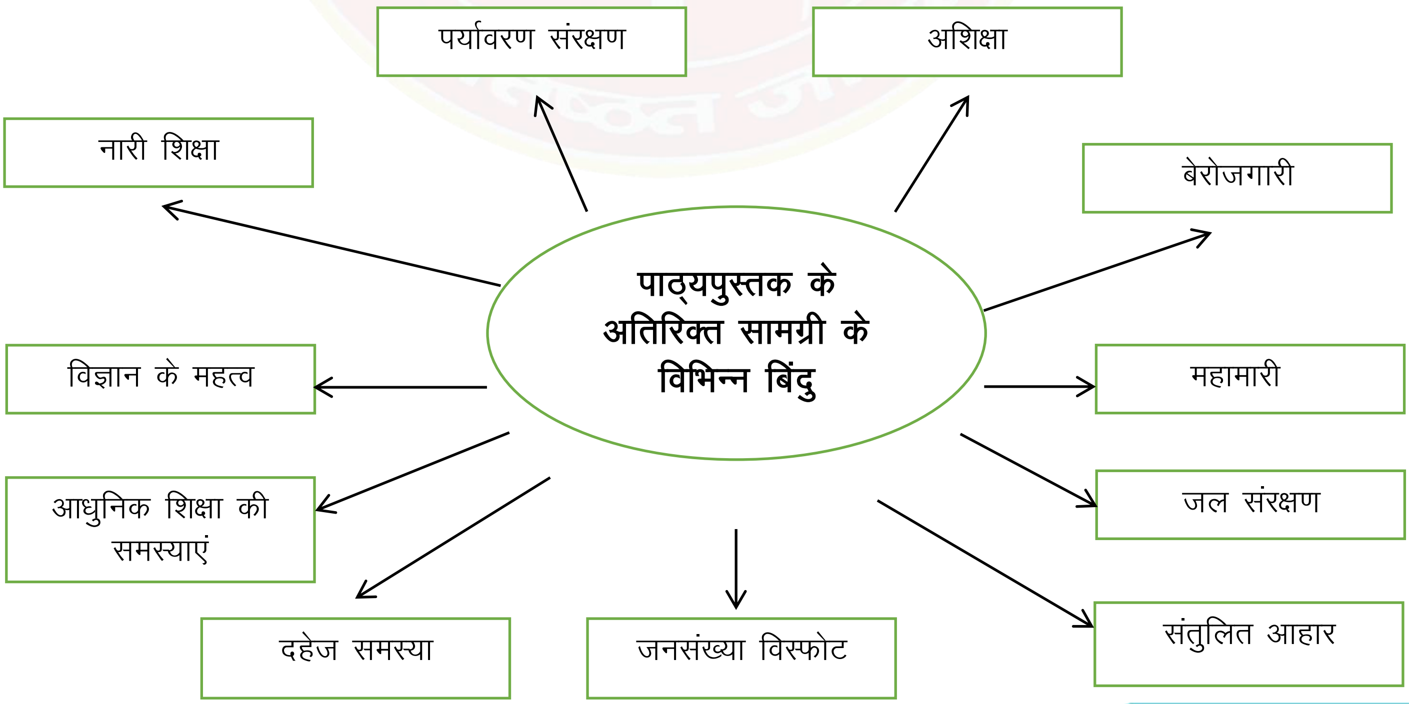

2.1 पर्यावरण संरक्षण

अपने पर्यावरण को बेहतर बनाने के लिए हमें सबसे पहले अपनी मुख्य जरूरत 'जल' को प्रदूषण से बचाना होगा। कारखानों का गन्दा पानी, घरेलू गंदा पानी, नालियों में प्रवाहित मल, सीवर लाइन का गंदा निष्कासित पानी समीपस्थ नदियों और समुद्र में गिरने से रोकना होगा। कारखानों के पानी में हानिकारक रासायनिक तत्व घुले रहते हैं जो नदियों के जल को विषाक्त कर देते हैं। परिणामस्वरूप जलचरों के जीवन को संकट का सामना करना पड़ता है। दूसरी ओर हम देखते हैं कि उसी प्रदूषित पानी को सिंचाई के काम में लेते हैं जिससे उपजाऊ भूमि भी विषैली हो जाती है। उसमें उगने वाली फसल व सब्जियां भी पौष्टिक तत्वों से रहित हो जाती हैं जिनके सेवन से अवशिष्ट जीवननाशी रसायन मानव शरीर में पहुंचकर खून को विषैला कर देते हैं।

2.2 नारी शिक्षा

आज के युग में नारी कितनी सुशील और शिष्ट क्यों न हो, अगर वह शिक्षित नहीं है, तब उसका व्यक्तित्व बड़ा नहीं हो सकता है, क्योंकि आज का युग प्राचीन काल को बहुत पीछे छोड़ चुका है। आज नारी पर्दा और लज्जा की दीवारों से बाहर आ चुकी है, वह पर्दा प्रथा से बहुत दूर निकल चुकी है। इसलिए आज इस शिक्षा युग में अगर नारी शिक्षित नहीं है, तो उसका इस युग से कोई तालमेल नहीं हो सकता है। ऐसा न होने से वह महत्वहीन समझी जाएगी। इसलिए आज नारी को शिक्षित करने की तीव्र आवश्यकता को समझकर इस पर ध्यान दिया जा रहा है।

2.3 महामारी (कोविड–19)

इसे कोरोना वायरस महामारी के नाम से भी जाना जाता है, गंभीर तीव्र श्वसन सिंड्रोम कोरोना वायरस 2 (SARS–CoV–2) के कारण होने वाली कोरोना वायरस बीमारी 2019 (कोविड–19) की एक वैश्विक महामारी है। इस वायरस की पहचान पहली बार दिसंबर 2019 में चीन के शहर वुहान में फैलने पर हुई थी। उस शहर में इसे रोकने का प्रयास विफल रहा, जिससे वायरस 2020 की शुरुआत में एशिया के अन्य क्षेत्रों और फिर दुनिया भर में फैल गया। विश्व स्वास्थ्य संगठन (WHO) द्वारा 30 जनवरी 2020 को इस प्रकोप को अंतरराष्ट्रीय चिंता का सार्वजनिक स्वास्थ्य आपातकाल (PHEIC) घोषित किया गया।

2.4 जल का संरक्षण

पानी की जरुरत हमें जीवन भर है इसलिए इसको बचाने के लिये केवल हम ही जिम्मेदार हैं। संयुक्त राष्ट्र के रिपोर्ट के अनुसार, ऐसा पाया गया है कि राजस्थान के कुछ क्षेत्रों में लड़कियाँ स्कूल नहीं जाती हैं क्योंकि उन्हें पानी लाने के लिए लंबी दूरी तय करनी पड़ती है जो उनके पूरे दिन को खराब कर देती है इसलिए उन्हें किसी और काम के लिए समय नहीं मिलता है।

राष्ट्रीय अपराध रिकार्ड्स ब्यूरो के सर्वेक्षण के अनुसार, ये रिकार्ड किया गया है कि लगभग 16,632 किसान (2,369 महिलाएँ) आत्महत्या के द्वारा अपने जीवन को समाप्त कर चुकें हैं, हालांकि, 14.4 प्रतिशत मामले सूखे के कारण घटित हुए हैं। इसलिये हम कह सकते हैं कि भारत और दूसरे विकासशील देशों में अशिक्षा, आत्महत्या, लड़ाई और दूसरे सामाजिक समस्याओं के मूल में एक कारण पानी की कमी भी है। पानी की कमी वाले ऐसे क्षेत्रों में, नई पीढ़ी के बच्चे अपने मूल शिक्षा के अधिकार और खुशी से जीने के अधिकार को प्राप्त नहीं कर पाते हैं।

2.5 जनसंख्या नियंत्रण

चीन के बाद भारत दुनिया का दूसरा सबसे अधिक आबादी वाला देश है। हमारा देश जिन समस्याओं का सामना कर रहा है उनमे से जनसंख्या वृद्धि सबसे गंभीर समस्या है। क्योंकि हमारे देश की अकेले की आबादी 1.20 अरब है जबकि पूरे विश्व की 7 अरब है।

दिलचस्प बात तो यह है कि संयुक्त राज्य अमेरिका, जो दुनिया के सबसे अधिक आबादी वाले देशों की सूची में तीसरे स्थान पर है, वहां 311.1 मिलियन लोग रहते हैं, जिनमें भारत की आबादी का केवल 1/4 वां हिस्सा ही समाहित है। यह अंतर तब और अधिक आश्चर्यचकित हो गया जब यह माना जाने लगा कि संयुक्त राज्य अमेरिका क्षेत्रफल में भारत की तुलना में तीन गुना बड़ा है।

कुछ भारतीय राज्य जनसंख्या के मामले में, कई देशों की जनसंख्या से अधिक हैं। उत्तर प्रदेश 166 मिलियन की आबादी के साथ रशियन फेडरेशन 146.9 मिलियन से पीछे छोड़ आगे बढ़ गया है। इसी प्रकार, उड़ीसा की आबादी कनाडा से और छत्तीसगढ़ की ऑस्ट्रेलिया से अधिक है।

2.6 अशिक्षा

अशिक्षा का कारण गरीबी ही नहीं है बल्कि हमारे समाज में अन्य ऐसे और भी कारण मौजूद है जो शिक्षा की राह में बाधक है। आज विश्व में आधुनिकता का फैलाव इतनी तीव्र गति से हो रहा है कि अगर हम इसके साथ नहीं चल पाए तो विकास से कोसों दूर हो जायेंगे। भारत मे अशिक्षा गरीबी के कारण तो है ही मगर मानसिक रूप से भी हम शिक्षा के प्रति सचेत नहीं हैं। आप स्वयं महसूस करें कि जिस घर मे कोई शिक्षित ही नहीं है वह अपने बच्चों को शिक्षा के लिए कैसे उत्साहित करेगा। स्वतः ही उस घर के बच्चों की मानसिकता भी शिक्षा के प्रति उदासीन ही रहेगी। हम सरकारों को दोषी ठहराकर या गरीबी को आगे रखकर अपने स्वयं के दोषो को छुपा लेने मे कामयाब हो जाते है। आज आधुनिकता के दौर मे इतना बडा अशिक्षित वर्ग भारत के विकास का अवरोधक बना हुआ है। आप सभी से भी गुजारिश है कि शिक्षा के क्षेत्र में अपने आस–पास के बच्चों को उत्साहित करे व उनके परिवारजन और उनका शिक्षा से परिचय कराएँ तभी हम भारत से अशिक्षा का अंत कर सकेगे। साथ ही हमारी सरकार भी शिक्षा के क्षेत्र में कुछ बड़े बदलाव करे जिससे कि शिक्षा पाने मे कठिनाईयाँ न आएँ और हर वर्ग के बच्चे शिक्षा से अपने जीवन को सँवार सकें।

नोट– इस तरह के और भी विषयों को शामिल करते हुए गतिविधि करा सकते हैं।

प्रस्तुतीकरण

भाषा शिक्षण में पठन का विशेष महत्व है। समझ के साथ पढ़ना और पढ़कर अपने विचार व्यक्त करना ही वास्तविक पठन कहलाता है। पाठ्य पुस्तक के अतिरिक्त पठन सामग्री स्वतंत्र पठन को बढ़ावा देती है जिससे अधिगमकर्ता, विचारों को अभिव्यक्त करने के लिए अपने आप को तैयार कर पाता है और उसके मानसिक एवं चिंतन क्षमता में वृद्धि होती है।

कक्षा शिक्षण के पाठ्यक्रम का निर्माण एक निर्धारित लक्ष्य और उद्देश्य को ध्यान में रखकर किया जाता है, जबकि पाठ्येत्तर शिक्षण सामग्री अधिगमकर्ता को विविध विषयों से अवगत कराती है।

इस प्रकार की सामग्री द्वारा बालक सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक एवं परिवेशीय घटनाओं से परिचित हो पाता है तथा इसके प्रति जिज्ञासु होता है। बालक के अंदर अपने परिवेश एवं वातावरण में घटित होने वाली घटनाओं के प्रति समझ विकसित होती है।

अतः किसी बालक के अंदर चिंतनशीलता, सामाजिक सरोकार इत्यादि को विस्तार देने के लिए पाठ्य पुस्तक के साथ–साथ अन्य पाठ्यवस्तु से संबंधित विषय आधारित गतिविधियों, क्रियाकलापों को कराना चाहिए, जिससे बालक की समझ विकसित हो सके, चिंतन कर सके तथा उसका दैनिक जीवन में प्रयोग कर सके।

गतिविधि

विषय वस्तु के प्रस्तुतीकरण के उपरांत प्रकरण से सम्बन्धित प्रशिक्षुओं के लिए प्रश्न सत्र का आयोजन किया जाएगा एवं उनकी समस्याओं/शंकाओं का समाधान किया जाएगा। तदोपरांत कुछ पर्चियों पर खुले छोर के प्रश्न लिखकर प्रशिक्षुओं के द्वारा आशु भाषण कराया जाएगा।

खुले छोर के प्रश्न शिक्षा, स्वास्थ्य, रोजगार, कृषि, पर्यावरण, आर्थिक क्रिया–कलाप इत्यादि विषयों से संबंधित होंगे।

बोध परीक्षण

1. पाठ्येतर सामग्री किसे कहते हैं?
2. पाठ्येतर सामग्री के विषय क्या–क्या हो सकते हैं?
3. पाठ्येतर सामग्री पठन के क्या–क्या लाभ हैं?
4. पाठ्येतर सामग्री पर चर्चा क्यों आवश्यक है?
5. पाठ्येतर सामग्री का व्यावहारिक जीवन में क्या महत्व है?
6. पाठ्येतर सामग्री का उद्देश्य क्या है?

टिप्पणी– पाठ्येतर सामग्री का तात्पर्य पाठ्य पुस्तक से अतिरिक्त पठन सामग्री से है।

समेकन

शिक्षा का स्वरूप अत्यंत व्यापक है। सीखना अनवरत चलने वाली प्रक्रिया है। विद्यालयी शिक्षा का पाठ्यक्रम और समय निर्धारित एवं औपचारिक होता है। परीक्षा पास करना ही इसका मुख्य उद्देश्य होता है, जबकि बालक विद्यालयी शिक्षा के समय विभिन्न सामाजिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, ऐतिहासिक गतिविधियों से घिरा रहता है। ऐसे में आवश्यक हो जाता है कि बालक को विद्यालयी शिक्षा के दौरान पाठ्येत्तर विषयों को पढ़ने के लिए उचित वातावरण एवं अवसरों को प्रदान किया जाय। जिससे बालक परिवेशीय परिस्थितियों से अवगत होते हुए अपनी चिंतन एवं बौद्धिक क्षमता का विकास कर सके।

स्व आकलन

1. **सुमेलित कीजिए–**

अ	ब
पर्यावरण	सैनिक
सामाजिक संबंध	हरित क्रांति
संस्कृति	जल संरक्षण
कृषि	सामाजिक सुरक्षा
सीमा सुरक्षा	बिहू

2. **सही वाक्य के सामने (✓) एवं गलत वाक्य के सामने (×) का चिह्न लगाएँ–**

(क) बाल श्रम अपराध है। ( )

(ख) जनसंख्या वृद्धि देश की समस्या नहीं है। ( )

(ग) अशिक्षा देश के विकास में अवरोधक है। ( )

(घ) संविधान नागरिक अधिकारों की सुरक्षा करता है। ( )

(च) पाठ्येतर सामग्री बच्चों के चिंतन को अवरुद्ध करती है। ( )

3. मिलान कीजिए–

अ	ब
विशाखा गाइडलाइन	त्वरित पुलिस सहायता
डायल 108	बाल श्रम
डायल 1098	स्त्री सुरक्षा
डायल 112	स्त्री सशक्तिकरण
डायल 1091	महिला हेल्पलाइन
डायल 1090	आकस्मिक चिकित्सा सेवा

वस्तुनिष्ठ प्रश्न

1. त्रैमासिक पत्रिका कितने महीने पर निकलती है?
   (क) एक माह (ख) तीन माह
   (ग) छह माह (घ) बारह माह
2. दैनिक पत्र कितने दिन पर निकलता है–
   (क) एक सप्ताह पर (ख) तीन दिन पर
   (ग) प्रतिदिन (घ) चार दिन पर
3. कोहरा का संबंध है ?
   (क) गर्मी से (ख) जाड़े से
   (ग) वर्षा ऋतु से (घ) इनमे से कोई नहीं
4. देश के विकास में अवरोध तत्व है–
   (क) शिक्षा (ख) सुरक्षा
   (ग) अर्थव्यवस्था (घ) जनसंख्या वृद्धि
5. समाज की प्रमुख समस्या कौन सी नहीं है?
   (क) दहेज प्रथा (ख) बालविवाह
   (ग) अस्पृश्यता (घ) शिक्षा
6. पाठ्येत्तर सामग्री से बालक के अंदर विकास होता है?
   (क) अशिक्षा का (ख) मूढ़ता का
   (ग) आडम्बर का (घ) चिंतन स्तर का

विचार विश्लेषण

1. पाठ्येतर सामग्री से आप क्या समझते हैं?
2. पाठ्येतर सामग्री के अंतर्गत किन–किन विषयों को शामिल किया जा सकता है?
3. वर्तमान भारतीय समाज की प्रमुख समस्याएं कौन सी हैं?
4. स्वतंत्र पठन का आशय स्पष्ट कीजिए?
5. स्वतंत्र पठन से क्या–क्या लाभ होते हैं?
6. अपठित गद्यांश से आप क्या समझते हैं? यह बच्चों के बौद्धिक विकास में किस प्रकार सहायक है।
7. प्रारंभिक स्तर पर पाठ्येतर सामग्री की उपयोगिता पर प्रकाश डालिए?

प्रोजेक्ट कार्य

प्रशिक्षु लोककथाओं एवं कहानियों का संकलन तैयार करेंगे।

इकाई 3
दिए गये अनुच्छेदों के शीर्षक लिखना

3.1 शीर्षक का चुनाव
3.2 अच्छे अनुच्छेद की विशेषताएँ

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, समझ के साथ दिए गये अनुच्छेदों का पठन कर लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, अनुच्छेदों को पढकर ,दिए गये प्रश्नों को हल कर लेते है।
3. प्रशिक्षु, दिए गये अनुच्छेदों में शब्दों के चयन से लेखक की मनोदशा और लेखन के अभिप्राय को समझ लेते हैं ।
4. प्रशिक्षु, दिए गये अनुच्छेदों का शीर्षक लिख लेते है।
5. प्रशिक्षु, दिए गये शीर्षक से अनुच्छेद का निर्माण कर लेते है।

भाषा पठन, भाषा सीखने की बुनियाद होती है। भाषा पठन के कई चरण होते हैं । वर्ण–पठन जहाँ भाषा–पठन का प्रारंभिक चरण है, तो अनुच्छेद भाषा पठन का अंतिम चरण । बालक प्रारंभिक स्तर पर वर्ण पठन सीखता है, उसके पश्चात् वर्णों के सार्थक सहयोग से शब्द पठन सीखना प्रारंभ करता है। शब्द पठन के पश्चात् शब्दों के सार्थक व्याकरणिक संयोजन से वाक्य पठन प्रारंभ करता है, जब सम्यक् वाक्य पठन कर लेता है, तब वह अनुच्छेद पठन प्रारंभ करता है। अनुच्छेद पठन से बालक में समझ की क्षमता का विकास होता है। अनुच्छेद पठन के माध्यम से विषय वस्तु, शब्दों के चयन और भावों को समझता है। अनुच्छेद में वर्णित विषयवस्तु एवं भाव की स्पष्ट समझ शीर्षक लेखन की आधारशिला है। किसी अनुच्छेद के केंद्रीय वर्ण्य विषयवस्तु को रेखांकित कर उपयुक्त शब्द अथवा शब्दयुग्मों के द्वारा शीर्षक लेखन किया जा सकता है।

प्रस्तुतीकरण

शीर्षक किसी भी समाचार, निबंध, अनुच्छेद, उपन्यास या किसी भी साहित्यिक विधा में सबसे ऊपर लिखा हुआ एक शब्द, शब्दयुग्म या छोटा वाक्य होता है, जिससे नीचे लिखी हुई सामग्री के विषय में संकेत मिलता है। शीर्षक से तात्पर्य प्रायः शीर्ष या शीश से समझ सकते हैं।

मुख्य शीर्षक से लेख की विषय वस्तु के बारे में स्पष्ट रूप से पता चल जाता है। दूसरे शब्दों में कहा जाए तो वह लेख के अंदर के उप शीर्षकों का सार होना चाहिए। उदाहरण के तौर पर यदि किसी ने भारत–अमेरिका के व्यापारिक संबंधों पर एक लेख लिखा है, तो इसमें हम लेख के स्वभाव के अनुसार शीर्षक लगाएँगे।

एक अच्छा शीर्षक शोध–सामग्री की भविष्यवाणी करता है।

3.1 शीर्षक का चुनाव

जब लेखक किसी विषय पर लेख लिखते हैं, तो उनकी इच्छा होती है कि उनके लेख को अधिक से अधिक लोग पढ़े और उसकी सराहना करें। इसके लिए जरूरी है कि हम कुछ बातों को ध्यान में रखते हुए अपने लेख को लिखें। साथ ही उसमें एक सटीक और सारगर्भित शीर्षक का प्रयोग करें। शीर्षक ही खबर या लेख का आईना होता है। शीर्षक से ही पाठक के मन में लेख या अनुच्छेद या खबर को लेकर रुचि पैदा होती है। किसी भी लेख अनुच्छेद के शीर्षक का चुनाव करते समय हमें निम्न बातों का ध्यान रखना चाहिए–

- शीर्षक ज्यादा बड़ा नहीं होना चाहिए। अधिक लंबे वाक्य समझने में कठिनाई होती है तथा पढ़ने में भी उबाऊ लगते हैं।
- व्याकरण संबंधी अशुद्धियों का विशेष ध्यान रखना चाहिए। भाषा कोई भी हो, यदि अशुद्ध है, तो कोई भी पढ़ना पसंद नहीं करता है।
- शीर्षक में अनुच्छेद संबंधी पूरी जानकारी होनी चाहिए साथ ही रोचकता भी होनी चाहिए।
- शीर्षक आकर्षक होना चाहिए किंतु भ्रामक नहीं । कई बार हम देखते हैं कि शीर्षक व अनुच्छेद लेख में कोई संबंध नहीं होता, जो अनुचित है।
- शीर्षक अत्यंत संक्षिप्त और सरल होना चाहिए। उसके शब्द मूल गद्यांश से भी ज्यों–के–त्यों लिए जा सकते हैं।
- यदि मूल गद्यांश का शीर्षक देने के लिए कहा जाये, तो उसके केन्द्रीय भाव की खोज करनी चाहिए। दिये गये गद्यांश के आरम्भ या अन्त में शीर्षक छिपा होता है।

3.2 अच्छे अनुच्छेद की विशेषताएँ

- अनुच्छेद किसी एक भाव या विचार या तथ्य को एक बार, एक ही स्थान पर व्यक्त करता है। इसमें अन्य विचार नहीं रहते ।
- अनुच्छेद के वाक्य–समूह में उद्देश्य की एकता रहती है। अप्रासंगिक बातों को हटा दिया जाता है।
- अनुच्छेद के सभी वाक्य एक–दूसरे से गठित और सम्बद्ध होते हैं।
- अनुच्छेद एक स्वतन्त्र और पूर्ण रचना होती है, जिसका कोई भी वाक्य अनावश्यक नहीं होता है।
- उच्चकोटि के अनुच्छेद लेखन में विचारों को इस क्रम में रखा जाता है कि उनका आरम्भ, मध्य और अन्त आसानी से व्यक्त हो जाय।
- अनुच्छेद सामान्यतः छोटा होता है, किन्तु इसकी लघुता या विस्तार विषय वस्तु पर निर्भर करता है।
- अनुच्छेद की भाषा सरल और स्पष्ट होनी चाहिए।

अनुच्छेद–1

"साहित्योन्नति के साधनों में पुस्तकालयों का स्थान अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इनके द्वारा साहित्य के जीवन की रक्षा, पुष्टि और अभिवृद्धि होती है। पुस्तकालय सभ्यता के इतिहास का जीता जागता गवाह है। इसी के बल पर वर्तमान भारत को अपने अतीत गौरव पर गर्व है। पुस्तकालय भारत के लिए कोई नयी वस्तु नहीं है। लिपि के आविष्कार से आज तक लोग निरन्तर पुस्तकों का संग्रह करते रहे हैं। पहले देवालय, विद्यालय और नृपालय इन संग्रहों के प्रमुख स्थान होते थे। इनके अतिरिक्त, निजी पुस्तकालय भी होते थे।मुद्रणकला के आविष्कार से पूर्व पुस्तकों का संग्रह करना आजकल की तरह सरल बात न थी। आजकल साधारण स्थिति के पुस्तकालय में जितनी सम्पत्ति लगती है, उतनी उन दिनों कभी–कभी एक–एक पुस्तक की तैयारी में लग जाया करती थी। भारत के पुस्तकालय संसार भर में अपना सानी नहीं रखते थे। प्राचीनकाल से मुगलसम्राटों के समय तक यही स्थिति रही। चीन, फारस प्रभृति सुदूर स्थित देशों से झुण्ड के झुण्ड विद्यानुरागी लम्बी यात्राएँ करके भारत आया करते थे।''

गद्यांश आधारित प्रश्न

1. उपर्युक्त के गद्यांश का उचित शीर्षक क्या हो सकता है?
2. पुस्तकालयों के कारण भारत को क्या गौरव प्राप्त था?
3. पुराने समय में पुसतकालयों पर अधिक व्यय क्यों होता था ?

4. साहित्य की उन्नति का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण साधन क्या है?
5. पुस्तकालय का प्रारम्भ कब से हुआ? पहले पुस्तकालय किन–किन स्थानों पर हुआ करते थे?

उत्तर

1. शीर्षक– 'पुस्तकालय और भारत'।
2. भारतीय पुस्तकालय की प्रसिद्धि के कारण चीन, फारस प्रभृति सुदूर स्थित देशों से अनेकानेक विद्यानुरागी लम्बी यात्राएँ करके भारत आया करते थे।
3. प्राचीनकाल में मुद्रण की व्यवस्था न होने के कारण पुस्तकालयों पर अधिक व्यय होता था।
4. साहित्य की उन्नति का सबसे अधिक महत्त्वपूर्ण साधन पुस्तकालय है।
5. पुस्तकालय का प्रारम्भ लिपि के आविष्कार के साथ हुआ। पहले देवालय, विद्यालय और नृपालय पुस्तकालय के प्रमुख स्थान होते थे।

अनुच्छेद–2

हमारी हिन्दी सजीव भाषा है। इसी कारण, इसने अरबी, फारसी आदि के सम्पर्क में आकर इनके तो शब्द ग्रहण किये ही हैं, अब अंग्रेजी के भी शब्द ग्रहण करती जा रही है। इसे दोष नहीं, गुण ही समझना चाहिए, क्योंकि अपनी इस ग्रहण शक्ति से हिन्दी अपनी वृद्धि कर रही है, ह्रास नहीं। ज्यों–ज्यों इसका प्रचार बढ़ेगा, त्यों–त्यों इसमें नए शब्दों का आगमन होता जाएगा। क्या भाषा की विशुद्धता के किसी भी पक्षपाती में यह शक्ति है कि वह विभिन्न जातियों के पारस्परिक सम्बन्ध को न होने दे अथवा भाषाओं की सम्मिश्रण क्रिया में रुकावट पैदाकर दे ? यह कभी सम्भव नहीं। हमें तो केवल इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि इस सम्मिश्रण के कारण हमारी भाषा अपने स्वरूप को तो नहीं नष्ट कर रही–कहीं अन्य भाषाओं के बेमेल शब्दों के मिश्रण से अपना रूप तो विकृत नहीं कर रही। अभिप्राय यह कि दूसरी भाषाओं के शब्द, मुहावरे आदि ग्रहण करने पर भी हिन्दी हिन्दी ही बनी रही है या नहीं, बिगड़ कर कहीं वह कुछ और तो नहीं होती जा रही?''

गद्यांश आधारित प्रश्न

1. इस अवतरण का उचित शीर्षक क्या हो सकता है?
2. हिन्दी में नये शब्दों को अपनाते समय किस बात को ध्यान में रखना चाहिए?
3. सजीव भाषा से क्या तात्पर्य है? स्पष्ट कीजिए।
4. हिन्दी में नये शब्दों का आगमन क्यों उचित है?
5. भाषा की विशुद्धता क्या है? क्या भाषा की विशुद्धता सम्भव है?
6. हिन्दी भाषा की वह कौन–सी विशेषता है जिसे लेखक ने गुण माना है, दोष नहीं।

बोध–परीक्षण

1. शीर्षक से आप क्या समझते हैं?
2. एक अच्छे शीर्षक की विशेषता बताइए।
3. शीर्षक एवं अनुच्छेद के सहसंबंध को स्पष्ट कीजिए
4. अनुच्छेद का आशय स्पष्ट कीजिए।
5. अनुच्छेद की विशेषताएँ बताइए।

समेकन

इस प्रकार स्पष्ट है कि, अनुच्छेद–पठन के माध्यम से बालकों में किसी अनुच्छेद को पढ़कर जहॉ सोचने ,समझने, विचार करने की क्षमता का विकास होगा, वहीं उनमें सृजनात्मक क्षमता का भी विकास होगा, जिससे वे किसी भी विषय वस्तु को पढ़कर उसके मूलभाव को समझ सकेगें तथा अपने शब्दों में व्यक्त करने में सक्षम हो सकेंगे।

स्व आकलन

1. निम्नलिखित में से किसी एक विषय पर अनुच्छेद लिखिए–

   पुस्तक, वर्षा, गाँव, किसान, विद्यालय

2. दिए गए अनुच्छेद को पढ़कर उचित शीर्षक का नाम दीजिए–

   बस को देखा तो श्रद्धा उमड़ पड़ी। खूब वयोवृद्ध थी। सदियों के अनुभव के निशान लिए हुए थी। लोग इसलिए इससे सफर नहीं करना चाहते कि वृद्धावस्था में इसे कष्ट होगा। यह बस पूजा के योग्य थी। उस पर सवार कैसे हुआ जा सकता है?

3. नीचे दिए गए पद्यांश को पढ़कर उपयुक्त शीर्षक का नाम लिखिए–

'कोई निरपराध को मारे, तो क्या अन्य उसे न उबारे?
रक्षक पर भक्षक को वारे, न्याय दया का दानी।'
'न्याय दया का दानी। तूने गुनी कहानी।'

इकाई 4

उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्यपुस्तकों में सम्मिलित निबन्ध, कहानी, एकांकी, यात्रा वृत्तान्त, जीवनी, आत्मकथा, पत्र लेखन, नाटक के लेखकों का सामान्य परिचय उनका अध्ययन व अध्यापन कार्य

4.1 कविता (काव्य)
4.2 कविता (काव्य) के भेद
4.3 प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ
4.4 निबन्ध (निबन्ध की विशेषताएँ, निबन्ध के प्रकार)
4.5 प्रमुख निबंधकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ
4.6 कहानी (कहानी के तत्त्व, कहानी के प्रकार, कहानी के शैलीगत भेद)
4.7 प्रमुख कहानीकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी रचनाएँ
4.8 एकांकी (एकांकी शिक्षण की विधियाँ, एकांकी के तत्त्व)
4.9 हिन्दी एकांकी का विकास
4.10 हिन्दी की प्रमुख एकांकी
4.11 प्रमुख एकांकी रचनाकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ
4.12 यात्रा वृत्तान्त (यात्रा वृत्तान्त की विशेषताएँ)
4.13 प्रमुख यात्रा वृत्तान्त एवं उनके लेखक
4.14 जीवनी
4.15 हिन्दी के प्रमुख जीवनी लेखक
4.16 पत्र लेखन
4.17 हिन्दी के प्रमुख पत्र साहित्य और उनके लेखक
4.18 प्रमुख पत्र लेखन के रचनाकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ
4.19 नाटक
4.20 नाटक के तत्त्व
4.21 हिन्दी नाटकों का विकास
4.22 हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार

4.1 कविता

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु कविता की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु कविता की परिभाषा एवं स्वरूप जानते हैं।
3. प्रशिक्षु कविता कला के तत्त्वों से अवगत हैं।
4. प्रशिक्षु कविता के विभिन्न रूपों से अवगत हैं।
5. प्रशिक्षु कविता शिक्षण को सरल एवं रुचिकर बना लेते हैं।
6. प्रशिक्षु बच्चों में कविता के प्रति समझ एवं रुचि विकसित कर लेते हैं।

सुप्रसिद्ध कवि गोपालदास 'नीरज' के शब्दों में–

**"आत्मा के सौन्दर्य का, शब्द रूप है काव्य
मानव होना भाग्य है, कवि होना सौभाग्य"**

उपर्युक्त पंक्तियों से ध्वनित होता है कि 'कवित्व' व्यक्ति को ईश्वर का सुंदरतम् उपहार है। यह आत्मिक सौंदर्य की शाब्दिक अभिव्यक्ति है कविता व्यष्टि को समष्टि से जोड़ने का साधन है। कविता मानव मन के अंतरतम् सूक्ष्म भावनाओं की रागात्मक अभिव्यक्ति है। इसीलिए कहा भी गया है कि–

**"जहाँ न पहुँचे रवि।
वहाँ पहुँचे कवि ।।"**

अब आइए, यह जानने का प्रयास करते हैं कि कविता क्या है?

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के समक्ष कविता लिखा हुआ चार्ट प्रस्तुत करेंगे तथा उसका सस्वर वाचन करते हुए अनुकरण वाचन करवाएँगे।

गतिविधि का नाम : आओ कविता पाठ करें

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कविता लिखा हुआ चार्ट

उद्देश्य : विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

वृक्ष हों भले खड़े,
हों घने हों बड़े
एक पत्र छाँह भी,
माँग मत, माँग मत, माँग मत,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।
तू न थकेगा कभी,
तू न रुकेगा कभी,
तू न मुड़ेगा कभी

कर शपथ, कर शपथ, कर शपथ
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।
यह महान दृश्य है,
चल रहा मनुष्य है,
अश्रु, स्वेद, रक्त से,
लथपथ, लथपथ, लथपथ,
अग्निपथ अग्निपथ अग्निपथ।

अब प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से निम्नलिखित प्रश्न पूँछेंगे तथा प्रदत्त उत्तरों को श्यामपट्ट पर लिखते हुए विषय प्रवेश करेंगे–

1. उपर्युक्त रचना किस विधा की रचना है?
2. किन विशेषताओं से पता चलता है कि यह कविता है?
3. कविता और गद्य के मध्य क्या अंतर है?

4.1 कविता (काव्य)

परिभाषा

संस्कृत विद्वानों के अनुसार

1. **"शब्दार्थौ सहितौ काव्यम्**"– आचार्य भामह

(अर्थात् शब्द–अर्थयुक्त रचना काव्य है) वस्तुतः इस परिभाषा में अतिव्याप्ति दोष है। शब्द और अर्थ तो इतिहास, भूगोल एवं गद्य सब में होता है।

2. **"तददोषौ शब्दार्थौ सगुणावनलंकृती पुनः क्वापि"**– मम्मट।

(दोषमुक्त, शब्दार्थ सहित, गुण युक्त एवं यदा–कदा अलंकार विहीन रचना भी काव्य होता है।)

इस परिभाषा की सीमा यह है कि इसमें काव्य के केवल वाह्य लक्षणों की तरफ इंगित किया गया है। भाव अथवा रस की उपेक्षा की गयी है।

3. **"अदोषौ सगुणौ सालंकारौ च शब्दार्थौ काव्यम्"**– हेमचंद्र

दोषरहित, गुणसहित, अलंकार युक्त, शब्दार्थमयी रचना को काव्य कहते हैं। यह परिभाषा भी आचार्य मम्मट की परिभाषा की तरह ही अव्याप्ति है। मम्मट की परिभाषा में अलंकारविहीन रचना भी जहाँ काव्य हो सकती है। वहीं हेमचन्द्र की परिभाषा में अलंकार अनिवार्य है। शेष समान है।

4. **"वाक्यं रसात्मकं काव्यम्"**– आचार्य विश्वनाथ

(रसात्मक वाक्य ही काव्य है)

यह परिभाषा उपर्युक्त परिभाषाओं के विपरीत केवल भाव अथवा रस पक्ष पर बल देती है जबकि अन्य वाह्य अथवा शिल्पगत पक्षों की उपेक्षा करती है। अतः यह भी पूर्वोक्त परिभाषाओं की भाँति एकांगी ही है।

5. **"रमणीयार्थ प्रतिपादकः शब्दः काव्यम्।"**

(रमणीय अर्थ का प्रतिपादन करने वाला शब्द ही काव्य है।)

उपर्युक्त परिभाषा में केवल अर्थ की रमणीयता की बात की गयी है, शब्द के रमणीयता की नहीं। फिर भी यह परिभाषा पूर्वोक्त परिभाषाओं की तुलना में काव्य को बेहतर ढंग से परिभाषित करती है। यदि इस परिभाषा कुछेक कमियों को दूर कर लिया जाये तो परिभाषा निम्नवत् हो सकती है–

"शब्द, अर्थ अथवा दोनों की रमणीयता से युक्त रसात्मक वाक्य समूह को काव्य या कविता कहते हैं।"

पाश्चात्य विद्वानों के अनुसार

1. **"कविता सुस्पष्ट संगीत है।"**– ड्राइडन
   (Poetry is articulate music- Dryden)
2. **"सर्वोत्तम शब्द अपने सर्वोत्तम क्रम में कविता होता है।"**– कॉलरिज
   (Poetry is the best words in their best order - Coleridge)
3. **"कविता प्रबलतम् अनुभूतियों का सहज उच्छलन है।"**– वर्ड्सवर्थ
   (Poetry is the spentaneous overflow of powerful feelings –Wordsworth)
4. **"कविता सच्चे अर्थों में जीवन की आलोचना है।"**– मैथ्यू अर्नोल्ड
   (Poetry is at bottom criticism of life)

उपर्युक्त परिभाषाओं में वर्ड्सवर्थ की परिभाषा सर्वोत्तम है क्योंकि जब भी हृदयचषक(प्याला) अनुभूतियों से लबालब भर जाता है तो अनुभूति शब्दों के रूप में बाहर छलक पड़ती है जिसे कविता कहते हैं।

हिन्दी के विद्वानों के अनुसार

1. **"अन्तःकरण की वृत्तियों के चित्र का नाम कविता है।"**– महावीर प्रसाद द्विवेदी
2. **"जिस प्रकार आत्मा की मुक्तावास्था ज्ञानदशा कहलाती है, उसी प्रकार हृदय की मुक्तावस्था रसदशा कहलाती है। हृदय की इसी मुक्ति की साधना के लिए मनुष्य की वाणी जो शब्द विधान करती आयी है, उसे कविता कहते हैं।"**– आचार्य रामचंद्र शुक्ल
3. **"वियोगी होगा पहला कवि**
   आह से उपजा होगा गान,
   उमड़कर आँखों से चुपचाप
   बही होगी कविता अनजान।।"– सुमित्रानंदन पंत

अंग्रेजी विद्वान वर्डसवर्थ एवं हिन्दी के उपर्युक्त समस्त विद्वानों ने कविता का संबंध अनुभूतियों से माना है। अधिकांश विद्वानों का मानना है कि कविता वह शब्दार्थी विशिष्ट रचना है जो मानव की हृदयानुभूतियों को मर्मस्पर्शी एवं प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करती है।

4.2 काव्य के भेद

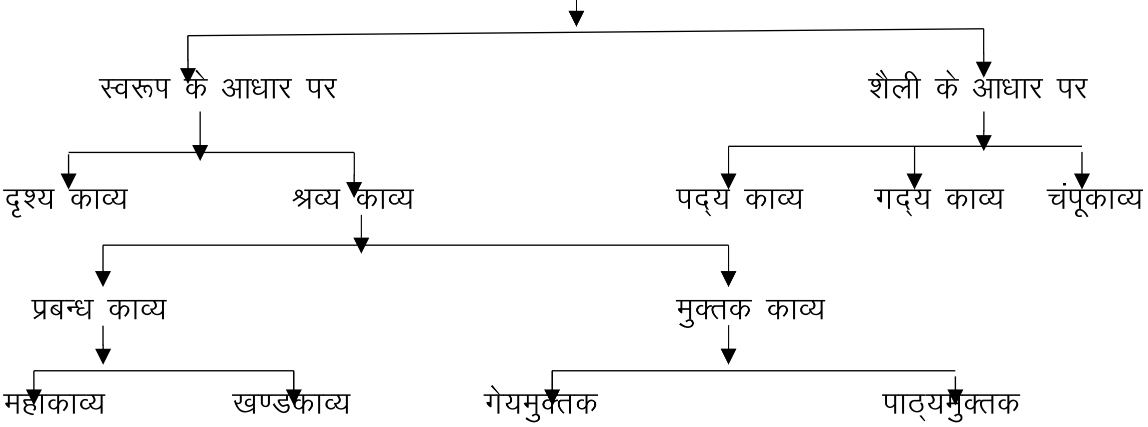

कविता (काव्य) के भेद

काव्य के भेद सामान्यतः दो स्तरों पर किए गए हैं–

1. स्वरूप के आधारपर
2. शैली के आधारपर

स्वरूप के आधार पर

इसमें काव्य की दृश्यता एवं श्रव्यता के आधार पर काव्य को निम्न दो रूप में बाँटा गया है–

(अ) दृश्य काव्य– इस प्रकार के काव्य को सुनने के अलावा देखा भी जा सकता है। ये श्रव्य (Audio)के साथ–साथ दृश्य (Visual) भी होते हैं। इनके दो भेद होते हैं– रूपक एवं उपरूपक।

आचार्य भरतमुनि ने सर्वप्रथम अपने नाट्यशास्त्र में 'दृश्यकाव्य' पर चिंतन किया। उन्होंने 'नाटक' को 'सर्ववार्णिकम' पंचमवेद एवं 'क्रीडनायकम्' कहा। चूँकि वेदाध्ययन सभी के लिये अनुमन्य नहीं था। अतः उन्होंने 'नाटक' को वह पंचम वेद कहा जिसका आस्वादन सभी के लिये अनुमन्य था।

(ब) श्रव्य काव्य – श्रव्य काव्य वे हैं जो केवल पढ़ने व सुनने योग्य होते हैं देखने योग्य नहीं । श्रव्य काव्य के भी दो भेद होते हैं–

- प्रबंध काव्य
- मुक्तक काव्य

प्रबंध काव्य–प्रबंध काव्य का प्रत्येक पद एक निश्चित कथासूत्र में आबद्ध होता है। प्रत्येक प्रबंध काव्य में पूर्वापर संबंध पाया जाता है अर्थात प्रत्येक पद अपना अर्थ देने के लिए अपने पहले एवं बाद के पद पर निर्भर रहता है। प्रबंध काव्य में पदों का स्थान निश्चित रहता हो। यदि उनका स्थान या क्रम बदल दिया जाये तो पूरा कथाविन्यास अस्त–व्यस्त हो जाता है। जैसे– यदि 'रामचरितमानस' के चौपाईयों का पदक्रमभंग कर दिया जाए तो उसके अर्थ में परिवर्तन हो जाता है, जबकि मुक्तक रचना में कोई विशेष प्रभाव नहीं होता।

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने मुक्तक के स्वरूप को परिभाषित करते हुए लिखा है– ''यदि प्रबंध एक विस्तृत वनस्थली है तो मुक्तक एक चुना हुआ गुलदस्ता है।''

मुक्तक रचना के कुछ उदाहरण–

बिहारी सतसई– बिहारी,

कबीर की साखियाँ– कबीर

एवं गजल विधा के समस्त शेर मुक्तक होते हैं।

यदि कबीर के दोहे–'गुरु गोविन्द दोऊ खड़े' पहले लिख दिया जाये और 'काकर–पाथर जोड़ के' बाद में लिखा जाय तो कोई प्रभाव नहीं पड़ता।

जबकि प्रबंध काव्यों को उलट–पुलट दिया जाये तो श्रीराम का वनगमन पहले हो जाएगा व उनका जन्म बाद में होगा जो तर्कसंगत नहीं है।

प्रबंध काव्य मुख्यतः दो प्रकार के होते हैं–

- महाकाव्य
- खण्डकाव्य

महाकाव्य– इसमें किसी प्रख्यात नायक के सम्पूर्ण जीवन चरित्र का आख्यान होता है; जैसे– पृथ्वीराजरासो (हिन्दी का प्रथम महाकाव्य), प्रिय प्रवास (खड़ी बोली हिंदी का प्रथम महाकाव्य)

खण्डकाव्य– इसमें किसी प्रख्यात नायक के जीवन के एक खण्ड का चित्रण किया जाता है; जैसे–जयद्रथ वध, एवं मेघनाथ वध (मैथिलीशरणगुप्त)।

मुक्तक– मुक्तक वह रचना है, जिसका प्रत्येक पद पूर्वापर संबंध से मुक्त होता है। पूर्वापर संबंध का तात्पर्य है– पहले और बाद के पद से संबंध। इसका प्रत्येक पद अर्थ की दृष्टि से स्वतंत्र होता है।

मुक्तक भी दो प्रकार के होते हैं–

- पाठ्य मुक्तक
- गेय मुक्तक

पाठ्य मुक्तक– वे मुक्तक जिनमें चिंतन–मनन, तर्क–वितर्क, दर्शन, नीति आचार–व्यवहार का प्राधान्य होता है पाठ्य मुक्तक कहलाते हैं; जैसे– कबीर व रहीम के दोहे।

गेय मुक्तक– वे मुक्तक जिनमें भाव की प्रधानता हो, साथ ही लय एवं प्रवाह के साथ गाये जा सकें, गेय मुक्तक कहलाते हैं। इन्हें प्रगीत भी कह सकते हैं; जैसे– सूर के पद, मीरा के पद, गजल इत्यादि।

शैली के आधार पर

पद्य काव्य– छंदबद्ध एवं मुक्तछंद की लय प्रधान एवं प्रवाहपूर्ण रचना को पद्य काव्य कहते हैं; जैसे– 'हल्दीघाटी'(श्यामनारायण पाण्डेय), 'जुही की कली'(सूर्यकांत त्रिपाठी ''निराला'')

गद्य काव्य– ये रचनाएँ छन्द विहीन होती हैं, किंतु इसमें काव्य–सी सरसता एवं मधुरता होती है। उनका गायन संभव नहीं है; जैसे–'साधना'(रामकृष्ण दास), 'अंतर्नाद' (वियोगीहरि), 'अंतस्तल'(चतुरसेन शास्त्री), 'साहित्य देवता'(माखनलाल चतुर्वेदी)

चम्पू–इसमें गद्य एवं पद्य दोनों का समावेश होता है; जैसे– 'उर्वशी'(रामधारी सिंह दिनकर), 'राऊलवेल'(रोड़ा कवि)।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक विविध प्रकार की पद्य/काव्य रचनाओं को पर्ची पर लिखकर एक बॉक्स में रख लेंगे। फिर अलग–अलग बॉक्स पर महाकाव्य, खण्डकाव्य, मुक्तक, चम्पू, गद्य काव्य लिखकर रख लेंगे। अब प्रशिक्षक एक–एक प्रशिक्षु को बारी–बारी से बुलाएँगे और कोई भी एक पर्ची उठाकर उसमें लिखी रचना को पढकर उसे संबंधित विधा के बॉक्स में डालने के लिए कहेंगे।

गतिविधि का नाम : आओ कविता पाठ करें

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कविता लिखा हुआ चार्ट

उद्देश्य : विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

4.3 प्रमुख कवियों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ

कबीरदास

सामान्य परिचय

निर्गुण भक्तिधारा के प्रमुख कवि कबीरदास के जन्म और मृत्यु के सम्बन्ध में अनेक किवदंतियाँ प्रचलित हैं। कहा जाता है कि कबीरदास का जन्म 1398 ई. में काशी के लहरतारा नामक स्थान पर हुआ।

नीरू और नीमा नामक जुलाहा दंपति ने इन्हें लहरतारा नामक तालाब के पास पाया और इनका पालन–पोषण किया। इनका विवाह 'लोई' नाम की कन्या से हुआ ,जिससे इनको दो संतान कमाल और कमाली की प्राप्ति हुई। इनके गुरु का नाम रामानन्द था। कबीर ने विधिसम्मत शिक्षा प्राप्त नहीं की थी, किंतु साधुओं के सत्संग,पर्यटन तथा स्वानुभव के आधार पर उन्होंने ज्ञान प्राप्त किया था। उन्होंने स्वयं लिखा है–

"मसि कागद छुयौ नहीं कलम गह्यौ नही हाथ।"

प्रकृति से समाज–सुधारक संत कबीर अत्यंत उदार ,विद्रोही तथा गृहस्थ जीवन के समर्थक कवि थे। कबीर के राम और रहीम में एकरूपता है। उन्होंने समाज में व्याप्त अनेक रूढियों,बाह्य आडंबरों, अंध विश्वासों का निडरता से खंडन किया। उन्होंने गुरु की महत्ता, नाम की महत्ता आदि पर विशेष बल दिया है। उन्होनें अपने काव्य में धार्मिक और सामाजिक भेदभाव से मुक्त होकर मानव की कल्पना की।

दिनभर रोजा रखत है, राति हनत है गाय।
यह तो खून वह बंदगी, कैसी खुशी खुदाय।।

कबीर की भाषा को आचार्य रामचन्द्र शुक्ल ने 'सधुक्कड़ी' अथवा 'पंचमेल खिचड़ी' कहा है। आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी ने उन्हें 'वाणी का डिक्टेटर' कहा है। कबीर की भाषा में जैसी सरलता व सहजता विद्यमान है यही उनकी काव्य की शक्ति है। उनकी भाषा जनभाषा के अत्यंत निकट है इसलिए यही कारण है कि कबीर के दर्शन को बड़े ही सरलता से समझा जा सकता है।

प्रमुख रचनाएँ

कबीर की रचनाएँ मुख्यत: कबीर ग्रंथावली में संकलित है ,कबीर पंथ में उनकी रचनाओं का संग्रह बीजक नाम से प्रसिद्ध है, जिसके तीन भाग है–

1. **साखी–** सांप्रादायिक शिक्षा और सिद्धांत के उपदेश, जो दोहों में है।
2. **सबद–** अलौकिक प्रेम और उनकी साधना पद्धति, जो गेय–पद में है।
3. **रमैनी–** रहस्यवादी और दार्शनिक विचार,जो चौपाई छंद में है।

कबीरदास की मृत्यु सन् 1518 ई० के लगभग मगहर में हुई।

सूरदास

सामान्य परिचय

हिन्दी साहित्य के भक्तिकाल के सगुण काव्यधारा के कृष्णोपासक कवि सूरदास हैं। अष्टछाप के कवियों में अग्रगण्य महाकवि सूरदास का जन्म सन् 1478 ई० के लगभग माना जाता है। एक मत के अनुसार, उनका जन्म मथुरा के पास रुनकता नामक ग्राम में हुआ, जबकि अन्य विद्वानों के अनुसार उनका जन्म दिल्ली के निकट सीही नामक स्थान माना जाता है । इस प्रकार सूरदास के जन्म तथा जन्म स्थान के विषय में विद्वान एक मत नहीं है । सूरदास की मृत्यु सन् 1583 ई० में पारसौली नामक स्थान पर हुआ था। सूरदास महाप्रभु बल्लभाचार्य के शिष्य थे। सूरदास के विषय में प्रचलित है कि सूरदास जन्मान्ध थे किंतु इस विषय में पुष्ट प्रमाण नहीं है। आचार्य रामचन्द्र शुक्ल के शब्दों में "बाल सौन्दर्य एवं स्वभाव के चित्रण में जितनी सफलता सूर को मिली है, उतनी अन्य किसी को नहीं। वे अपने बंद आँखों से वात्सल्य का कोना–कोना झाँक आये।"

सूरदास, मथुरा और वृंदावन के बीच गऊघाट पर रहते थे और श्रीनाथ जी के मंदिर में भजन–कीर्तन करते थे। उनके निधन पर गोसाईं विठ्ठलनाथ ने कहा था–

"पुष्टि मारग को जहाज जात है सो जाकों कछु लेनौ होय सो लेउ।"

सूरदास बल्लभाचार्य के संपर्क में आने से पहले विनय के पद लिखा करते थे किन्तु बल्लभाचार्य के कहने पर कृष्ण–लीला का गान करने लगे।

सूरदास हिन्दी साहित्य में 'वात्सल्य रस सम्राट' जीवनोत्सव का कवि, श्रृंगार का कवि आदि उपाधियों को समेटे हुए हैं। उनके काव्य में खेती और पशुपालन वाले भारतीय समाज का दैनिक अंतरंग चित्र तथा मनुष्य की स्वाभाविक वृत्तियों का चित्रण मिलता है। सूरदास के कृष्ण और गोपियों का प्रेम सहज रूप से मानवीय प्रेम की प्रतिष्ठा करता है।

"धेनु दुहत अति ही रति बाढ़ी।

एक धार दोहनि पहुचावत, एक धार जहँ प्यारी ठाढ़ी।"

सूरदास की भाषा ब्रज भाषा है ,उसमें चित्रात्मकता, आलंकारिता, भावात्मकता, सजीवता, प्रतीकात्मकता तथा बिंबात्मकता पूर्ण रूप से विद्‌यमान है। उन्होंने ब्रज भाषा को ग्रामीण जनपद से हटाकर नगर और ग्राम के संधिस्थल पर ला दिया था।

प्रमुख रचनाएँ

- **सूरसागर–** इसकी कथा भागवत पुराण़ के दशम स्कंध से ली गई है। इसमें कृष्ण जन्म से लेकर श्रीकृष्ण के मथुरा जाने तक की कथा का वर्णन है।

  "सूरसागर किसी चली आती हुई गीतकाव्य परंपरा का, चाहे वह मौखिक ही रही हो–पूर्ण विकास सा प्रतीत होता है।"
- **सूरसारावली–** सूरदास ने इस संसार को होली के खेल का रूपक माना है,जिसमें लीला पुरुष की अद्‌भुत लीलाएँ निरंतर चलती रहती हैं।
- **साहित्य लहरी–** सूरदास के दृष्टकूट पदों का संकलन है। जिसमें रस, अलंकार और नायिका भेद वाली रचना शैली है।

मीराबाई

सामान्य परिचय

मीराबाई का जन्म जोधपुर के चोकड़ी 'मेड़ता' के समीप 'कुडकी' गाँव में सन् 1503 ई० में हुआ था। उनका विवाह चित्तौड़ के राणा सांगा के ज्येष्ठ पुत्र भोजराज से 13 वर्ष की उम्र में हुआ। बाल्यकाल में माता, विवाह के सात वर्ष पश्चात् पति, उसके बाद श्वसुर का देहांत हो गया। उनका संपूर्ण जीवन दुखों से घिरा रहा। लौकिक जीवन से पलायन कर घर छोड़ दिया। मीरा उस समय प्रचलित सती प्रथा का बहिष्कार कर, श्रीकृष्ण की उपासना में समर्पित हो गयीं।

"मेरे तो गिरिधर गोपाल ,दूसरो न कोय।

जाके सिर मोर मुकुट, मेरो पति सोय।।"

मध्यकालीन भक्ति आंदोलन की आध्यात्मिक प्रेरणा ने जिन कवियों को जन्म दिया, उनमें मीराबाई का नाम प्रसिद्‌ध है। उन्होनें राजकुल के परिस्थितियों के विरुद्‌ध जाकर संतों संग बैठ, नाच–गाकर अपने कृष्ण भक्ति को परिपुष्ट किया। मीरा, संत रैदास की शिष्या हैं।

मीराबाई हिन्दी और गुजराती दोनों प्रदेश की कवियत्री स्वीकार की जाती है। उनकी उपासना माधुर्यभाव से युक्त तथा भाषा राजस्थानी मिश्रित ,विशुद्‌ध साहित्यक ब्रज भाषा है। कहीं–कहीं उनकी भाषा में पंजाबी, गुजराती, खड़ी बोली का प्रयोग मिलता है।

प्रमुख रचनाएँ

गीत गोविन्द की टीका, नरसी जी का मायरा ,राग सोरठा का पद, मलार, ाग गोविंद, सत्य भामानु रुसणं, मीरा के गरवी, रुक्मणी मंगल, स्फुट पद। मीरा के स्फुट पदों का संकलन वर्तमान में 'मीराबाई की पदावली' के नाम से प्रकाशित है ।

बिहारी

सामान्य परिचय

रीतिकाल के प्रतिनिधि कवियों में बिहारी का नाम सर्वश्रेष्ठ है। इनका जन्म 1595 ई. में ग्वालियर में हुआ था। इनके पिता का नाम केशवराय था। इनकी बाल्यावस्था बुण्देलखण्ड में व्यतीत हुआ, इसके बाद वे मथुरा में आ गये। बिहारी, जयपुर के मिर्जा राजा जयसिंह के दरबार में रहा करते थे। कहा जाता है कि बिहारी ने राजा जयसिंह को छोटी रानी के प्रेम से निकलकर राजकाज की रक्षा के लिए प्रेरित किया था –

"नहिं पराग, नहिं मधुर–मधु, नहिं विकास यहि काल।
अली कली ही सों बंधयो, आगे कौन हवाल।।"

इनका देहावसान सन् 1663 ई० में हुआ।

प्रमुख रचनाएँ

बिहारी की ख्याति का मूल आधार उनका एक मात्र कृति 'बिहारी सतसई' है। जिसमें 700 दोहे संगृहित हैं। इस संबंध में आचार्य रामचन्द्र शुक्ल कहते हैं कि "शृंगार रस के ग्रंथो में जितनी ख्याति और जितना मान 'बिहारी सतसई' का हुआ, उतना और किसी का नहीं। इसका एक–एक दोहा, हिन्दी साहित्य में एक–एक रत्न माना जाता है।"

बिहारी की बहुज्ञता का आलोचक भी लोहा मानते हैं– वे लोक ज्ञान, शास्त्र ज्ञान, काव्य, रीति आदि ज्ञान से युक्त थे। इनकी कविता शृंगार रस से ओत–प्रोत है। इसमें नायक–नायिका के हाव–भाव, चेष्टाएँ पर्याप्त मात्रा में मिलती मिलती हैं।

कहत–नटत–रीझत–खिझत, मिलत, खिलत, लजियात।
भरे भौन मैं करत हौं, नैननु ही सौं बात।।

बिहारी की भाषा शुद्ध ब्रज है ,साथ ही साहित्यिक गुण से युक्त है।

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

सामान्य परिचय

आधुनिक हिन्दी साहित्य के जनक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र का जन्म 9 सितम्बर सन 1850 ई. को काशी में हुआ। उनके पिता का नाम गोपालचन्द्र 'गिरिधरदास' और माता पार्वतीदेवी थीं। बाल्यावस्था में ही ये माता पिता की छाया से वंचित हो गये थे। बनारस के क्वींस कॉलेज में कुछ समय तक उन्होंने अध्ययन कार्य किए।

भारतेन्दु ने समाज तथा साहित्य के लिए अपना अमूल्य योगदान दिया था। उन्होंने तीन सशक्त पत्रिका का संपादन किया तथा उस समय लेखकों का एक मंडल भी बनाया। साथ ही उनको लिखने के लिए भी प्रेरित किया। उन्होंने सन् 1868 ई० में 'कविवचन–सुधा', सन् 1873 ई० में 'हरिश्चन्द्र मैग्जीन' जिसका नाम आगे चलकर 'हरिश्चन्द्र चंद्रिका' हो गया सन् 1874 ई० में 'बाल बोधनी 'पत्रिकाएँ निकाली। लेखक मंडल में पं. बालकृष्ण भट्ट, पं. अंबिकादत्त व्यास, पं. राधाकृष्ण गोस्वामी, लाला श्री निवासदास, डॉ. जगमोहन सिंह सम्मिलित थे। भारतेन्दु ने सन् 1873 ई० में 'तदीय समाज' की स्थापना किया था।

भारतेन्दु का झुकाव कृष्ण लीला के गान की ओर था। भक्ति और शृंगार भावना का समन्वय उनके काव्य में पाया जाता है। हास्य–व्यंग्य का छिटपुट समावेश उनके काव्य की विशेषता है। भारतेन्दु की अधिकांश कविता ब्रजभाषा में तथा कुछ कविताएँ खड़ी बोली में है। उर्दू में वे 'रसा' नाम से लिखते थे। वे कविता के क्षेत्र में नवयुग के अग्रदूत थे। उन्होंने अंग्रेजों की शोषद नीति का पुरजोर विरोध किया था ।

"भीतर–भीतर सब रस चुसै, हँसि–हँसि के तन–मन धन मुसै।
जाहिर बातन में अति तेज, क्यों सखि साजन! नहि अंगरेज।।"

प्रमुख रचनाएँ

उनकी काव्य कृतियों की संख्या लगभग सत्तर है, जिनमें प्रेम–मालिका, प्रेम–सरोवर, गीत–गोविंदानंद, वर्षा विनोद, विनय प्रेम–पचासा, प्रेम–फुलवारी, वेणु–गीति आदि विशेष उल्लेखनीय है। दशरथ विलाप, फूलों का गुच्छा खड़ी बोली की रचना है।

इस प्रकार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र साहित्य की सेवा करते–करते मात्र पैंतीस वर्ष की अवस्था में सन् 1885 ई० में स्वर्ग सिधार गए।

सूर्यकांत त्रिपाठी 'निराला'

सामान्य परिचय

छायावाद के स्तंभ कवि सूर्यकांत त्रिपाठी निराला का जन्म बंगाल के महिषादल में सन् 1897 में हुआ तथा निधन 15 अक्टूबर सन् 1961 ई० को इलाहाबाद में हुआ। ये कान्यकुब्ज ब्राह्मण थे। इनके पिता पं. रामसहाय उन्नाव जिले के निवासी थे, किंतु महिषादल में नौकरी करते थे। इनकी औपचारिक शिक्षा महिषादल में हुई। उन्होंने स्वाध्याय से संस्कृत, बांग्ला, अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान प्राप्त किया तथा संगीत व दर्शनशास्त्र के पठन में इनकी रूचि थी। निराला के ऊपर रामकृष्ण परमहंस और स्वामी विवेकानंद की विचार धाराओं का विशेष प्रभाव था ।

इनका पारिवारिक जीवन अनेक अभावों एवं विपत्तियों से पीड़ित था किंतु परिस्थितियों के सम्मुख ये कभी भी झुके नहीं। महामारी के प्रकोप से इनके आत्मीय जनों का असामयिक निधन होने से ये अंदर से टूट गये।

साहित्यिक मोर्चे पर भी इन्होंने अनेक संघर्ष किया। इनकी प्रथम रचना 'जुही की कली' सन् 1916 ई० में लिखी गयी। जिसको निराला ने सरस्वती पत्रिका में प्रकाशित करने को भेजा था किंतु महाबीर प्रसाद द्विवेदी ने अश्लीलता का आरोप लगाकर छापने से मना कर दिया।

प्रमुख रचनाएँ

निराला की प्रमुख रचनाएँ हैं– अनामिका, परिमल, गीतिका, कुकुरमुत्ता और नये पत्ते आदि। इसके अतिरिक्त हिन्दी की अन्य विधाओं जैसे– उपन्यास ,कहानी, आलोचना तथा निबंध के क्षेत्र में भी निराला जी ने विशेष ख्याति अर्जित की।

इनकी कुछ रचनाएँ छायावादी विशेषता से युक्त है तो कुछ प्रगतिशीलता युक्त। निराला विस्तृत सरोकारों के धनी कवि हैं। इनकी रचनाएँ दार्शनिक, विद्रोही, क्रांति, प्रेम की तरलता, प्रकृति का विराट रूप तथा उदात्त चित्रण आदि भावों को समेटे हुए है। उनके विद्रोही स्वभाव ने कविता के भाव–जगत और कला जगत में नये प्रयोग को संभव किया। उन्होंने मुक्त छंद का सबसे पहले प्रयोग किया; जिसे 'रबर छंद', 'केचुआ छंद' नामों से भी जाना जाता है। उन्होंने अपनी कविता में शोषित, पीड़ित, उपेक्षित, प्रताड़ित वर्ग के प्रति सहानुभूति व्यक्त की तथा शोषक, सत्ताधारी और पूंजीवादी वर्ग के प्रति व्यंग्य रूप में विरोध भाव मुखर किया।

उनकी राम की शक्तिपूजा, कुकुरमुत्ता कविता युगीन यथार्थ के प्रति सजग है जो पाठक को आकर्षित करती है। इन्होंने मतवाला पत्रिका का संपादन भी कुछ समय के लिए किया। निराला की अधिकांश रचनाएँ संस्कृत गर्भित है। समासिक शब्दों का प्रयोग इनकी प्रतिभा का ध्योतक है। इन्होंने अपनी कविता में गेयता का विशेष ध्यान दिया है।

"प्रतिपल–परिवर्तित–व्यूह, भेद–कौशल–समूह
राक्षस–विरुद्ध–प्रत्युह, कुछ–कवि–विषम–हूह,"

मैथिली शरण गुप्त

सामान्य परिचय

मैथिलीशरण गुप्त का जन्म 1886 ई० में चिरगाँव जिला झाँसी में हुआ। ये द्विवेदी युग के सर्वाधिक लोकप्रिय कवि के रूप में विख्यात थे। इनके पिता का नाम रामचरण था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा गाँव के स्कूल में हुयी तथा घर पर ही स्वाध्याय के द्‌वारा हिन्दी, संस्कृत, बँगला, मराठी, और अंग्रेजी का अच्छा ज्ञान प्राप्त किए। काव्य रचना की प्रेरणा गुप्त जी को महावीर प्रसाद द्विवेदी से प्राप्त हुई। मैथिली शरण गुप्त महावीर प्रसाद द्विवेदी को अपना गुरु स्वीकार करते हैं। गुप्त जी अपने जीवन काल में ही 'राष्ट्रकवि' के रूप में विख्यात हुए।

गुप्त जी रामभक्त कवि हैं। अपने जीवन के आदर्श इन्होंने राम, बुद्ध और गाँधी से प्राप्त किया था। ये हमारे देश और युग के प्रतिनिधि कवि हैं। इन्होंने भारतीय जीवन को समग्रता में समझने और प्रस्तुत करने का भी प्रयास किया है। गुप्त ने हिन्दी कवियों की रामायण की 'नारी पात्रों' विषयक उदासीनता को 'साकेत महाकाव्य' के 'अष्टम्' एवं 'नवम्' सर्ग में कैकेयी एवं उर्मिला का उदात्त चित्रण करके इन उपेक्षित नारियों के प्रति आदर भाव प्रस्तुत किया। 'भारत–भारती' रचना हिन्दी भाषियों में जाति और देश के प्रति गौरव की भावनाएँ प्रबुद्‌ध की है।

प्रमुख रचनाएँ

साकेत महाकाव्य जयद्रथ वध, पंचवटी, झंकार, यशोधरा, द्वापर, विष्णुप्रिया आदि।

गुप्त जी की काव्य की भाषा विशुद्‌ध खड़ी बोली है। उनकी भाषा पर संस्कृत का प्रभाव स्पष्ट है। अपने काव्य में हिंदू–सभ्यता और संस्कृति को उन्होंने अत्यंत उज्जवल रूप में संसार के सामने रखा है। नारी की गरिमा को वे कभी भी विस्मृत नहीं करते–

"अबला जीवन हाय तुम्हारी यही कहानी।
आँचल में है दूध और आँखो में पानी।।"

साहित्य के पुजारी तथा राष्ट्रभक्त कवि मैथिली शरण गुप्त का देहान्त 1964 ई0 में हुआ।

हरिवंश राय बच्चन

सामान्य परिचय

हरिवंश राय बच्चन का जन्म 27 नवम्बर सन् 1907 ई० को उत्तर प्रदेश के प्रयागराज में हुआ। इनकी प्रारंभिक शिक्षा उर्दू में हुई। इन्होंने इलाहाबाद विश्वविद्‌यालय से अंग्रेजी में एम० ए० किया। तत्पश्चात काशी हिन्दू विश्वविद्‌यालय से बी०टी० का प्रमाण–पत्र प्रापत किया। 'बच्चन' नाम इनके माता–पिता पुकार के लिए प्रयोग करते थे किंतु बाद में बच्चन जी ने अपना उपनाम बना लिया। बच्चन कुछ समय तक विश्वविद्यालय में प्राध्यापक पद पर प्रतिष्ठित थे तत्पश्चात् भारतीय विदेश सेवा में चले गए। इन्होंने विभिन्न देशों का भ्रमण किया। बच्चन काव्य पाठ के लिए विख्यात कवि हैं।

प्रमुख रचनाएँ

इनकी कविताएँ सहज और संवेदनशील हैं। इनकी कविता में व्यक्ति–वेदना, राष्ट्र चेतना तथा जीवन दर्शन के स्वर मिलते हैं जो मानव को अपनी ओर आकृष्ट करते हैं। इन्होंने आत्मविश्लेषण पूर्ण काव्य की रचना की। सामाजिक असमानता, और कुरीतियों, राजनैतिक जीवन के ढोंग पर इन्होंने व्यंग्य किया है कविता के अतिरिक्त बच्चन ने आत्मकथा भी लिखी है जो हिन्दी गद्‌य साहित्य की अमूल्य कृतियाँ हैं। इनकी आत्मकथा– 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ', 'नीड़ का निर्माण फिर', 'बसेरे से दूर', 'दशद्‌वार

से सोपान तक' है। इनकी कविता जीवन से पूरी तरह विमुख है नहीं है। इनके मधुशाला, मधुबाला, मधुकलश पर उमर खैयाम की रुबाइयों का प्रभाव है। उन्होंने जीवन की विषमताओं को एक सामान्य अनुभूति के स्तर पर सुलझाने का प्रयास किया।

इनके मधुशाला, मधुबाला और मधुकलश काव्य संग्रह धार्मिक–साम्प्रदायिक अंतराल को दूर कर अनुभूति के धरातल पर एकता को स्थापित करते है। इन्हें हालावाद का प्रवर्तक कवि कहा जाता है।

"मैं मदिरालय के अंदर हूँ,
मेरे हाथों में प्याला,
प्याले में मदिरालय बिंबित
करने वाली है हाला,"

बच्चन की प्रतिभा मूलतः गीतात्मक है, इन्होंने खड़ी बोली में रचना की। बच्चन 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार, 'सोवियत भूमि नेहरू' पुरस्कार और 'सरस्वती सम्मान' से सम्मानित थे। इनका परलोकवास सन् 2003 ई० में हुआ।

बोध परीक्षण

1. हिन्दी के विद्वानों के अनुसार कविता किसे कहते हैं?
2. हिन्दी के प्रमुख कवियों के नाम लिखिए।
3. काव्य के मुख्य रूप से कितने भेद किए गए हैं? उनके नाम भी लिखिए।
4. मीराबाई की प्रमुख रचनाएँ कौन–कौन सी हैं?
5. 'साकेत महाकाव्य' किसकी रचना है?

समेकन

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि कविता एक रमणीय, शब्दार्थमयी, लयात्मक रचना है। इसके विभिन्न स्वरूप होते हैं, जिन्हें काव्य–रूप भी कहते हैं। हिन्दी काव्य साहित्य अत्यंत समृद्ध है। उच्च प्राथमिक स्तर की हिन्दी पुस्तकों में संकलित विविध साहित्यकारों ने काव्य के विभिन्न स्वरूपों पर लेखनी चलाई है, जिनमें निम्न प्रमुख हैं– कबीर, सूर, तुलसी, मीरा, बिहारी भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, मैथिली शरण गुप्त, जयशंकर प्रसाद, सूर्यकांत त्रिपाठी निराला, रामधारी सिंह दिनकर, केदारनाथ सिंह, हरिवंशराय बच्चन आदि।

स्व आकलन

1. **सत्य/असत्य का चयन कीजिए–**

(क) कबीर बहुत पढ़े–लिखे विद्वान थे। (सत्य/असत्य)

(ख) सूरदास भल्लभाचार्य के शिष्य थे। (सत्य/असत्य)

(ग) मधुशाला, मधुकलश रामधारी सिंह दिनकर की कविता है। (सत्य/असत्य)

(घ) मीरा कृष्ण भक्त उपासिका थीं। (सत्य/असत्य)

(च) बिहारी की भाषा ब्रज भाषा है (सत्य/असत्य)

(छ) कविवचन सुधा' पत्रिका के सम्पादक भारतेन्दु हरिश्चन्द्र हैं। (सत्य/असत्य)

(ज) निराला विद्रोह भाव की कवि हैं जिन्होंने कुकुरमुता कविता लिखी है। (सत्य/असत्य)

(झ) मैथिली शरण गुप्त का जन्म काशी मे हुआ। (सत्य/असत्य)

(ट) बच्चन की "क्या भूलूँ क्या याद करूँ" कविता संग्रह है। (सत्य/असत्य)

2. रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए—

(क) भारतेन्दु जी का जन्म तथा जन्म स्थान....................है। (1850 काशी/1885 प्रयागराज)

(ख) रामचरित मानस में ....का वर्णन है। (राम/कृष्ण/बुद्ध)

(ग) 'साकेत' महाकाव्य में .... का वर्णन है। (यशोधरा/उर्मिला)

(घ) निर्गुण भक्त कवि ....हैं। (सूर/तुलसी/कबीर)

3. सुमेलित कीजिए—

रचना	रचनाकार
(क) रामचरित मानस	बच्चन
(ख) बिहारी सतसई	निराला
(ग) मधुकलश	तुलसी दास
(घ) सूरसागर	बिहारी लाल
(च) बीजक	तुलसी दास
(छ) नरसी जी का मायरा	मैथिलीशरण गुप्त
(ज) राम की शक्ति पूजा	मीराबाई
(झ) भारत भारती	सूरदास

4.4 निबंध

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु निबंध की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु निबंध की परिभाषा एवं स्वरूप जानते हैं।
3. प्रशिक्षु निबंध रचना के तत्त्वों से अवगत हैं।
4. प्रशिक्षु बच्चों में निबंध के प्रति समझ रुचि विकसित कर लेते हैं।

गद्यकारों की कसौटी के रूप में स्थापित 'निबंध', हिन्दी साहित्य की एक अत्यन्त विशिष्ट विधा है। हिन्दी साहित्य के अनेक विद्वानों ने निबंध को अनेक तरह से परिभाषित करने का प्रयास किया है। जिसमें से कुछ प्रमुख परिभाषाएँ निम्नवत् हैं–

"निबंध उस गद्य रचना को कहते हैं, जिसमें एक सीमित आकार के भीतर भी ऐसे विषय का वर्णन या प्रतिपादन एक विशेष निजीपन, स्वच्छंदता, सौष्ठव और सजीवता तथा आवश्यक संगति और संबद्धता के साथ किया गया हो।"

–बाबू गुलाब राय

"संक्षेप में निबंध एक ऐसी सीमित गद्य रचना है, जिसमें कार्य–कारण की शृंखला के साथ विचार निबद्ध होते हैं और उन विचारों में व्यक्तित्व की स्पष्ट छाप होती है।"

–हिन्दी साहित्य का बृहत् इतिहास (तेरहवाँ भाग)

सरल शब्दों में हम कह सकते हैं कि– निबंध विचारों, उद्धरणों एवं कथाओं का ऐसा सम्मिश्रण है जिसके माध्यम से निबंधकार स्वयं को अभिव्यक्त करता है तथा पाठकों से आत्मीय संबंध स्थापित करता है।

'निबंध' में निबंधकार अपने विचारों को सहज, स्वाभाविक रूप में पाठकों के सामने प्रकट करता है।

निबंध की विशेषताएँ

1. निबंध में मौलिकता, सरसता, स्पष्टता और सजीवता होती है।
2. निबंध की भाषा सरल, प्रभावशाली तथा व्याकरण सम्मत एवं विषयानुरूप होती है।
3. निबंध में एक विशेष निजीपन होता है।
4. निबंध के भीतर अभिव्यक्त विचारों में आवश्यक संगति एवं सम्बद्धता होती है।
5. निबंध में किसी विशेष विषय का विशेष दृष्टिकोण से वर्णन या प्रतिपादन होता है।

निबंध के प्रकार

निबंध के तीन मुख्य प्रकार हैं–

- भावात्मक निबंध
- विचारात्मक निबंध
- वर्णनात्मक निबंध

भावात्मक निबंध– भावात्मक निबंध में लेखक किसी विषय पर अपने भाव प्रकट करता है। इस प्रकार के निबंध में भाव प्रधान होता है

विचारात्मक निबंध– इस तरह के निबंधों में किसी विषय के गुण–दोष का वर्णन किया जाता है, जिसमें लेखक अपनी कल्पना और चिंतनशक्ति के माध्यम से इस प्रकार के निबंध को लिखता है।

वर्णनात्मक निबंध– इस प्रकार के निबंध में किसी सजीव या निर्जीव वस्तु का वर्णन किया जाता है। जिसमें किसी स्थान, परिस्थिति, दृश्य, वस्तु आदि को आधार बनाया जाता है।

उच्च प्राथमिक स्तर की पाठ्य पुस्तकों में सम्मिलित निबंध एवं उनके लेखकों के नाम

पाठ का नाम	लेखक का नाम
आप भले तो जग भला	श्रीमन्नारायण
लोक गीत	डॉ. भगवतशरण उपाध्याय
सत्साहस	गणेश शंकर 'विद्यार्थी'
क्या निराश हुआ जाय	डॉ. हजारी प्रसाद द्विवेदी
सच्ची वीरता	सरदार पूर्ण सिंह
आत्मनिर्भरता	आचार्य रामचन्द्र शुक्ल
खान–पान की बदलती तस्वीर	प्रयाग शुक्ल

4.5 प्रमुख निबंधकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल

जीवन परिचय

आचार्य रामचन्द्र शुक्ल का जन्म बस्ती जिले के अगोना नामक गाँव में सन् 1884 ई0 को हुआ था। शुक्ल जी काशी हिन्दु विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग के अध्यक्ष थे। शुक्ल जी की भाषा परिमार्जित प्रौढ़ और व्याकरणनिष्ठ है।

प्रमुख रचनाएँ

आलोचनात्मक ग्रंथ– सूर, तुलसी, जायसी, काव्य में रहस्यवाद, काव्य में अभिव्यंजनावाद रसमीमांसा इत्यादि।

ऐतिहासिक ग्रंथ– 'हिन्दी साहित्य का इतिहास' यह इनका प्रसिद्ध ऐतिहासिक ग्रंथ है। चिन्तामणि इनके द्वारा लिखित रचना है।

अनुदित कृतियाँ– शशांक बंगला भाषा का अनुवादित उपन्यास। विश्वप्रपंच, आदर्शजीवन, मेगास्थनीज का भारतवर्षीय वर्णन।

इनका निधन 2 फरवरी सन् 1914 ई0 में हुआ।

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी

जीवन परिचय

आचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी का जन्म 19 अगस्त 1907 ई० को उ०प्र० के बलिया जिले के आरत दुबे का छपरा, ओझवलिया नामक गाँव में हुआ था। द्विवेदी के बचपन का नाम वैद्यनाथ द्विवेदी था।

इन्होंने शान्तिनिकेतन कोलकाता तथा काशी हिन्दू विश्वविद्यालय में हिन्दी विभाग में प्रोफेसर और अध्यक्ष के रूप कार्य किया।

प्रमुख रचनाएँ

महत्वपूर्ण कृतियाँ– अशोक के फूल, विचार और वितर्क, कल्पलता, कुटज, आलोक पर्व (निबंध–संकलन)

उपन्यास– चारूचंद्रलेख, बाणभट्ट की आत्मकथा, पुनर्नवा, अनामपोथा का पोथा।

आलोचनात्मक ग्रंथ– सूर साहित्य, कबीर, हिन्दी साहित्य की भूमिका।

द्विवेदी जी की भाषा– द्विवेदी जी की भाषा खड़ी बोली हिन्दी थी। जिसमें इन्होंने व्याकरण तथा वर्तनी की अशुद्धियों पर विशेष ध्यान दिया।

इनकी रचनाओं में भारतीय संस्कृति और जीवन–मूल्यों की गहरी झाँकी है। इनका निधन 19 मई सन् 1979 ई० को हुआ।

श्रीमन्नारायण

जीवन परिचय

श्रीमन्नारायण का जन्म 1912 ई0 को इटावा में हुआ था। इनकी शिक्षा–दीक्षा कोलकाता तथा प्रयागराज विश्वविद्यालय में हुई। आप गांधीवादी आर्थिक सिद्धान्तों के विशेषज्ञ माने जाते हैं। आप भारत सरकार के योजना आयोग के सदस्य तथा गुजरात प्रान्त के राज्यपाल भी रह चुके हैं।

प्रमुख रचनाएँ

कविता संग्रह– मानव, अमर रजनी से प्रभात का अंकुर, रोटी का राग।

पुस्तकें– सोगाँव का संत, इतनी परेशानी क्यों।

डा0 भगवतशरण उपाध्याय

जीवन परिचय

डा0 भगवतशरण उपाध्याय का जन्म सन् 1910 ई० में बलिया उ०प्र० में हुआ। आपने प्राचीन भारत के ऐतिहासिक तथ्यों एवं भारतीय संस्कृति पर विशेष दृष्टिकोण से अध्ययन किया है।

प्रमुख रचनाएँ

विश्व साहित्य की रूपरेखा, कालीदास का भारत कादम्बरी, ठंडा आम, लाल चीन, गंगा–गोदावरी, बुद्ध वैभव, साहित्य और कला, सागर की लहरों पर इत्यादि।

इनका निधन अगस्त सन् 1982 ई० को हुआ है।

प्रयाग शुक्ल

जीवन परिचय

निबंधकार, कथाकार, कवि, कला समीक्षक और अनुवादक के रूप में प्रसिद्ध शुक्ल जी जन्म 28 मई 1940 ई० में कोलकाता (पश्चिम बंगाल) में हुआ था।

प्रमुख रचनाएँ

कविता संभव, यह एक दिन है, अधूरी चीजे तमाम, बीते कितने बरस।

निबंध संग्रह– घर और बाहर, हाट और समाज।

एक अनुवादक के रूप में प्रयाग शुक्ल ने रवीन्द्रनाथ ठाकुर की गीतांजलि का मूल बांगला से हिन्दी अनुवाद किया है।

गणेशशंकर विद्यार्थी

जीवन परिचय

भारतीय पत्रकार, असहयोग आंदोलन और भारत के स्वतंत्रता आंदोलन में एक महत्वपूर्ण व्यक्ति थे। इनका जन्म 26 अक्टूबर 1890 ई० को प्रयागराज में हुआ। यह हिन्दी समाचार पत्र के संस्थापक संपादन के रूप में जाने जाते है।

इनका निधन 25 मार्च 1931 ई० को हुई।

सरदार पूर्ण सिंह

जीवन परिचय

सरदार पूर्ण सिंह का जन्म 17 फरवरी 1881 ई० में एक सिख परिवार में हुआ था। ये पेशे से अध्यापक थे। विचार और भावात्मक इनके निबंधों की मुख्य विशेषताएँ है।

प्रमुख रचनाएँ

प्रमुख निबन्ध– सच्ची वीरता, आचरण की सभ्यता, मजदूरी और प्रेम, अमेरिका का मस्त जोगी, वाल्ट हिटमैन, कन्यादान, पवित्रता इत्यादि।

पूर्णसिंह द्विवेदी युगीन निबंधकारों में विशिष्ट स्थान रखते है। भावात्मक निबंधों के रचनाकार रूप में पूर्णसिंह जी हिन्दी में अद्वितीय माने जाते है।

इनका निधन 1931 ई० में हुआ।

4.6 कहानी

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु कहानी की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु कहानी की परिभाषा एवं स्वरूप जानते हैं।
3. प्रशिक्षु कहानी कला के तत्त्वों से अवगत हैं।
4. प्रशिक्षु कहानी के विभिन्न रूपों से अवगत हैं।
5. प्रशिक्षु कविता शिक्षण को सरल एवं रुचिकर बना लेते हैं।
6. प्रशिक्षु बच्चों को प्रदत्त विषयों पर सरल कहानी के निर्माण में सक्षम बना लेते हैं।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक कक्षा–कक्ष को चार समूहों में बाँटकर प्रशिक्षुओं के समक्ष चार्ट पर बनी हुई अलग–अलग कहानियों के चित्र दिखकर उन कहानियों को अपनी भाषा में लिखकर कक्षा में सुनाने के लिए कहेंगे।

गतिविधि का नाम : आओ कविता पाठ करें

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कविता लिखा हुआ चार्ट

उद्देश्य : विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

इस गतिविधि के बाद प्रशिक्षक गद्य लेखन की कहानी विधा से प्रशिक्षुओं का परिचय कराते हुए विषय प्रवेश करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

कहानी साहित्य लेखन की वह विधा होती है, जिसके द्वारा किसी घटना, अंग, व्यक्ति के बारे में रोचक वर्णन किया जाता है तथा लेखक पात्रों के माध्यम से मनोभावों की अभिव्यक्ति करता है।

मुंशी प्रेमचन्द द्वारा– "कहानी वह ध्रुपद की तान है, जिसमें गायक महफिल शुरू होते ही अपनी प्रतिभा दिखा देता है, एक क्षण में चित्र को इतने माधुर्य से परिपूर्ण कर देता है, जितना रात भर गाना सुनने से भी नहीं हो सकता।"

कहानी लेखन के तत्त्व

कहानी लेखन के 6 तत्त्व होते हैं जो निम्नलिखित हैं–

1. कथावस्तु
2. चरित्र–चित्रण
3. कथोपकथन
4. देशकाल
5. भाषा–शैली
6. उद्देश्य

1. **कथावस्तु–** कथावस्तु कहानी का आधार नींव होता है। इसके बिना कहानी की रचना नहीं की जा सकती।
2. **चरित्र–चित्रण–** कहानी में कुछ पात्र निर्धारित होते हैं तथा उनके गुण–दोष का वर्णन कहानी के माध्यम से चरित्र–चित्रण कहलाता है।
3. **कथोपकथन–** पात्रों द्वारा कहानी में प्रस्तुत बातचीत को संवाद या कथोपकथन कहा जाता है। जिसका प्रभावशाली होना आवश्यक है।
4. **देशकाल–** कहानी की परिस्थितियों के अनुसार देशकाल का चयन कहानी को प्रभावशाली बनाता है।
5. **भाषा–शैली–** कहानी लेखन में भाषा एवं शैली की रोचकता एवं शब्दों का चयन ही उसको प्रभावी बनाता है।
6. **उद्देश्य–** कहानी में उद्देश्य, घटना एवं परिस्थिति के अनुसार स्वतः स्पष्ट हो जाना चाहिए।

इन सभी को ध्यान में रखते हुए कहानी लिखने के कुछ नियम विद्वानों द्वारा निर्धारित किए हैं, जो निम्न हैं–

- किसी कहानी को लिखते समय विषयवस्तु की विशेष जानकारी होना आवश्यक है।
- विषयवस्तु का प्रस्तुतीकरण स्वाभाविक शैली में होना चाहिए।
- विषयवस्तु का प्रारंभ और अंत दोनों आपस में संबंधित हो।
- विषयवस्तु एक सूत्र में पिरोई हुयी प्रस्तुत हो।
- कहानी का शीर्षक आकर्षक एवं प्रभावशाली होना चाहिए।
- कहानी में लंबे वाक्यों का प्रयोग नहीं होना चाहिए।

कहानी के प्रकार

1. घटना प्रधान कहानी
2. चरित्र प्रधान कहानी
3. वातावरण प्रधान कहानी
4. भाव प्रधान कहानी
5. मनोविश्लेषणात्मक कहानी

1. **घटना प्रधान कहानी–** जिन कहानियों में घटनाओं को विषयवस्तु बनाकर कथानक तैयार किया जाता है, घटना प्रधान कहानी कहा जाता है।
2. **चरित्र प्रधान कहानी–** चरित्र प्रधान कहानी एक पात्र के भाव, अन्तर्द्वन्द एवं घटनाओं को विषयवस्तु मानकर कहानी का निर्माण किया जाता है।
3. **वातावरण प्रधान कहानी–** वातावरण प्रधान कहानी में परिवेश प्राकृतिक सौन्दर्य संवाद, संगीत, भाषा आदि को कथानक की तरह प्रस्तुत किया जाता है।

4. **भाव प्रधान कहानी–**यह कहानी चरित्र एवं वातावरण के आलावा किसी भाव विशेष के साथ पूर्ण होती है।
5. **मनोविश्लेषणात्मक कहानी–** इस कहानी का मूल, व्यक्ति के मानसिक अर्न्तदवंद पर आधारित होता है उसी को आधार बनाकर कहानी का विकास किया जाता है।

कहानी के शैलीगत भेद

1. ऐतिहासिक शैली
2. आत्मकथा शैली
3. पत्रात्मक शैली
4. डायरी शैली

1. **ऐतिहासिक कहानी–** इसके अन्तर्गत किसी ऐतिहासिक घटनाक्रम का वर्णन कहानी के रूप में किया जाता है।
2. **आत्मकथा शैली–** इस शैली के अन्तर्गत कहानीकार स्वयं को पात्र (मैं) के रूप में रखकर कहानी का निर्माण करता है।
3. **पत्रात्मक शैली–** इस कहानी विधा में रचनाकार पत्र लेखन शैली में कथानक विस्तार करता है; जैसे– कक्षा 8 में वर्णित रविन्द्रनाथ ठाकुर का "मँझली बहू का पत्र"।
4. **डायरी शैली–** इस कहानी विधा में भूतकाल की घटना को डायरी के माध्यम से कथावस्तु का निर्माण किया जाता है।

उच्च प्राथमिक स्तर के पुस्तकों की संकलित कहानियाँ एवं उनके लेखकों के नाम

कक्षा–6

कहानी		लेखक
1. अपना स्थान स्वयं बनाइए	–	कन्हैयालाल मिश्र प्रभाकर
2. क्यों–क्यों लडकी	–	महाश्वेता देवी
3. हार की जीत	–	सुदर्शन
4. ईदगाह	–	प्रेमचन्द
5. साप्ताहिक धमाका	–	डॉ० हरिकृष्ण देवसरे
6. छिपा रहस्य	–	क्वेंटीन रेनाल्ड

कक्षा–7

1. राजधर्म	–	जातक कथा से
2. शाप–मुक्ति	–	रमेश उपाध्याय
3. भविष्य का भय	–	आशापूर्णा देवी

कक्षा–8

1. काकी	–	सियाराम शरण गुप्त
2. अपराजिता	–	'शिवानी' गौरा पंत
3. जंगल	–	चित्रा मुद्गल

4.7 प्रमुख कहानीकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर'

सामान्य परिचय

प्रसिद्ध रिपोर्ताज लेखक कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' का जन्म 29 मई 1906 को देवबन्द, सहारनपुर में एक साधारण ब्राह्मण परिवार में हुआ था। ये मृदु स्वभाव के थे। उन्होंने अपने एक संस्मरण में अपने माता–पिता के स्वभावगत विशेषताओं को बताते हुए लिखा है–"पिताजी दूध मिश्री थे, तो माँ लाल मिर्च।" परिवार की आर्थिक स्थिति अच्छी न होने के कारण उनकी स्कूली शिक्षा–दीक्षा भली–भांति नहीं हो पायी। उन्होंने स्वाध्याय से ही संस्कृत, अंग्रेजी आदि विषयों का गहन अध्ययन किया।

कन्हैयालाल मिश्र 'प्रभाकर' जब 'खुर्जा संस्कृत वि।ालय' के छात्र बने , तब राष्ट्र नेता मौलाना आसिफ अली के भाषण से प्रभावित होकर परीक्षा त्याग दी और स्वतंत्रता संग्राम में कूद पड़े और उन्होंने अपना पूरा जीवन देश सेवा को समर्पित कर दिया। इस दृष्टि से पत्रकारिता के क्षेत्र में उनका योगदान उल्लेखनीय है। 9 मई 1955 में इनका देहान्त हो गया।

साहित्यिक परिचय– 'प्रभाकर' जी संस्मरण, रेखाचित्र, यात्रा– वृत्तान्त, रिपोर्ताज आदि साहित्यिक विधाओं में अपनी लेखनी चलाई। सहारनपुर से प्रकाशित होने वाली पत्रिका 'नवजीवन' का भी सम्पादन किया। एक अन्य पत्रिका 'ज्ञानदेव' से भी जुड़े रहे।

प्रमुख रचनाएँ

- **रिपोर्ताज–** (क) बाजे पायलिया के घुंघरू (ख) क्षण बोले कण मुस्काए
- **संस्मरण–** दीप जले शंख बजे।
- रेखाचित्र– (क) माटी हो गयी सोना (ख) नई पीढ़ी के विचार (ग) भूले बिसरे चेहरे
- **लघुकथा–** (क) धरती के फूल (ख) आकाश के तारे
- **संपादन–** (क) नवजीवन (ख) विकास (ग) ज्ञानदेव

महाश्वेता देवी

सामान्य परिचय

पत्रकार, लेखिका, साहित्यकार और आन्दोलनकारी के रूप में पहचानी जाने वाली महाश्वेता देवी का जन्म सन् 1926 को ढाका (बांग्लादेश) में हुआ था। उनकी आरम्भिक शिक्षा ढाका और कोलकाता में हुई। महाश्वेता देवी के पिता मनीष घटक एक कवि और उपन्यासकार थे। उनकी माँ धारित्री देवी भी एक लेखिका और सामाजिक कार्यकर्ता थीं। यही कारण है कि बचपन से ही साहित्य का उन पर गहरा प्रभाव पड़ा। वे मूलतः बांग्ला भाषा की लेखिका रही हैं, बावजूद इसके उन्हें बांग्ला के अतिरिक्त अन्य भाषाओं में भी विशेष सम्मान प्राप्त हुआ।

महाश्वेता देवी ने विश्वभारती विश्वविद्यालय शान्ति निकेतन से अंग्रेजी विषय के साथ बी०ए० पास किया। फिर उन्होंने कलकत्ता विश्वविद्यालय से एम०ए० अंग्रेजी में ही किया। इसके पश्चात एक शिक्षक, पत्रकार के रूप में अपना जीवन प्रारम्भ किया। बाद में कलकत्ता विश्वविद्यालय में अंग्रेजी व्याख्याता के पद पर नियुक्त हो गयीं।

महाश्वेता देवी अपने लेखन के साथ ही स्त्री अधिकारों, दलितों और आदिवासियों के हितों के लिए संघर्ष करती रहीं। महाश्वेता देवी ने सामाजिक बदलाव के लिए हथियार के रूप में अपनी लेखनी

का प्रयोग किया। मुख्यतः बिहार. छतीसगढ़ और मध्य प्रदेश के आदिवासियों के हितों के लिए संघर्षशील रहीं।

प्रमुख रचनाएँ

महाश्वेता देवी की पहली किताब 'झाँसी की रानी' सन् 1956 ई० में आई। दूसरी पुस्तक 'नटी' सन् 1957 ई० में और फिर 'जली थी अग्निशिखा' आई। उनके प्रसिद्ध रचनाओं में जँगल के दावेदार, हजार चौरासी की माँ, चोट्टी मुंडा और उसका तीर, अग्नि गर्म, अक्लाँत कौरव, दौलति और अमृत संचय हैं। उनकी रचनाओं की कथावस्तु मुख्यतः आदिवासियों का जीवन संघर्ष और उनकी पीड़ा है। महाश्वेता देवी को उनकी साहित्यिक और सामाजिक सेवाओं के लिए अनेक पुरस्कारों से सम्मानित किया गया, जिनमें साहित्य अकादमी, ज्ञानपीठ, रेमन मैग्सेसे, पद्‌मश्री आदि प्रमुख हैं।

सुदर्शन– हार की जीत

सामान्य परिचय

सुदर्शन का वास्तविक नाम बद्रीनाथ भट्ट था। इनका जन्म सन् 1895 ई० में पंजाब स्थित सियालकोट (वर्तमान पाकिस्तान) में हुआ था। मुंशी प्रेमचन्द और उपेन्द्रनाथ अश्क की तरह सुदर्शन ने भी हिन्दी और उर्दू में अपनी लेखनी चलाई। प्रेमचन्द की ही भांति ये भी उर्दू से हिन्दी में आए थे। इनका नाम भी प्रेमचन्द संस्थान के लेखकों विश्वम्भर नाथ शर्मा 'कौशिक', राजा राधिका रमण सिंह, भगवती प्रसाद बाजपेई के साथ लिया जाता है। कक्षा छह में ही उन्होंने अपनी पहली कहानी लिखी थी। कहानी के अतिरिक्त उन्होंने उपन्यास, नाटक, जीवन, बाल साहित्य, धार्मिक साहित्य, गीत आदि भी लिखे हैं। इन्होने सामान्यतया अपनी सभी प्रमुख कहानियों में समस्याओं का आदर्शवादी समाधान प्रस्तुत किया है। इन्होने 'जाट गजट' का सम्पादन भी किया है। ये आर्य समाज से भी जुड़े थे क्योंकि आर्य समाज के केन्द्र में भी समाज सुधारवादी दृष्टिकोण ही प्रमुख था।

सुदर्शन की भाषा सरल, स्वाभाविक, प्रभावोत्पादक और मुहावरेदार है। लाहौर से प्रकाशित होने वाली उर्दू पत्रिका 'हजार दास्ताँ' में इनकी कई कहानियाँ छपीं। इनकी पहली कहानी 'हार की जीत' सरस्वती पत्रिका में 1920 में प्रकाशित हुई थी। साहित्य सृजन के साथ ही कई फिल्मों के गीत और पटकथा लेखन के साथ ही फिल्म निर्देशन का काम भी किया। सन् 1967 ई० में इनका देहावसान हो गया था।

प्रमुख रचनाएँ

पुष्पलता, सुप्रभात, परिवर्तन, पनघट,नगीना, भागवन्ती आदि।

प्रेमचन्द

सामान्य परिचय

कहानी और उपन्यास के सम्राट धनपत राय श्रीवास्तव जो प्रेमचन्द के नाम से जाने जाते हैं। इनका जन्म 31 जुलाई 1880 को वाराणसी के लमही नामक गाँव में हुआ था। माता का नाम आनन्दी देवी तथा पिता का नाम मुंशी अजाबराय था। जब ये आठ वर्ष के थे तब माताजी का स्वर्गवास हो गया। पन्द्रह वर्ष की आयु में पिताजी ने इनका विवाह करा दिया। साहित्य के धनी इस व्यक्तित्व को गरीबी, अभाव, शोषण तथा उत्पीड़न जैसी प्रतिकूल परिस्थितियों ने भी इनका साहित्य के प्रति लगाव को कम न कर सका। प्रारंभ में इनके उपन्यास उर्दू में लिखे गए जिनका बाद में हिन्दी में अनुवाद हुआ। अतः उनकी भाषा में उर्दू का प्रयोग मिलता है।

प्रेमचन्द जी ने लगभग दर्जनों उपन्यास तथा तीन सौ से अधिक कहानियाँ लिखीं हैं। समाज सुधार तथा राष्ट्रीयता उनके रचनाओं के प्रमुख विषय रहे हैं। इस महान साहित्यकार, उपन्यास सम्राट की मृत्यु लम्बी बीमारी के कारण 8 अक्टूबर सन् 1936 ई० को हुई थी।

प्रमुख रचनाएँ

दो बैलों की कथा, ईदगाह, कफन, गृह–डाह, मन्त्र, पूस की रात, आदि अनेक कहानियाँ लिखी गयी हैं।

डॉ० हरिकृष्ण देवसरे

सामान्य परिचय

डॉ० हरिकृष्ण देवसरे बच्चों की लोकप्रिय पत्रिका 'पराग' के सम्पादक रहे हैं। देवसरे जी को बाल साहित्यकार के रूप में जाना जाता है। इन्होने बाल साहित्य के क्षेत्र हर विधा में कार्य किया।

जन्म– मध्य प्रदेश के नागोद (सतना) में 9 मार्च 1940 को

प्रमुख रचनाएँ

डाकू का बेटा, आल्हा ऊदल, शोहराब रुस्तम, महात्मा गाँधी, भगत सिंह, मील के पहले पत्थर, प्रथम दीपस्तम्भ, दूसरे ग्रहों के गुप्तचर, मंगल ग्रह में राजू, उडती तस्तरियाँ, आओ चंदा के देश चलें, स्वान यात्रा, लावेनी, घना जंगल डॉट कॉम, खेल बच्चे का।

शोध '**हिन्दी बाल साहित्य एक अध्ययन**' बाल साहित्य पर आधारित यह प्रथम शोध प्रबन्ध है।

सन् 1960 ई० से सन् 1984 ई० तक आकाशवाणी में रहे। तदुपरान्त स्वैच्छिक सेवानिवृत्ति ग्रहण करके सन् 1984 ई० से सन् 1991 तक पराग मासिक पत्रिका के सम्पादक के रूप में कार्य किया।

मृत्यु– 14 नवम्बर 2013 को हुई।

क्वेंटीन रेनाल्ड

सामान्य परिचय

रेनाल्ड्स का जन्म 11 अप्रैल 1902 को द ब्रोक्स में न्यूयार्क नगर (संयुक्त राज्य अमेरिका) में हुआ था। इनकी पढ़ाई ब्रुकलिन और ब्राउन यूनिवर्सिटी से हुई। यह एक लेखक और पत्रकार के रूप में ख्याति प्राप्त थे।

प्रमुख रचनाएँ

द वाउन्डेड डोंट क्राई, लंदन डायरी, ड्रेस रिहर्सल और कोर्टरूम, वकील सैमुअल, लीबोविट्ज की जीवनी शामिल है।

मृत्यु– 17 मार्च 1965 को कैलीफोर्निया के फेयरफील्ड में ट्रेविस एयर फोर्स बेस अस्पताल में रेनाल्ड्स की कैंसर से मृत्यु हो गयी।

रमेश उपाध्याय

सामान्य परिचय

सातवें दशक के कहानीकार रमेश उपाध्याय का जन्म 1 मार्च 1942 को पश्चिमी उत्तर प्रदेश के एटा जिले के बदारी बैस नामक गाँव में हुआ था। उन्होंने राजस्थान विश्वविद्यालय से एम०ए० किया तत्पश्चात् उनके साहित्यिक जीवन का आरंभ 60 के दशक में अजमेर से प्रकाशित पत्रिका '**लहर**' से हुआ। इस पत्रिका के लिए वे कंपोजिटर का काम करते थे। बाद में ये दिल्ली आ गये और दिल्ली विश्वविद्यालय से पी०एच०डी० और दिल्ली में ही अध्यापन कार्य किया। कोरोना से संक्रमित होने के कारण 24 मार्च 2021 को उनका निधन हो गया।

प्रमुख रचनाएँ

रमेश जी लघु पत्रिका आंदोलन से भी गहरे रूप से जुड़े थे। स्वयं उनके द्वारा प्रकाशित त्रैमासिक पत्रिका 'कथन' कई दशकों तक हिन्दी की प्रतिष्ठित पत्रिका के रूप में लोकप्रिय रही। रमेश उपाध्याय जी के 15 से अधिक कहानी पांच उपन्यास, तीन नाटक, अनेक नुक्कड़ नाटक, आलोचना की अनेक पुस्तकें और अंग्रेजी व गुजराती में कई पुस्तकों के अनुवाद भी प्रकाशित हुए हैं। कुछ प्रसिद्ध रचनाएँ निम्न हैं–

- **कहानी संग्रह–** शाप मुक्ति, एक घर की डायरी, पुराणी जूतों की जोड़ी, कहीं जमीन नहीं।
- **उपन्यास–** चक्रव्यूह, दंडद्वीप, स्वप्नजीवी, हरे फूल की खुशबू।
- **नाटक–** सफाई चालू है, पेपर वेट, बच्चों की अदालत, भारत भाग्य विधाता।
- **नुक्कड़ नाटक–** गिरगिट, हरिजन दहन, राजा की रसोई, समर यात्रा, तमाशा।
- **साक्षात्कार–** बेहतर दुनियां की तलाश में।
- **निबन्ध–** साहित्य और भूमंडलीय यथार्थ
- **आत्मकथा–** मेरा मुझमें कुछ नहीं, जनता का नया साहित्य, कला की जरूरत, सुभाष चन्द्र बोसः एक जीवनी।

आशापूर्णा देवी

सामान्य परिचय

आशापूर्णा देवी का जन्म 8 जनवरी सन् 1909 ई० उत्तरी कलकत्ता में एक वैद्य परिवार में हुआ। उनका बचपन एक पारंपरिक और रुढ़िवादी परिवार में बीता। जिसके कारण उन्हें स्कूल कालेज जाने का सुअवसर प्राप्त नहीं हुआ लेकिन पढ़ने और विचार व्यक्त करने की भरपूर सुविधाएँ उन्हें मिलती रहीं। उनके पिता कुशल चित्रकार थे तथा माता बंग्ला साहित्य की अनन्य प्रेमी थीं। आशापूर्णा को उस समय के जाने–माने साहित्यकारों और कला शिल्पियों से निकट परिचय का अवसर मिला। पिता और पति दोनों के ही घर में पर्दा आदि के बंधन थे, पर घर के झरोखों से मिली झलकियों से ही वे संसार में घटित होने वाली घटनाओं की कल्पना कर लेती थीं।

प्रमुख रचनाएँ

आशापूर्णा बचपन से ही अपनी बहनों के साथ कविताएँ लिखती थीं। आशापूर्णा देवी ने हर उम्र के पाठकों को ध्यान में रखते हुए कहानियाँ लिखीं। सन् 1976 में '**प्रथम प्रतिश्रुति**' के लिए भारतीय ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसके बाद साल 1994 में उन्हें साहित्य जगत के सबसे बड़े

पुरस्कार **'साहित्य अकादमी पुरस्कार'** दिया गया। साहित्य को अपना जीवन समर्पित करने वाली प्रथम महिला ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित आशापूर्णा देवी अन्ततः 13 जुलाई 1995 को दुनियां से चल बसीं।

रचनाएँ– मैं लिखती आँखिन की देखी, पद्मलता का स्वप्न, हथियारा, ढांचा, पैदल सैनिक, बेआसरा, प्रथम प्रतिश्रुति (ज्ञानपीठ पुरस्कार), अनोखा प्रेम आदि।

सियारामशरण गुप्त

सामान्य परिचय

सियाराम शरण गुप्त का जन्म सेठ रामचरन कनकने के परिवार में 4 सितम्बर 1895 को चिरगाँव झाँसी में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने घर में ही गुजराती अंग्रेजी और उर्दू भाषा सीखी। श्री सियारामशरण गुप्त राष्ट्रकवि श्री मैथिलीशरण गुप्त के छोटे भाई थे। चिरगाँव में बाल्यावस्था बीतने के कारण बुन्देलखण्ड की वीरता और प्रकृति सुषमा के प्रति प्रेम स्वभावगत था। गुप्त जी स्वयं एक शिक्षित कवि थे। प्रारम्भिक शिक्षा पूरी करने के बाद उन्होंने गुजराती, अंग्रेजी और उर्दू भाषा सीखी। उनकी पत्नी तथा पुत्रों का निधन असमय ही हो गया था, अतः वे दुःख, वेदना और करुणा के कवि बन गये। 1914 में उन्होंने अपनी पहली रचना 'मौर्य विजय' लिखी। सन् 1990 में इनकी प्रथम कविता इन्दु प्रकाशित हुई। इनकी कहानी संग्रह–'मानुषी' है।

प्रमुख रचनाएँ

- **नाटक–** पुण्य पर्व
- **अनुवाद–** गीता संवाद
- **कविता संग्रह–** अनुरूपा तथा अमृत पुत्र
- **उपन्यास –** अन्तिम आकांक्षा तथा नारी और गोद
- **निबंध संग्रह –** क्षूठा सच।

गौरा पन्त शिवानी

सामान्य परिचय

गौरा पन्त "शिवानी" हिन्दी की लोकप्रिय लेखिका हैं। इनका नाम गौरा पन्त था, लेकिन ये शिवानी के नाम से लेखन करती थी।

जन्म– शिवानी जी का जन्म 17 अक्टूबर 1923 ई० को राजकोट गुजरात मे हुआ था।

शिक्षा– इनकी प्रारंभिक शिक्षा शांति निकेतन मे हुयी, कोलकाता विश्वविद्यालय से इन्होंने सम्मान सहित बी०ए० आनर्स उत्तीर्ण किया ।

साहित्य के क्षेत्र में योगदान– शिवानी जी अपनी रचनाओं में पात्रों का चरित्र–चित्रण इतना सूक्ष्म तरीके से करती थी कि पात्र जीवंत हो उठते थे। इन्होंने अपनी कहानियों एवं उपन्यास में अधिकांशतः नारी विषयक कथानक की प्रधानता रहती थी।

प्रमुख रचनाएँ

- **कहानियाँ –** शिवानी जी की प्रसिद्ध कहानियाँ, झरोखा, मृणमाला की हँसी, अपराधिनी पुष्पहार विषकन्या, लाल हवेली, रथ्या, स्वयं सिद्ध, रतिविलाप

- **उपन्यास**–कृष्णकली, कालिंदी, अतिथि, पूतों वाली, चल खुसरों घर आपने, श्मशान–चंपा, मायापुरी, कैजा, गेंदा, भैरवी, स्वयंसिद्धा, विषकन्या, रति विलाप, आकाश। सन् 1981 ई० में हिन्दी साहित्य में उनके योगदान के लिए पद्म श्री से सम्मानित किया गया।

मृत्यु –शिवानी की मृत्यु 21 मार्च सन् 2003 ई० को दिल्ली में 79 वर्ष की आयु में हुयी।

चित्रामुद्गल

सामान्य परिचय

आधुनिक हिन्दी कथा साहित्य की प्रास सुप्रसिद्ध लेखिका चित्रामुद्गल का जन्म 10 दिसम्बर सन् 1944 ई० को चेन्नई (तमिलनाडु) में हुआ था। प्रारम्भिक शिक्षा उत्तर प्रदेश के उन्नाव जिले में स्थित निहाली खेड़ा में और उच्च शिक्षा मुम्बई विश्वविद्यालय में हुई। इनकी अब तक तेरह कहानी संग्रह, तीन उपन्यास, तीन बाल कथा संग्रह, पाँच संपादित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी है। बहुचर्चित उपन्यास ''आँवा'' के लिए इन्हें ''व्यास सम्मान'' से सम्मानित किया जा चुका है।

प्रमुख रचनाएँ

- **उपन्यास**– एक जमीन अपनी, आँवा, गिलिगडु, पोस्ट बॉक्स नं. 2030 नाला सोपारा।
- **कहानी संग्रह**– भूख, जहर ठहरा हुआ, लाक्षागृह, अपनी वापसी, इस हमाम में, ग्यारह लंबी कहानियाँ, जिनावर, लपटें, जगदंबा बाबू गाँव आ रहे आदि।

जातक कथा– कक्षा 7 राजधर्म

जातक कथा माना जाता है कि विश्व की प्राचीनतम कहानियों का संग्रह है। इन कथाओं में बुद्ध के जीवन चरित्र से संबंधित घटनाओं का उल्लेख कहानी के माध्यम से नीति और धर्म को समझाने और सन्देश देने का प्रयास किया गया है।

विषयवस्तु की दृष्टि से इन्हें पाँच वर्गों में विभाजित किया गया है–

1. **पच्चुपन्नवत्थु**– बुद्ध की वर्तमान कथाओं का संग्रह।
2. **अतीतवत्थु**– इसमें अतीत की कथाएँ संग्रहित हैं।
3. **गाथा**– इसमें बुद्ध द्वारा किए कार्यों का वर्णन है।
4. **वैय्याकरण**– गाथाएँ व्याव्यायित की गयी हैं।
5. **समोधन**– इसमें अतीतवत्थु के पत्रों का बुद्ध के जीवनकाल के पात्रों का संबंध बताया गया है।

4.8 एकांकी

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु एकांकी की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु एकांकी के स्वरूप जानते हैं।
3. प्रशिक्षु एकांकी के तत्त्वों से अवगत हैं।
4. प्रशिक्षु एकांकी शिक्षण की विधियों को समझ लेते हैं।
5. प्रशिक्षु बच्चों में एकांकी के प्रति रुचि विकसित कर लेते हैं।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के समक्ष विषयवस्तु लिखा हुआ चार्ट प्रस्तुत करेंगे और उन्हें बारी–बारी से अभिनय के साथ विषयवस्तु का पठन करने के लिए कहेंगे।

गतिविधि का नाम : अभिनय के साथ पठन

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : विषयवस्तु लिखा हुआ चार्ट

उद्देश्य : विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

माँ– क्या बज गया मधुर? अरे! चार बजने वाले हैं और उन दोनों में से कोई भी नहीं आया!

मधुर– यही तो मैं भी देख रही हूँ। बड़े भैया तो बारह बजे तक आ जाते थे और दो बजे तक कुलदीप भी आ जाता था। आज दोनों न जाने कहाँ चले गये?

इसके बाद प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से कुछ प्रश्न करेंगे; जैसे–

प्रश्न– उपरोक्त गद्यांश किस विधा के अन्तर्गत आएगा?

उत्तर– ...।

उचित उत्तर न मिलने के कारण प्रशिक्षक उपरोक्त विषयवस्तु की विधा को स्पष्ट करते हुए विषय प्रवेश करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

एक अंक वाले नाटक को एकांकी कहा जाता है। अंग्रजी में 'वन एक्ट प्ले' शब्द के लिए हिन्दी में एकांकी नाम आया। एकांकी एक स्वतंत्र विधा है। डॉ० रामकुमार वर्मा ने एकांकी को परिभाषित करते हुये लिखा है– "एकांकी नाटक में अन्य प्रकार के नाटकों की अपेक्षा, विशेषता होती है। उसमें एक ही घटना होती है और वह घटना नाटकीय कौशल से ही कौतूहल का संचय करते हुए चरम सीमा तक पहुँचती है। उसमें कोई अप्रधान प्रसंग नहीं रहता। एक–एक वाक्य और एक –एक शब्द प्राण की तरह आवश्यक रहता है ।"

इस प्रकार एकांकी वस्तुतः नाटक का लघुरूप है, जिसमें मानव जीवन के किसी एक पक्ष, एक चरित्र, एक कार्य, एक भाव की कलात्मक अभिव्यंजना होती है।

एकांकी शिक्षण के माध्यम से प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर के बच्चों में भावों की रसात्मक सौन्दर्यानुभूति सहजता से संप्रेषित की जा सकती है। प्राथमिक एवं उच्च प्राथमिक स्तर पर एकांकी शिक्षण के निम्नलिखित उद्देश्य निर्धारित किए जा सकते हैं–

1. बच्चे अपने व्यक्तित्व का प्रकाशन कर सकेंगे।
2. बच्चे अंग संचालन, हाव–भाव एवं विभिन्न मुद्राओं के माध्यम से भावाभिव्यक्ति कर सकेंगे।
3. बच्चों में उच्च कोटि का संवाद कौशल विकसित हो सकेगा।
4. भावों की रसानुभूति करने में सक्षम हो सकेंगे।

एकांकी शिक्षण की विधियाँ

एकांकी शिक्षण की प्रमुख तीन शिक्षण विधियाँ हैं–

1. आदर्श अभिनय विधि– शिक्षण द्वारा एकांकी के सभी पात्रों के संवाद, सामान्य अभिनय एवं मुख भंगिमा एवं वाचिक उतार–चढ़ाव की सामान्य भावाभिव्यक्ति के साथ वाचन किया जाता है। यथास्थान शिक्षक अपेक्षित अंशों की व्याख्या भी करता है। बच्चो शिक्षक के संवादात्मक अभिनय का अनुकरण करते हैं।

2. कक्षा अभिनय विधि– इस शिक्षण विधि में एकांकी के विविध पात्रों का संवादात्मक अभिनय बच्चों द्वारा किया जाता है। शिक्षक आवश्यक अंशों की व्याख्या, एकांकी में निहित जीवन मूल्यों, चरित्र–चित्रण एवं भाषा–शैली के विश्लेषण के माध्यम से करता है। इस दौरान आवश्यकतानुसार बच्चों का भी सहयोग लिया जाता है।

3. मंच अभिनय विधि– इस विधि में बच्चे पात्रानुकूल वेश धारणकर सज्जित मंच पर अभिनय प्रस्तुत करते हैं। यह विधि श्रमसाध्य एवं खर्चीली है किंतु इस विधि के माध्यम से बच्चों में नेतृत्व कौशल, समूह भावना और उच्च कोटि की अभिनय क्षमता विकसित की जा सकती है।

एकांकी के तत्त्व

- कथानक
- पात्र/चरित्र–चित्रण
- संवाद/कथोपकथन
- अभिनेयता/रंगमंचनीयता
- देशकाल/वातावरण
- उद्देश्य

4.9 हिन्दी एकांकी का विकास

हिन्दी एकांकी का विकास आधुनिक काल के छायावादोत्तर युग में हुआ। हिन्दी एकांकी को एक साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने में डॉ० रामकुमार वर्मा का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है।

4.10 हिन्दी की प्रमुख एकांकी

रचनाकार	एकांकी
डॉ० राम कुमार वर्मा	1. पृथ्वीराज की आखे 2. रेशमी टाई 3. बादल की मृत्यु
जयशंकर प्रसाद	एक घूँट
उदय शंकर भट्ट	1. समस्या का अंत 2. अंधकार और प्रकाश
उपेन्द्रनाथ अश्क	1. लक्ष्मी का स्वागत 2. छठाँ बेटा
लक्ष्मी नारायण मिश्र	अशोक वन
जगदीश चन्द्र माथुर	भोर का तारा
मोहन राकेश	1. अंडे का छिलका 2. सिपाही की माँ

कक्षा 6, 7, 8 के पुस्तकों में संकलित एकांकी

रचनाकार	एकांकी
विष्णु प्रभाकर	बहादुर बेटा
अन्तोन चेखोव	जूलिया
रामनरेश त्रिपाठी	कर्तव्यपालन

4.11 प्रमुख एकांकी रचनाकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ

विष्णु प्रभाकर

जीवन परिचय

विष्णु प्रभाकर का जन्म 21 जून सन् 1912 ई० को उत्तर प्रदेश के मुजफ्फरनगर जिले के मीरापुर गाँव में हुआ था। उनके पिता दुर्गा प्रसाद धार्मिक विचारों वाले व्यक्ति थे और उनकी माता का नाम महादेवी पढ़ी–लिखी महिला थीं जिन्होंने अपने समय में पर्दा प्रथा का विरोध किया था। उनकी पत्नी का नाम सुशीला था। उन्होंने पंजाब विश्वविद्यालय से बी०ए० और फिर हिन्दी प्रभाकर परीक्षा उत्तीर्ण की। यहीं से इनके नाम के साथ प्रभाकर जुड़ गया।

प्रमुख रचनाएँ

विष्णु जी ने उपन्यास, कहानी, नाटक, एकांकी विधाओं में अनेक रचनाएँ की हैं, जो इस प्रकार है–

उपन्यास– ढलती रात, स्वप्नमयी, अद्‌र्धनारीश्वर, धरती अब भी घूम रही है।

नाटक– हत्या के बाद, डॉक्टर, प्रकाश और परछाईयाँ।

आत्मकथा– 'पंखहीन' तीन भगों में प्रकाशित।

जीवनी– आवारा मसीहा।

एकांकी– बहादुर बेटा।

अन्तोन चेखोव

जीवन परिचय

अन्तोन चेखोव का जन्म रूस के तगानरोग में 18 जनवरी 1860 ई० में एक दुकानदार के परिवार में हुआ था। चेखव के पिता एक संघर्षशील किराना व्यापारी और धर्मपरायण मार्टिनेट थे, जो एक दास के रूप में पैदा हुये थे। उन्होंने अपने बेटे को अपनी दुकान में सेवा करने के लिए मजबूर किया, साथ ही उसे एक चर्च गायक मंडली में भी नियुक्त किया, जिसका संचालन वह स्वयं करते थे । अपने जीवन के अनेक कठिनाइयों को दरकिनार करते हुए उन्होंने 1884 ई० में डॉक्टर के रूप मे स्नातक की उपाधि प्राप्त की।

चेखव ने अपने लेखन करियर की शुरूआत हास्य पत्रिकाओं के लिए उपाख्यानों के लेखक के रूप में किया। ये एक नाटककार के रूप में प्रसिद्ध हैं। इनके द्‌वारा लिखित नाटकों की विषय–वस्तु में संसार में अपमान, अन्याय और उत्पीड़न के प्रति संघर्ष और विरोध करने की चेतना समाहित है।

प्रमुख रचनाएँ

अन्तोन चेखोब ने अनेक रचनाएँ की हैं, जो इस प्रकार है– 'एक नीरस कहानी, इवानोव, किसान, मालू 'द ब्लैक मानक, द चेरी आर्चर्ड, तीन बहनें।

रामनरेश त्रिपाठी

जीवन परिचय

राम नरेश त्रिपाठी का जन्म सन् 1889 ई० में जिला जौनपुर (उ०प्र०) के अन्तर्गत कोइरीपुर ग्राम में एक कृषक परिवार में हुआ था।

त्रिपाठी जी मननशील, विद्‌वान तथा परिश्रमी थे। ये द्विवेदी युग के उन साहित्यकारों में हैं; जिन्होंने द्विवेदी मण्डल प्रभाव से पृथक रहकर अपनी मौलिक प्रतिभा से साहित्य के क्षेत्र में महत्त्वपूर्ण कार्य किया, साहित्य की अनेक विधाओं में रचनाएँ की। त्रिपाठी जी स्वच्छन्दतावादी कवि थे; काव्य, कहानी, नाटक, आलोचना, तथा लोक–साहित्य, आदि विषयों पर इनका पूर्ण अधिकार था। त्रिपाठी जी लोक गीत, नाटक, निबन्ध के सर्वप्रथम संकलनकर्त्ता थे। 16 जनवरी सन् 1962 ई० में इनका देहावसान हो गया।

प्रमुख रचनाएँ

पथिक, मिलन, मानसी और स्वप्न (खण्ड काव्य), मानली (स्फुट कविता संग्रह), 'कविता–'कौमुदी', 'ग्राम्य –गीत : (सम्पादित)

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक कुछ रचनाकारों के नाम लिखी हुई पर्चियाँ और उनकी रचना का नाम लिखी हुई पर्चियाँ एक डिब्बे में रख देंगे। अब प्रशिक्षुओं को बारी–बारी से बुलाकर एकांकी विधा से संबंधित रचनाकारों एवं उनकी रचनाओं को अलग करने के लिए कहेंगे।

गतिविधि का नाम : पर्ची निकालो, विधा पहचानो

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : रचनाकारों के नाम लिखी हुई पर्चियाँ और उनकी रचना का नाम लिखी हुई पर्चियाँ।

उद्देश्य : विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

बोध परीक्षण

1. एकांकी किसे कहते हैं और एकांकी के प्रमुख तत्व कौन–कौन से हैं?
2. एकांकी शिक्षण की प्रमुख विधियाँ कौन–कौन सी हैं?
3. हिन्दी एकांकी को साहित्यिक विधा के रूप में स्थापित करने में किसका महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है?
4. एकांकी 'बहादुर बेटा' के रचनाकार का क्या नाम है?
5. डॉ० राम कुमार वर्मा द्वारा रचित प्रमुख एकांकियाँ कौन–कौन सी हैं?

समेकन

इस प्रकार हमने इस प्रशिक्षण सत्र में हिन्दी गद्य लेखन में एकांकी विधा के विषय अध्ययन किया। एकांकी लेखन के प्रमुख तत्व, उसकी प्रमुख शिक्षण विधियों एवं प्रमुख रचनाकार एवं उनकी रचनाओं के बारे में जाना।

4.12 यात्रा–वृत्तांत

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु यात्रा–वृत्तांत की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु यात्रा–वृत्तांत लेखन के तत्त्वों से अवगत हैं।
3. प्रशिक्षु यात्रा–वृत्तांत शिक्षण को सरल एवं रुचिकर बना लेते हैं।
4. प्रशिक्षु बच्चों में यात्रा–वृत्तांत के प्रति रुचि विकसित कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु बच्चों को यात्रा–वृत्तांत लेखन में सक्षम बना लेते हैं।

यात्रावृत्तांत, 'यात्रावृत्त' या 'यात्रा–संस्मरण' हिन्दी गद्य की एक रोचक विधा है। मनुष्य अनादि काल से यात्राएँ करता आ रहा है। 'ऐतरेय ब्राह्मण' का सूत्रवाक्य ''चरैवेति–चरैवेति'' मनुष्य की यायावरी वृत्ति का ही सूचक है। आज तो मनुष्य चन्द्रमा पर जा चुका है, नक्षत्रों से होड़ ले रहा है। यात्राएँ आसान हो गई हैं। किन्तु जब यह सुविधा नहीं थीं तब भी मनुष्य उतना ही यात्राप्रिय था ।

यात्रा के दौरान विभिन्न प्रकार के चरित्रों से मुलाकात उनके स्वभाव, प्रवृत्तियों की चर्चा–परिचर्चा, उनके सामाजिक आचार–व्यवहार, रहन–सहन, तीज–त्योहारों की जानकारी, प्रांत विशेष की भौगोलिक स्थिति, प्रकृति–सौन्दर्य मनोरंजन के साधन और जीवन दृष्टि, सकारात्मक दृष्टिकोण स्थानीय और आंचलिक समस्याओं आदि का विवरण यात्रा वृत्तांतों के मूल में होता है।

राहुल सांकृत्यायन ने घुमक्कड़ी को धर्म का दर्जा दिया है। वे लिखते है– "मेरी समझ में दुनिया की सर्वश्रेष्ठ वस्तु है घुमक्कड़ी। घुमक्कड़ से बढ़कर व्यक्ति और समाज के लिए कोई हितकारी नहीं हो सकता। मनुष्य स्थावर वृक्ष नहीं है, वह जंगम प्राणी है। चलना मनुष्य का धर्म है जिसने इसे छोड़ा, वह मनुष्य होने का अधिकारी नहीं है।"

यात्रा–वृत्तांत

एक स्थान से दूसरे स्थान पर जाने की क्रिया यात्रा कहलाती है, और जब कोई व्यक्ति इस यात्रा का वर्णन करता है तो उसे यातावृत्तांत कहते हैं। इसका प्रयोग पाठक मनोरंजन के लिए, यात्रा लिए जानकारी प्राप्त करने के लिए करते हैं।

हिन्दी साहित्य में **यात्रावृत्तांत** का प्रारम्भ भारतेन्दु युग से माना जा सकता है। भारतेन्दुजी ने सरयूपार की यात्रा, लखनऊ की यात्रा, मेंहदावल की यात्रा आदि यात्रावृत्तांत लिखे।

यात्रावृत्तांत की विशेषताएँ

यात्रावृत्तांत की बधी बधाई कोई विशेषता नहीं कहीं जा सकती फिर भी स्थूल तौर पर यात्रावृत्तांत की निम्नलिखित विशेषताएँ होती हैं–

- यात्रावृत्तांत में स्थानीयता होती है।
- इसमें तथ्यात्मकता होती है।
- वैयक्तिकता होती है।
- रोचकता होती है।
- आत्मीयता होती है।

यात्रा–वृत्तांत का महत्त्व

- भाषा शिक्षण में रुचि उत्पन्न होती है।
- बच्चों के भीतर जिज्ञासा एवं कल्पनाशक्ति का विकास होता है
- यात्रा–वृत्तांत में वर्णित स्थानों की सामाजिक, सांस्कृतिक व भौगोलिक विशेषताओं का ज्ञान मिलता है।
- अन्य विषयों जैसे इतिहास, भूगोल, दर्शन आदि के बारे में भी जानकारी मिलती है।
- यात्रा–वृत्तांत के लेखक के व्यक्तित्व के बारे में पता चलता है।
- प्रामाणिक तथ्यों की जानकारी मिलती है।
- बच्चों में स्वनाटक लेखन कौशल का विकास होता है।

बेसिक शिक्षा विभाग की पाठ्य पुस्तक में प्रमुख यात्रावृत

कक्षा–3	पाठ–9	वाराणसी की यात्रा
कक्षा–5	पाठ–19	किन्नौर देश में
कक्षा–8	पाठ–24	अमरकंटक से डिंडोरी

4.13 प्रमुख यात्रा–वृत्तांत एवं उसके लेखक

यात्रावृत्तांत	लेखक
वोल्गा से गंगा, घुमक्कड़शास्त्र मेरी तिब्बत यात्रा, किन्नरदेश में मेरी लद्दाख यात्रा, रूस में पच्चीस मास मेरी यूरोप यात्रा	राहुल सांकृत्यायन
रूस की सैर	जवाहरलाल नेहरू
पृथ्वी परिक्रमा	सेठ गोविन्द दास
पृथ्वी – प्रदिक्षिणा	शिवप्रसाद गुप्त
पैरों में पंख बाँधकर, उड़ते चलो उड़ते चलों	रामवृक्ष बेनीपुरी
लोहे की दीवार के दोनों ओर	यशपाल
अरे! यायावर रहेगा याद, एक बूँद सहसा उछली	स०ही०वा० 'अज्ञेय'
कलकत्ता से पीकिंग, सागर की लहरों पर	भगवत शरण उपाध्याय
सुबह के रंग	अमृत राय
देश–विदेश यात्रा–मेरी यात्राएँ	दिनकर
गोरी नजरों में में हम	प्रभाकर माचवे
चांदनी	निर्मल वर्मा
रूसी सफरनामा	बलराज साहनी
अप्रवासी की यात्राएँ	डॉ. नगेन्द्र
दरख्तों के पार शाम	गोविन्द मिश्र
हम सफर मिलते रहे	विष्णु प्रभाकर
हवा में तैरते हुए	राजेन्द्र अवस्थी
यात्रा चक्र	धर्मवीर भारती
आँधी रात का सफर	वल्लभ डोभाल
जापान में कुछ दिन	कृष्णदत्त पालीवाल
जहाँ फब्बारे लहू रोते हैं –	नासिरा शर्मा

बोध परीक्षण

1. यात्रा वृत्तान्त से आप क्या समझते है?
2. आधुनिक काल में यात्रा वृतान्त का प्रारम्भ कहाँ से माना जाता है?
3. यात्रावृत के प्रमुख लेखकों के नाम बताइए।
4. यात्रा वृतान्त का क्या महत्व होता है?
5. यात्रा वृतान्त निबन्ध से किस प्रकार भिन्न है?

स्व आकलन

1. यात्रा वृतान्त विधा की रचना है –
   (क) कर्तव्य पालन (ख) घुमक्कड़ शास्त्र
   (ग) चीड़ो पर चाँदनी (घ) इनमें से सभी।
2. वोल्गा से गंगा के लेखक हैं–
   (क) भारतेन्दु हरिश्चन्द (ख) यशपाल
   (ग) राहुल सांकृत्यायन (घ) जैनेन्द्र
3. यात्रा चक्र का प्रकाशनवर्ष है
   (क) 1990 ई० (ख) 1992 ई०
   (ग) 1994 ई० (घ) 1995 ई०
4. यात्रावृतान्त विधा की रचना नही है?
   (क) पैरो में पंख बाँधकर (ख) मेरी लखनऊ यात्रा
   (ग) शेषयात्रा (घ) एक बूंद सहसा उछली।
5. 'तन्त्र लोक से यत्र लोक तक' किस विधा की रचना है ?
   (क) जीवनी (ख) यात्रा वृतान्त
   (ग) आत्मकथा (घ) कहानी

विचार विश्लेषण

1. राहुल सांकृत्यायन के चार प्रमुख यात्रा वृतान्त बताइए।
2. यात्रा वृतांत की संक्षिप्त परिभाषा दीजिए। उदाहरण भी लिखें।
3. यात्रा वृतान्त की विशेषताएँ बताइए।
4. 'रूस में पच्चीस मास' किसकी रचना है?
5. भारतेन्दु हरिश्चन्द के दो यात्रा वृतान्त लिखिए।
6. सरयू पार की यात्रा का प्रकाशन वर्ष बताइए।
7. पैरो में पंख बाँधकर किसकी रचना है ?
8. 'सैर कर दुनिया का गाफिल जिन्दगानी फिर कहाँ' उक्ति किसकी है?

4.14 जीवनी

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु जीवनी की अवधारणा को बेहतर ढंग से समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु जीवनी तथा आत्मकथा के अन्तर को सूचीबद्ध कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु महापुरुषों, विद्वतजनो, व्यक्ति विशेष के जीवन के बारे में अपने विचार व्यक्त कर लेते हैं।

सफल जीवन के लिए मनुष्य किसी के जीवन से प्रेरणा लेता है और अपने जीवन को उन्नतशील बनाने का प्रयत्न करता है। प्रायः महापुरुषों, विद्वतजनों, राजनीतिज्ञों, क्रान्तिकारियों, स्वतन्त्रता सेनानियों एवं वैज्ञानिकों के व्यक्तित्व से हम प्रभावित होते हैं और उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास भी करते हैं। उस व्यक्ति विशेष के जीवन से जुड़े वह तथ्य, जो सामान्य जन को प्रभावित कर सकते हैं, वह प्रमाणिक एवं वास्तविक होने पर सहज ही होते हैं। जब लेखक उसका वर्णन लेखन में करता है तो ऐसा लेखन जीवनी विधा में आता है।

किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन के हर पहलू का वर्णन जीवनी विधा में किया जाता है, जिसे पढ़कर पाठक उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर करते हैं।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : जीवनी का परिचय
समय : 10 मिनट
सहायक सामग्री : कक्षा–7(दीक्षा) पाठ–भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय
उद्देश्य : विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को महामना मदन मोहन मालवीय के जीवन के बारे बताएँगे।

❖ *"महामना मदन मोहन मालवीय एक राजनीतिक से अधिक शिक्षाशास्त्री थे। वे शिक्षा को पुरातन एवं नवीनतम मूल्यों के बीच एक सेतु के रूप में देखते थे। इन्ही धारणाओं को ध्यान में रखकर मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की।"*

- मालवीय जी से सम्बन्धित उक्त बातों को बताने के बाद प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से प्रश्न करेंगे–
  - ➢ उपर्युक्त गद्यांश में किस महान विभूति के जीवन के बारे में बताया गया है।
  - ➢ उक्त गद्यांश में लेखक ने अपने बारे में लिखा या किसी अन्य के बारे में लिखा है?
  - ➢ गद्य की विधाओं के अन्तर्गत हम इसे किस विधा के अन्तर्गत रखेंगे?
- संभावित उत्तर मिलने के बाद प्रशिक्षक प्रकरण को स्पष्ट करते हुए विषय प्रवेश करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

किसी व्यक्ति विशेष के जीवन से सम्बद्ध वृतान्त को 'जीवनी' कहते हैं। यह साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, जिसमें किसी महापुरुष या विख्यात व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, उसके कार्य–कलापों तथा अन्य गुणों का औपचारिकता, आत्मीयतापूर्ण, व्यवस्थित रूप में वर्णन किया जाता है। इसमें व्यक्ति–विशेष के जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं का वर्णन हो या बड़ी–बड़ी बातों का वर्णन, इस प्रकार किया जाता है कि पाठक उनके जीवन से परिचित ही नहीं होता वरन् उससे एक अपनापन अनुभव करने लगता है। जीवनी लेखक जीवनी में उन घटनाओं पर विशेष बल देता है; जिसे पढ़कर पाठक प्रेरणा ग्रहण कर, अपने जीवन को उन्नतशील बनाते हैं। शिप्ले के अनुसार "जीवनी को नायक के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके यथेष्ट भाग की चर्चा करनी चाहिए और अपने आदर्श रूप में एक विशिष्ट इतिहास होना चाहिए।" हम कह सकते है कि जीवनी में व्यक्ति विशेष अन्तर–बाह्य दोनों ही जीवनों का लेखा–जोखा होता है।

हिन्दी में इसे 'जीवन चरित' या 'जीवन चरित्र' भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे 'बॉयोग्राफी' कहते हैं। जीवनी प्रायः महापुरुषों, क्रान्तिकारियों, स्वतन्त्रता सेनानियों एवं राजनीतिज्ञों के जीवन पर लिखी गई हैं।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने विषय की दृष्टि से जीवनी–साहित्य की निम्नलिखित कोटियाँ निर्धारित की हैं– आत्मचरित्र, संत चरित्र, ऐतिहासिक चरित्र, राजनीतिक चरित्र, विदेशी चरित्र एवं स्फुट चरित्र। जीवनी आत्मीय, विद्वत्तापूर्ण, मनोवैज्ञानिक, लोकप्रिय, ऐतिहासिक, व्याख्यात्मक, व्यंग्यात्मक एवं कलात्मक होती है। जीवनी में चरित–नायक के जीवन को क्रमशः अन्वेषित और उद्घाटित करना चाहिए। चरित्र का विकास स्वाभाविक होना चाहिए।

जीवनी लेखन के लिए कैसले ने कुछ स्रोत बताए हैं–

- उसी विषय अथवा सम्बद्ध विषयों पर पहले लिखी गई पुस्तकें
- मूल सामग्री यथा– पत्र, डायरी या प्रमाणिक गवेषणा–सामग्री
- समकालीनों के संस्मरण
- यदि वर्ण्य समय बहुत पहले का नहीं है तो जीवित व्यक्तियों की स्मृतियाँ
- जीवनी लेखक यदि अपने चरित नायक के सम्पर्क में रहा है, तो स्वयं अनुभूत संस्मरण।
- उन स्थलों का भ्रमण तथा पर्यवेक्षण जहाँ चरित नायक रहा था।

इन बिन्दुओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि जीवनी जहाँ एक ओर इतिहास जैसी प्रमाणिकता तथा तथ्यपूर्ण होती है, वही दूसरी ओर वह साहित्यिकता के तत्वों से भरी होती हैं।

हिन्दी साहित्य में जीवनियों का लिखा जाना लगभग 1882 ई० से प्रारम्भ होता है। 1893 ई० में कार्तिक प्रसाद खत्री ने मीराबाई का जीवन चरित्र लिखा। बालमुकुन्द गुप्त ने प्रताप नारायण मिश्र का जीवन चरित्र लिखा। हिन्दी में प्रेमचन्द की एक जीवनी उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने 'प्रेमचन्द घर में' नाम से लिखी है। दूसरी ओर उनके पुत्र अमृतराय ने 'कलम का सिपाही' नाम से लिखी। जहाँ शिवरानी देवी ने अपनी जीवनी में प्रेमचन्द को परिवार के संदर्भ में देखा है वहीं दूसरी ओर अमृतराय ने प्रेमचन्द को युग–सन्दर्भ में देखा है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाकृष्ण दास, मुंशी देवी प्रसाद आदि ने जीवन चरित्र लेखन में रुचि ली और इसके लिए कार्य किया। आज के जीवनी साहित्य में रामविलास शर्मा की 'निराला की साहित्य साधना' भाग–1, शान्ति जोशी की 'सुमित्रानन्दन पन्त–जीवन और साहित्य', विष्णुप्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' (शरतचन्द्र की जीवनी) आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

गतिविधि

- इस पाठ में युग मनीषी भारतरत्न प्राप्त महामना मदन मोहन मालवीय जी के जीवनवृत्त के बारे में सुगठित एवं रोचक तरीके से बताया गया है। जिसे पढ़कर हम उनके जीवन से सम्बन्धित अन्तर–बाह्य तथ्यों को आत्मीयता से जान सकते हैं।

गतिविधि का नाम : जीवनी का परिचय

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कक्षा–7(दीक्षा) पाठ–भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय

उद्देश्य : विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

महामना मदन मोहन मालवीय ने भारतीय स्वतंत्रता की ऐसी नींव रखी जिसके परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1947 ई0 हमारा देश स्वतंत्र हुआ। इनका जन्म 25 दिसम्बर 1861 ई० को प्रयागराज में हुआ था। उनके पिता का नाम पण्डित ब्रजनाथ चतुर्वेदी और माता श्रीमती मूना देवी थीं।

महामना मदन मोहन मालवीय जी वैदिक (हिन्दू) धर्म और संस्कृति के सच्चे अनुगामी थे।

मालवीय जी ने गंगा के अविरल प्रवाह लिए 1914 ई0 में हरिद्वार में तथा 1924 ई. में प्रयागराज में सत्याग्रह किया था

मालवीय जी छुआ–छूत, अस्पृश्यता के घोर विरोधी थे। वे इसे कलंक और राष्ट्रीय विकास के मार्ग में बाधा मानते थे। उन्होंने गो रक्षा आन्दोलन भी चलाए।

महामना मदन मोहन मालवीय एक राजनीतिज्ञ से अधिक शिक्षाशास्त्री थे। वे शिक्षा को पुरातन एवं नवीनतम मूल्यों के बीच एक सेतु के रूप में देखते थे। इन्ही धारणाओं को ध्यान में रखकर मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना माह फरवरी 1916 ई0 में बसन्त पंचमी के दिन हुई।

उन्होंने लोगों से भिक्षा मांगकर तथा राजा महाराजाओं को कल्याण के लिए प्रेरित कर धन इकट्ठा किया। महामना मालवीय बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

मालवीय जी का निधन 12 नवम्बर 1946 ई0 में हुआ था। भारत सरकार द्वारा 30 मार्च 2015 ई० में इन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया है।

दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर तालिका में दिए गए बिन्दुओ को आधार बनाकर मदन मोहन मालवीय जी का जीवन परिचय दीजिए–

1	मालवीय जी की जन्म तिथि
	1914 ई० की घटना
	मालवीय जी की मृत्यु तिथि

मानवीय जी के माता पिता का नाम
काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का स्थापना वर्ष
पुरस्कार का नाम

इसे भी जाने– जीवनी और आत्मकथा में अन्तर–

जीवनी में लेखक किसी महापुरुष या व्यक्ति विशेष के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करता है जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन के अनुभव का वर्णन करता है।

बोध परीक्षण

1. जीवनी किसे कहते हैं?
2. प्रमुख जीवनी लेखकों के नाम लिखिए।
3. 'आवारा मसीहा' जीवनी के लेखक का नाम लिखिए।
4. अमृत राय द्वारा रचित जीवनी का नाम लिखिए।
5. हिन्दी साहित्य में जीवनी लेखन कब से प्रारम्भ माना जाता है।

स्व आकलन

1. सुमेलित कीजिए–

(1) विष्णु प्रभाकर — (1) प्रेमचन्द घर में

(2) अमृतराय — (2) निराला की साहित्य साधना भाग 1

(3) शिवरानी देवी — (3) आवारा मसीहा

(4) राम विलास शर्मा — (4) सुमित्रानन्दपन्त "जीवन और साहित्य"

(5) शान्ति जोशी — (6) कलम का सिपाही

2. सही गलत पर निशान लगाइए–

1. जीवनी अपने बारे में लिखी जाती है।
2. जीवनी में व्यक्ति विशेष के अन्तर–बाह्य दोनों पक्षों का लेखा–जोखा होता है।
3. कार्तिक प्रसाद खत्री ने प्रतापनारायण मिश्र की जीवनी लिखी है।
4. 'कलम का सिपाही', प्रेमचन्द की जीवनी है।
5. जीवनी में तथ्यों की प्रमाणिकता होनी चाहिए।

प्रोजेक्ट कार्य

1. प्रशिक्षु अपने समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे साहित्य, संगीत, राजनीति, विज्ञान, खेलकूद आदि के व्यक्तियों, जिनके व्यक्तित्व ने उनके जीवन को प्रभावित किया हो– व्यक्ति से सम्बन्धित जीवन के बारे में एक लेख लिखकर लायेंगे।
2. प्रशिक्षु प्रमुख जीवनी और उनके लेखकों की सूची बनाकर लायेंगे।

4.14 जीवनी

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु जीवनी की अवधारणा को बेहतर ढंग से समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु जीवनी तथा आत्मकथा के अन्तर को सूचीबद्ध कर लेते हैं।
3. प्रशिक्षु महापुरुषों, विद्वतजनो, व्यक्ति विशेष के जीवन के बारे में अपने विचार व्यक्त कर लेते हैं।

सफल जीवन के लिए मनुष्य किसी के जीवन से प्रेरणा लेता है और अपने जीवन को उन्नतशील बनाने का प्रयत्न करता है। प्रायः महापुरुषों, विद्वतजनों, राजनीतिज्ञों, क्रान्तिकारियों, स्वतन्त्रता सेनानियों एवं वैज्ञानिकों के व्यक्तित्व से हम प्रभावित होते हैं और उसे अपने जीवन में उतारने का प्रयास भी करते हैं। उस व्यक्ति विशेष के जीवन से जुड़े वह तथ्य, जो सामान्य जन को प्रभावित कर सकते है, वह प्रमाणिक एवं वास्तविक होने पर सहज ही होते हैं। जब लेखक उसका वर्णन लेखन में करता है तो ऐसा लेखन जीवनी विधा में आता है।

किसी भी विशिष्ट व्यक्ति के जीवन के हर पहलू का वर्णन जीवनी विधा में किया जाता है, जिसे पढ़कर पाठक उनके जीवन से प्रेरणा प्राप्त कर करते हैं।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को महामना मदन मोहन मालवीय के जीवन के बारे बताएँगे।

❖ *"महामना मदन मोहन मालवीय एक राजनीतिक से अधिक शिक्षाशास्त्री थे। वे शिक्षा को पुरातन एवं नवीनतम मूल्यों के बीच एक सेतु के रूप में देखते थे। इन्ही धारणाओं को ध्यान में रखकर मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की।"*

गतिविधि का नाम : जीवनी का परिचय

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कक्षा–7(दीक्षा) पाठ–भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय

उद्देश्य : विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

- मालवीय जी से सम्बन्धित उक्त बातों को बताने के बाद प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से प्रश्न करेंगे–
  - ➢ उपर्युक्त गद्यांश में किस महान विभूति के जीवन के बारे में बताया गया है।
  - ➢ उक्त गद्यांश में लेखक ने अपने बारे में लिखा या किसी अन्य के बारे में लिखा है?
  - ➢ गद्य की विधाओं के अन्तर्गत हम इसे किस विधा के अन्तर्गत रखेंगे?
- संभावित उत्तर मिलने के बाद प्रशिक्षक प्रकरण को स्पष्ट करते हुए विषय प्रवेश करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

किसी व्यक्ति विशेष के जीवन से सम्बद्ध वृतान्त को 'जीवनी' कहते हैं। यह साहित्य की एक महत्वपूर्ण विधा है, जिसमें किसी महापुरुष या विख्यात व्यक्ति के जीवन की घटनाओं, उसके कार्य–कलापों तथा अन्य गुणों का औपचारिकता, आत्मीयतापूर्ण, व्यवस्थित रूप में वर्णन किया जाता है। इसमें व्यक्ति–विशेष के जीवन की छोटी–छोटी घटनाओं का वर्णन हो या बड़ी–बड़ी बातों का वर्णन, इस प्रकार किया जाता है कि पाठक उनके जीवन से परिचित ही नहीं होता वरन् उससे एक अपनापन अनुभव करने लगता है। जीवनी लेखक जीवनी में उन घटनाओं पर विशेष बल देता है; जिसे पढ़कर पाठक प्रेरणा ग्रहण कर, अपने जीवन को उन्नतशील बनाते हैं। शिप्ले के अनुसार ''जीवनी को नायक के सम्पूर्ण जीवन अथवा उसके यथेष्ट भाग की चर्चा करनी चाहिए और अपने आदर्श रूप में एक विशिष्ट इतिहास होना चाहिए।'' हम कह सकते है कि जीवनी में व्यक्ति विशेष अन्तर–बाह्य दोनों ही जीवनों का लेखा–जोखा होता है। हिन्दी में इसे 'जीवन चरित' या 'जीवन चरित्र' भी कहा जाता है। अंग्रेजी में इसे 'बॉयोग्राफी' कहते हैं। जीवनी प्रायः महापुरुषों, क्रान्तिकारियों, स्वतन्त्रता सेनानियों एवं राजनीतिज्ञों के जीवन पर लिखी गई हैं।

डॉ० माताप्रसाद गुप्त ने विषय की दृष्टि से जीवनी–साहित्य की निम्नलिखित कोटियाँ निर्धारित की हैं– आत्मचरित्र, संत चरित्र, ऐतिहासिक चरित्र, राजनीतिक चरित्र, विदेशी चरित्र एवं स्फुट चरित्र। जीवनी आत्मीय, विद्वत्तापूर्ण, मनोवैज्ञानिक, लोकप्रिय, ऐतिहासिक, व्याख्यात्मक, व्यंग्यात्मक एवं कलात्मक होती है। जीवनी में चरित–नायक के जीवन को क्रमशः अन्वेषित और उद्घाटित करना चाहिए। चरित्र का विकास स्वाभाविक होना चाहिए।

जीवनी लेखन के लिए कैसले ने कुछ स्रोत बताए हैं–

- उसी विषय अथवा सम्बद्ध विषयों पर पहले लिखी गई पुस्तकें
- मूल सामग्री यथा– पत्र, डायरी या प्रमाणिक गवेषणा–सामग्री
- समकालीनों के संस्मरण
- यदि वर्ण्य समय बहुत पहले का नहीं है तो जीवित व्यक्तियों की स्मृतियाँ
- जीवनी लेखक यदि अपने चरित नायक के सम्पर्क में रहा है, तो स्वयं अनुभूत संस्मरण।
- उन स्थलों का भ्रमण तथा पर्यवेक्षण जहाँ चरित नायक रहा था।

इन बिन्दुओं को देखते हुए कहा जा सकता है कि जीवनी जहाँ एक ओर इतिहास जैसी प्रमाणिकता तथा तथ्यपूर्ण होती है, वही दूसरी ओर वह साहित्यिकता के तत्वों से भरी होती हैं।

हिन्दी साहित्य में जीवनियों का लिखा जाना लगभग 1882 ई० से प्रारम्भ होता है। 1893 ई० में कार्तिक प्रसाद खत्री ने मीराबाई का जीवन चरित्र लिखा। बालमुकुन्द गुप्त ने प्रताप नारायण मिश्र का जीवन चरित्र लिखा। हिन्दी में प्रेमचन्द की एक जीवनी उनकी पत्नी शिवरानी देवी ने 'प्रेमचन्द घर में' नाम से लिखी है। दूसरी ओर उनके पुत्र अमृतराय ने 'कलम का सिपाही' नाम से लिखी। जहाँ शिवरानी देवी ने अपनी जीवनी में प्रेमचन्द को परिवार के संदर्भ में देखा है वहीं दूसरी ओर अमृतराय ने प्रेमचन्द को युग–सन्दर्भ में देखा है। भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, राधाकृष्ण दास, मुंशी देवी प्रसाद आदि ने जीवन चरित्र लेखन में रुचि ली और इसके लिए कार्य किया। आज के जीवनी साहित्य में रामविलास शर्मा की 'निराला की साहित्य साधना' भाग–1, शान्ति जोशी की 'सुमित्रानन्दन पन्त–जीवन और साहित्य', विष्णुप्रभाकर कृत 'आवारा मसीहा' (शरतचन्द्र की जीवनी) आदि का महत्त्वपूर्ण स्थान है।

गतिविधि

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को महामना मदन मोहन मालवीय के जीवन के बारे बताएँगे।

गतिविधि का नाम : जीवनी का परिचय

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : कक्षा–7(दीक्षा) पाठ–भारतरत्न महामना मदन मोहन मालवीय

उद्देश्य : विषयवस्तु की विस्तृत समझ विकसित करना।

इस पाठ में युग मनीषी भारतरत्न प्राप्त महामना मदन मोहन मालवीय जी के जीवनवृत्त के बारे में सुगठित एवं रोचक तरीके से बताया गया है। जिसे पढ़कर हम उनके जीवन से सम्बन्धित अन्तर–बाह्य तथ्यों को आत्मीयता से जान सकते हैं।

महामना मदन मोहन मालवीय ने भारतीय स्वतंत्रता की ऐसी नींव रखी जिसके परिणामस्वरूप 15 अगस्त 1947 ई0 हमारा देश स्वतंत्र हुआ। इनका जन्म 25 दिसम्बर 1861 ई० को प्रयागराज में हुआ था। उनके पिता का नाम पण्डित ब्रजनाथ चतुर्वेदी और माता श्रीमती मूना देवी थीं।

महामना मदन मोहन मालवीय जी वैदिक (हिन्दू) धर्म और संस्कृति के सच्चे अनुगामी थे।

मालवीय जी ने गंगा के अविरल प्रवाह लिए 1914 ई0 में हरिद्वार में तथा 1924 ई. में प्रयागराज में सत्याग्रह किया था

मालवीय जी छुआ–छूत, अस्पृश्यता के घोर विरोधी थे। वे इसे कलंक और राष्ट्रीय विकास के मार्ग में बाधा मानते थे। उन्होंने गो रक्षा आन्दोलन भी चलाए।

महामना मदन मोहन मालवीय एक राजनीतिज्ञ से अधिक शिक्षाशास्त्री थे। वे शिक्षा को पुरातन एवं नवीनतम मूल्यों के बीच एक सेतु के रूप में देखते थे। इन्ही धारणाओं को ध्यान में रखकर मालवीय जी ने काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना की। काशी हिन्दू विश्वविद्यालय की स्थापना माह फरवरी 1916 ई0 में बसन्त पंचमी के दिन हुई।

उन्होंने लोगों से भिक्षा मांगकर तथा राजा महाराजाओं को कल्याण के लिए प्रेरित कर धन इकट्ठा किया। महामना मालवीय बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे।

मालवीय जी का निधन 12 नवम्बर 1946 ई0 में हुआ था। भारत सरकार द्वारा 30 मार्च 2015 ई० में इन्हें देश का सर्वोच्च सम्मान भारत रत्न प्रदान किया गया है।

दिए गये अनुच्छेद को पढ़कर तालिका में दिए गए बिन्दुओ को आधार बनाकर मदन मोहन मालवीय जी का जीवन परिचय दीजिए–

1	मालवीय जी की जन्म तिथि	मानवीय जी के माता पिता का नाम
	1914 ई० की घटना	काशी हिन्दू विश्वविद्यालय का स्थापना वर्ष
	मालवीय जी की मृत्यु तिथि	पुरस्कार का नाम

इसे भी जाने– जीवनी और आत्मकथा में अन्तर–

जीवनी में लेखक किसी महापुरुष या व्यक्ति विशेष के जीवन की महत्वपूर्ण घटनाओं का वर्णन करता है जबकि आत्मकथा में लेखक स्वयं अपने जीवन के अनुभव का वर्णन करता है।

बोध परीक्षण

1. जीवनी किसे कहते हैं?
2. प्रमुख जीवनी लेखकों के नाम लिखिए।
3. 'आवारा मसीहा' जीवनी के लेखक का नाम लिखिए।
4. अमृत राय द्वारा रचित जीवनी का नाम लिखिए।
5. हिन्दी साहित्य में जीवनी लेखन कब से प्रारम्भ माना जाता है।

स्व आकलन

1. सुमेलित कीजिए–

(1) विष्णु प्रभाकर	(1) प्रेमचन्द घर में
(2) अमृतराय	(2) निराला की साहित्य साधना भाग 1
(3) शिवरानी देवी	(3) आवारा मसीहा
(4) राम विलास शर्मा	(4) सुमित्रानन्दपन्त "जीवन और साहित्य"
(5) शान्ति जोशी	(6) कलम का सिपाही

2. सही गलत पर निशान लगाइए–

(1) जीवनी अपने बारे में लिखी जाती है।
(2) जीवनी में व्यक्ति विशेष के अन्तर–बाह्य दोनों पक्षों का लेखा–जोखा होता है।
(3) कार्तिक प्रसाद खत्री ने प्रतापनारायण मिश्र की जीवनी लिखी है।
(4) 'कलम का सिपाही', प्रेमचन्द की जीवनी है।
(5) जीवनी में तथ्यों की प्रमाणिकता होनी चाहिए।

प्रोजेक्ट कार्य

3. प्रशिक्षु अपने समाज के विभिन्न क्षेत्रों जैसे साहित्य, संगीत, राजनीति, विज्ञान, खेलकूद आदि के व्यक्तियों, जिनके व्यक्तित्व ने उनके जीवन को प्रभावित किया हो– व्यक्ति से सम्बन्धित जीवन के बारे में एक लेख लिखकर लायेंगे।

4. प्रशिक्षु प्रमुख जीवनी और उनके लेखकों की सूची बनाकर लायेंगे।

4.16 पत्र लेखन

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु, पत्र– साहित्य को पहचान लेते हैं।
2. प्रशिक्षु, पत्र–साहित्य के लेखकों के बारे में बता लेते हैं।
3. प्रशिक्षु, पत्र–साहित्य के इतिहास के बारे में बता लेते हैं।
4. प्रशिक्षु, पत्र–साहित्य विधा तथा अन्य गद्य विधा में अन्तर कर लेते हैं।
5. प्रशिक्षु, पत्र–साहित्य लेखन का प्रयास कर लेते हैं।

मनुष्य प्राचीन काल से ही अपने भावों और विचारों को न केवल बोलकर बल्कि लिखकर भी प्रभावशाली तरीके से दूसरों तक संप्रेषित करता रहा है। पत्र भावों, विचारों, सूचनाओं और महत्त्वपूर्ण संदेशों को अपने लोगों या दूर–दराज में रहने वाले अपने परिजनों, मित्रों, सम्बन्धियों तक संप्रेषित करने का सामान्य माध्यम रहा है। ऐसे पत्र जो किसी महान व्यक्तित्व, साहित्यकार, कलाकार, विचारक या राजनीतिज्ञ द्वारा कलात्मक सौन्दर्यबोध और अन्तरंग भावनाओं के साथ इस प्रकार लिखे जाते हैं कि उनके माध्यम से जीवन, समाज, देश, राजनीति, संस्कृति या अन्य किसी स्थिति पर जीवंत प्रकाश पड़ता है, पत्र साहित्य कहलाता है।

राष्ट्रपिता महात्मा गाँधी, रवीन्द्रनाथ टैगोर, जवाहर लाल नेहरू से लेकर हिन्दी साहित्य के कई बड़े सहित्यकारों के पत्रों ने पत्र लेखन विधा को ऊँचाई प्रदान की है। महात्मा गाँधी जी ने अपने जीवन काल में चरखे के महत्त्व पर, जवाहर लाल नेहरू, रवीन्द्र नाथ टैगोर, हिटलर, विनोबा भावे आदि को व्यक्तिगत पत्र लिखा, तो वही लार्ड इरविन को भारत में और उसके पूर्व अफ्रीका में अफ्रीकी ईस्ट इंडिया को भी पत्र लिख चुके थे। महात्मा गाँधी के पत्रों का एक संकलन "महात्मा गांधी के निजी पत्र" नाम से पं0 लक्ष्मीधर बाजपेयी के संपादन में "सस्ता – हिन्दी–पुस्तक–माला" कार्यालय, कानपुर से प्रकाशित किया गया है। इसी तरह डॉ0 धीरेन्द्र वर्मा द्वारा लिखित 'यूरोप के पत्र' एवं बनारसीदास चतुर्वेदी तथा हरिशंकर शर्मा कृत 'प्राचीन हिन्दी पत्र संग्रह' पत्र साहित्य के उत्कृष्ट उदाहरण हैं।

गतिविधि

गतिविधि का नाम : पोस्टकार्ड के माध्यम से पत्र–साहित्य का परिचय कराना।

समय : 10 मिनट

सहायक सामग्री : पोस्टकार्ड

उद्देश्य : विषयवस्तु की प्रारंभिक समझ विकसित करना।

❖ प्रशिक्षक पोस्टकार्ड लेकर कक्षा में जायेंगे। उसके पश्चात् पोस्टकार्ड को प्रशिक्षुओं में बाँट देंगे।

❖ फिर एक–एक प्रशिक्षु को खड़ा करके उनसे प्रश्न पूछेंगे–

- इसे क्या कहते हैं?
- इसका प्रयोग किसलिए किया जाता है?

सम्भावित उत्तर मिल जाने के पश्चात् प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को पत्र साहित्य के बारे में बताएँगे कि जब कोई महान व्यक्ति या विचारक किसी से पत्रों के माध्यम से अपने विचारों का आदान–प्रदान करते हैं तो उनके द्वारा लिखा गया पत्र, पत्र–साहित्य के अन्तर्गत आता है।

प्रस्तुतीकरण

पत्र लेखन साहित्य की वह गद्य विधा है जिसमें पत्र लेखक अपने भावों, विचारों या महत्त्वपूर्ण सूचनाओं को सम्प्रेषित करने के लिए इसका लेखन करना है। हिन्दी साहित्य की अन्य विधाओं में पत्र साहित्य का महत्त्वपूर्ण स्थान है। पत्रों के माध्यम से लेखक, कवि, या कोई महान विचारक अपने विचारों से दूसरों को अवगत कराता है। अमर शहीद भगत सिंह के अपने भाई और अन्य कैदी साथियों को लिखे

गये पत्र को उदाहरण के तौर पर देखा जा सकता है। इस क्रम में हिन्दी साहित्य में अनेक पत्र साहित्य लिखे गये।

4.17 हिन्दी के प्रमुख पत्र–साहित्य और उनके लेखक

रचनाकार	पत्र साहित्य
बनारसी दास चतुर्वेदी और हरिशंकर शर्मा	पद्म सिंह शर्मा के पत्र (1956)
किशोरी दास बाजपेयी	साहित्यकारों के पत्र (1958)
अमृतराय	चिट्ठी–पत्री (1971)
जानकी वल्लभ शास्त्री	फाइल और प्रोफाइल (1968), निराला के पत्र (1971)
हरिवंशराय बच्चन	पन्त के दो सौ पत्र बच्चन के नाम (1971)
डॉ० रामविलास शर्मा	निराला की साहित्य साधना (भाग–3, 1976) मित्र संवाद(1992), आपस की बातें (1996)
भारत यायावर	चिठिया हो तो हर कोई बांचे (रेणु के पत्रों का संग्रह)
पुष्पा भारती	अक्षर–अक्षर यज्ञ (धर्मवीर भारती के पत्रों का संकलन)
विवेकीराय	पत्रों की छाँव में (2000)
डॉ० कमलेश अवस्थी	हमको लिख्यो है कहा।

इन पत्रों को पढ़ने से भावों व संवेदनाओं की संप्रेषणीयता के साथ पत्र लेखन के बारीकियों को भी समझा जा सकता है।

पत्र लेखन की बारीकियाँ/पत्र लेखन में ध्यान रखने योग्य बातें

- पत्र किसके लिए लिख रहे हैं।
- उस पत्र को पढ़ने वाला कौन है– बालक, वयस्क, स्त्री, पुरुष या कोई विशेष वर्ग।
- भाषा।
- पाठक का मानसिक स्तर।
- उपर्युक्त के अनुरूप सामग्री का चयन और नियोजन।
- शब्द वाक्य विन्यास, भाषा–शैली और महत्त्वपूर्ण कलेवर पर ध्यान।

4.18 प्रमुख पत्र लेखन के रचनाकारों का सामान्य परिचय एवं उनकी प्रमुख रचनाएँ

सरदार भगत सिंह

जीवन परिचय

महान क्रान्तिकारी सरदार भगत सिंह का जन्म 28 सितम्बर सन् 1907 ई० में पंजाब के बंगा (लायलपुर) नामक स्थान पर हुआ था। यह स्थान वर्तमान में पाकिस्तान में स्थित है। इनके पिता का नाम सरदार किशन सिंह एवं माता का नाम श्रीमती विद्‌यावती कौर था। सरदार भगत सिंह बचपन से ही क्रान्तिकारी विचारों वाले ये। बड़े होने पर ब्रिटिश साम्राज्य को जड़ से उखाड़ फेकना चाहते थे। सरदार भगत सिंह को पढ़ने का बहुत शौक था। किशोरावस्था में ही उन्होंने स्वामी विवेकानंद, गुरुनानक देव, दयानंद सरस्वती, स्वामी रामतीर्थ, रवीन्द्रनाथ ठाकुर जैसे अनेक भारतीय विद्‌वानों की ढेरों रचनाओं का अध्ययन किया था। विदेशी लेखकों में गैरीबाल्डी, मेजिनी, कार्ल मार्क्स, बाकूनिन और लेनिन जैसे विचारकों के विचारों का भी अच्छा अध्ययन किया था। वे जब भी किताबें पढ़ते थे तो साथ ही साथ में नोट्स भी बनाते जाते थे। यही नोट्स आज ऐतिहासिक दस्तावेजों के रूप में हमारे सामने आते हैं। ध्यातव्य है कि फाँसी के कुछ समय पूर्व भी वे लेनिन की जीवनी पढ़ रहे थे। सरदार भगत सिंह के सम्पर्क में रहे अधिकांश क्रान्तिकारी उनकी मानसिक परिपक्वता से प्रभावित थे। भगत सिंह हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन आर्मी के सदस्य थे। साइमन कमीशन का बहिष्कार करने के सिलसिले में पंजाब केसरी लाला लाजपत राय पर पुलिस ने प्राणघातक प्रहार किया था। पुलिस अधीक्षक सांडर्स को इसके लिये जिम्मेदार मानते हुये भगत सिंह ने गोलियाँ चलाकर उसकी हत्या कर दी थी। इसी मामले में दूसरा पुलिस अफसर मिस्टफर्म भी मारा गया था। ब्रिटिश सरकार ने अन्यायपूर्ण ढंग से इन्हें 23 मार्च सन् 1931 ई. को फाँसी दे दी।

प्रमुख रचनाएँ

अपने छोटे से जीवन काल में ही सरदार भगत सिंह ने पर्याप्त गुणवत्तापूर्ण लेखन कार्य किया है। प्रारम्भ से ही सरदार भगत सिंह 'किरती', 'प्रताप', 'महारथी', 'वीर अर्जुन', 'मतवाला', 'प्रभा', 'अकाली', 'चांद', 'बंदे मातरम' जैसी पत्र–पत्रिकाओं से जुड़े रहे। इन पत्र–पत्रिकाओं में सरदार भगत सिंह के लेख कभी उनके अपने नाम से तो कभी बलवंत सिंह, विद्रोही, बी. एस. सिंधु जैसे नामों से छपते थे।

धर्म और हमारा स्वतन्त्रता संग्राम, सांप्रदायिक दंगे और उनका इलाज, सत्याग्रह और हड़तालें, विद्यार्थी और राजनीति, मैं नास्तिक क्यों हूँ, अछूत का सवाल जैसे उनके रिपोर्ताजात्मक लेख आज भी प्रासंगिक हैं।

रवीन्द्रनाथ टैगोर

जीवन परिचय

भारत के प्रथम नोबेल पुरस्कार प्राप्तकर्ता महान विचारक, साहित्यकार, भारतीय स्वतंत्रता संघर्ष को गति व दिशा देने वाले तथा 'गुरुदेव' उपनाम से विभूषित रवीन्द्रनाथ टैगोर, भारत के महान साहित्यकारों में से एक रहे हैं। काव्य, चित्रकला संगीत की दुनिया के साथ कथा साहित्य में भी उन्होंने अपनी अलग पहचान बनायी है। गुरुदेव ने अति सरल ढंग अपनाते हुए समाज के विभिन्न वर्गों जैसे किसानों और स्त्रियों, जमीदारों, बालकों के विषय पर गम्भीर व संवेदनशील लेखन किया है। जातिवाद, भ्रष्टाचार और निर्धनता जैसी सामाजिक बुराइयाँ उनकी रचनाओं का अभिन्न अंग बनी रहीं। विश्वविख्यात कवि, साहित्यकार, दार्शनिक रवीन्द्रनाथ टैगोर का जन्म 7 मई सन् 1861 को कोलकाता में हुआ था। टैगोर अपने माता–पिता की आखिरी संतान थे। इन्होंने बेहद कम उम्र में ही अपनी माँ को खो दिया था। उनके

पिता एक यात्री थे इसलिये उनका पालन–पोषण घर की देखभाल करने वाले लोगों ने ही किया। एक बंगाली ब्राहमण परिवार में जन्मे टैगोर महज आठ साल की उम्र में ही पहली कविता की रचना की थी। उनका पहला काव्य संग्रह मात्र 18 साल की उम्र में प्रकाशित हुआ था। उन्होंने 20 वीं सदी की शुरुआत में बंगाली साहित्य और संगीत के साथ–साथ भारतीय कला को फिर से जिंदा करने का कार्य किया। उन्हें 1913 में गीतांजलि के लिये नोबेल पुरस्कार से सम्मानित किया गया। इसे प्राप्त करने वाले पहले गैर–यूरोपीय और पहले गीतकार थे। टैगोर को गुरुदेव, कविगुरु, विश्वकवि जैसे उपनामों से भी जाना जाता है। भारत का राष्ट्रगान 'जन गण मन' रवीद्रनाथ टैगोर जी द्वारा ही रचित है।

प्रमुख रचनाएँ

साहित्य के साथ ही साथ रवीद्रनाथ टैगोर जी ने चित्रकला और संगीत की दुनियाँ में भी अपना विशेष स्थान बनाया है। लिखने का अति सरल ढंग अपनाते हुये उन्होंने समाज के विभिन्न वर्गों जैसे किसानों और जमींदारों के विषय में भी लिखा। जातिवाद, भ्रष्टाचार और निर्धनता जैसी सामाजिक बुराइयाँ उनकी रचनाओं का अभिन्न अंग रहीं हैं। अपने दीर्घ रचनाकाल में गुरुदेव ने 90 से अधिक लघु कथाओं की रचना की। 'भिखारिणी', 'काबुलीवाला', 'गोरा', 'नौकाडूबी', 'चतुरंगा', 'पोस्ट मास्टर', 'चोखेर बाली', 'घाटेर कथा' आदि उनकी प्रमुख कृतियाँ हैं। एक स्त्री का पत्र उन्हीं कथाओं में से एक है। गुरुदेव सन् 1941 में इस संसार को छोड़कर चले गये।

बोध परीक्षण

1– पत्र साहित्य किसे कहते हैं?

2– पत्र साहित्य के दो लेखकों के नाम लिखिए

3– 'मित्र संवाद' और 'आपस की बातें' पत्र के लेखक का नाम बताइए।

समेकन

पत्र लेखन की परम्परा मनुष्य की अभिव्यक्तिगत आवश्यकता का परिणाम रहा है। महान व्यक्तितत्व अपने भावों और विचारों को अन्यों तक पहुंचाने के लिए पत्र लेखन करते रहे हैं।

मंजरी, कक्षा–8 में 'एक स्त्री का पत्र' नाम से रवीन्द्रनाथ टैगोर ने, स्त्री की पीड़ा, व्यथा और शोषण को अतिसंवेदनशील तरीके से व्यक्त हेतु लिखा पत्र है। इस पत्र में 'बिन्दू' के माध्यम से गुरूदेव ने एक स्त्री की सच्ची पीड़ा को व्यक्त किया है। बिन्दू द्वारा 'आत्म हत्या' जैसा कदम उठाना नारी जीवन की कठोरतम सामाजिक बन्धन और शोषण की परिणति है। पत्र लेखक 'मृणाल' के माध्यम सें जीवन और मृत्यु के बीच के फासले को जिस बारीकी से गुरुदेव ने बतलाया है, वह पाठक को सोचने पर मजबूर करती है।

पत्र लेखन वर्तमान समय में, डिजिटल और सोशल मीडिया के आने से कम होता जा रहा है। तकनीकी उन्नति ने भी पत्र लेखन को नकारात्मक रूप से प्रभावित किया है। इसी के अनुरूप लोगों में संवेदनशीलता का भी ह्रास हुआ है। आज आवश्यकता इस बात की है कि न सिर्फ पत्र लेखन की विधा को बचाया और बढ़ाया आप बल्कि लोगों में संवेदनशीलता के स्तर को बढ़ाने का प्रयास किया जाय।

4.19 नाटक

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. प्रशिक्षु नाटक की अवधारणा को समझ लेते हैं।
2. प्रशिक्षु नाटक की परिभाषा एवं स्वरूप जानते हैं।
3. प्रशिक्षु नाटक के तत्त्वों से अवगत हो जाते हैं।
4. प्रशिक्षु नाटक के विभिन्न रूपों से अवगत हैं।
5. प्रशिक्षु नाटक शिक्षण को सरल एवं रुचिकर बना लेते हैं।
6. प्रशिक्षु बच्चों में नाटक के प्रति समझ विकसित कर लेते हैं।
7. प्रशिक्षु विद्यार्थियों को प्रदत्त विषयों पर सरल नाटक निर्माण में सक्षम बना लेते हैं।

'नाटक' हिन्दी साहित्य की विशिष्ट विधा है। साहित्य की अन्य विधाओं को सुना और पढा जा सकता है जबकि नाटक को देखा भी जा सकता है। नाटक की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए नाट्यशास्त्र के प्रणेता भरतमुनि ने लिखा है कि 'ऐसा कोई ज्ञान, शिल्प, विद्या, कला, कर्म, योग नहीं है जो नाटक में दिखाई न पड़े।' भरतमुनि अपने नाट्य शास्त्र में नाटक की उत्पत्ति चारों वेदों के उपरांत स्वीकार करते हैं।

भारत में नाट्य लेखन और मंचन की परम्परा अत्यंत प्राचीन है। हिन्दी से पूर्व संस्कृत और प्राकृत नाटकों की समृद्ध परम्परा रही है। मध्यकाल में रासलीला, रामलीला, और नौटंकी के प्रभाव से लोक में जन नाटकों का उदय हुआ। इस काल के हिन्दी नाटकों में गीतों की अधिकता है, गद्य का प्रयोग अंश मात्र है, इसलिए मध्यकाल के अधिकांश नाटकों का स्वरूप पद्यमय है। कालान्तर में अनुदित नाटकों के कारण भाषा का स्वरूप गद्य मय हो गया। अनुदित नाटक ही मौलिक हिन्दी नाटकों के प्रेरणा स्रोत है। हिन्दी मौलिक नाटकों की शुरुआत गोपालचन्द्र गिरधरदास के नाटक 'नहुष' से होती है।

4.20 नाटक के तत्व

संस्कृत आचार्यों ने नाटक के कुल पाँच तत्व स्वीकार किए हैं–

(1) कथावस्तु
(2) नेता
(3) रस
(4) अभिनय
(5) वृत्ति

पाश्चात्य एवं आधुनिक भारतीय समालोचकों ने नाटक के छः मूल तत्व स्वीकार किए हैं–

(1) कथावस्तु
(2) पात्र/चरित्र चित्रण
(3) कथोपकथन/ संवाद योजना
(4) भाषा शैली
(5) देशकाल एवं वातावरण
(6) उद्देश्य

4.21 हिन्दी नाटकों का विकास

1. **भारतेन्दु युग**– यह नाट्य साहित्य का प्रथम चरण है। हिन्दी नाट्य कला के प्रवर्तक के रूप में भारतेन्दु जी ने नेतृत्व किया जिससे उनकी छाया में अनेक नाटककारों का उदय हुआ। इस युग के मुख्य नाटककार भारतेन्दु हरिश्चन्द्र, श्रीनिवासदास, प्रतापनारायण मिश्र, राधाचरण गोस्वामी आदि हैं।
2. **द्विवेदी युगीन नाटककार**–इस युग के प्रसिद्ध नाटककार बनवारीलाल (कंस वध), लक्ष्मी प्रसाद (उर्वशी), जयशंकरप्रसाद (करुणालय) आदि हैं।
3. **प्रसाद युगीन नाटककार**–भारतेन्दु युग के बाद हिन्दी में जो शिथिलता आ गयी थी उसे जयशंकर प्रसाद के आगमन से इस युग के नाटककारों में पौराणिक, ऐतिहासिक, सामजिक नाट्य धाराओं को अपनाया। इस युग के प्रमुख नाटककार मैथिलीशरणगुप्त (तिलोत्तमा), गोविन्दवल्लभ पन्त (वरमाला), पाण्डेय बेचन शर्मा 'उग्र' (महात्मा ईसा), प्रसाद आदि हैं।
4. **प्रसादोत्तर नाटककार**–प्रसाद युग के बाद नाटकों का नव युग प्रारम्भ होता है। इस युग के नाटक विषय और शिल्प की दृष्टि से अधिक समृद्ध हैं। इस युग के नाटककार सेठ गोविन्द दास (विश्व प्रेम), रामकुमार वर्मा (विजय पर्व), हरि कृष्ण प्रेमी (शिव साधना), भूपेन्द्रनाथ अश्क (स्वर्ग की झलक) आदि।
5. **स्वातंत्र्योत्तर नाटक**– स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद बदलते परिवेश का प्रभाव नाटककारों पर भी पड़ा। सरकारी प्रोत्साहन के कारण लोगों में रंग–मंच के विकास के प्रति उत्साह और आशा जगी। इस युग के प्रमुख नाटककार डॉ0 लक्ष्मी नारायण लाल की (सूर्यमुख), रांगेय राघव (स्वर्गभूमि का यात्री), विनोद रस्तोगी की (नए हाथ) जगदीश चंद्र माथुर (कोणार्क) आदि।

4.22 हिन्दी के प्रसिद्ध नाटककार

नाटककार	नाटक
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र	अंधेर नगरी, भारत दुर्दशा, नील देवी
जयशंकर प्रसाद	ध्रुवस्वमिनी, चन्द्रगुप्त, स्कंदगुप्त
धर्मवीर भारती	अंधा युग
मोहन राकेश	अषाढ़ का एक दिन
सर्वेश्वर दयाल सक्सेना	बकरी
शंकर शेष	एक और द्रोणाचार्य
भीष्म साहनी	कबीरा खड़ा बाजार में
मन्नु भंडारी	महाभोज
जगदीश चन्द्र माथुर	कोणार्क
स्वदेश दीपक	कोर्ट मार्शल

इकाई 5

अनिवार्य संस्कृत के पाठों का अध्यापन, नीति श्लोकों को कंठस्थ कराना

प्रशिक्षण सम्प्राप्ति

- ❖ प्रशिक्षु पद्य पाठ का शुद्ध उच्चारण करते हुए हाव–भाव के साथ सस्वर वाचन करते हैं।
- ❖ प्रशिक्षु गद्य एवं पद्य पाठों के बीच के अन्तर को समझते हैं।
- ❖ प्रशिक्षु पद्य पाठ ''वन्दना'' में समाहित ईश्वर की सर्वव्यापकता एवं सामाजिक समरसता आदि के विषय में जानते हैं।
- ❖ प्रशिक्षु पद्य पाठ ''वन्दना'' में निहित व्याकरणिक तत्त्वों उपसर्ग, प्रत्यय, पुरुष, वचन, विभक्ति, विराम चिह्न तथा लकार आदि की समझ रखते हैं।
- ❖ प्रशिक्षु पद्य पाठ ''वन्दना'' के पद्यांशों का भावार्थ अपने शब्दों में व्यक्त करते हैं।

संस्कृत साहित्य अत्यन्त ही समृद्ध एवं लोकोपयोगी है। इस भाषा में रचित गद्य–पद्य विधा में वन्दना नीतिश्लोक, सुभाषित, कहानी, वार्तालाप, यात्रावर्णन आदि में निहित कल्पना, जीवन आदर्श, सामाजिक समरसता, ऐक्यभाव, नैतिक मूल्य एवं परस्पर सामंजस्य जीवन को सार्थक बनाते हैं। भारतीय सांस्कृतिक मूल्यों को प्रशिक्षुओं में प्रतिष्ठापित करने में साहित्य का विशिष्ट स्थान हैं।

वन्दना पाठ में ईश्वर के प्रति आस्था प्रकट की गयी है। सम्पूर्ण विश्व के कारणभूत ईश्वर जगत् के कण–कण में विद्यमान हैं। वे मन्दिर, मस्जिद एवं गिरजाघर आदि उपासना स्थलों तथा जन–जन के हृदय में निवास करने वाले एवं अपनी आभा से जगत् को प्रकाशित करने वाले हैं। इस पाठ के माध्यम से सर्वधर्म समभाव एवं परस्पर सौहार्द्र की भावना का विकास होगा एवं ईश्वर की सर्वव्यापकता सिद्ध होगी।

शिक्षक प्रशिक्षकों (संदर्भदाता) हेतु निर्देश

- ❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से पद्य में आए हुए शब्दों का स्पष्ट उच्चारण कराएँगे।
- ❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से कठिन पदों का विशेष रूप से उच्चारण का अभ्यास कराएँगे।
- ❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से पद्य में रुचि उत्पन्न करने के लिए यति, गति, लय, ताल एवं आरोह–अवरोह के साथ पद्य का सस्वर वाचन कराएँगे।
- ❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से पद्य–पाठ के उच्चारण के क्रम में विराम चिह्नों का अभ्यास कराएँगे।
- ❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से पद्य–पाठ के अन्तर्गत ईश्वर की सर्वव्यापकता के बारे में चर्चा करेंगे।

गतिविधि 1

घूर्णन–चक्रिका (स्पिन–कार्ड) के माध्यम से प्रशिक्षु पाठ में समाहित द्वितीयान्त पदों की समझ विकसित करेंगे।

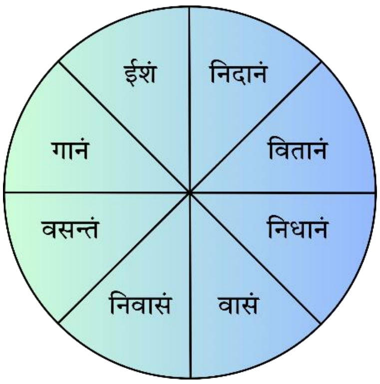

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं को बारी–बारी व्हाइट–बोर्ड पर 'वन्दे' क्रिया पद लिखकर चक्रिका में दिए गये द्वितीयान्त पदों द्वारा अलग–अलग वाक्य बनवायेंगे, यथा– निदानं वन्दे।

तकनीक का प्रयोग

प्रशिक्षक उक्त सम्पूर्ण पाठ का सस्वर एवं शुद्ध उच्चारणपूर्वक पाठ ध्वन्यांकन (आडियो/वीडियो) कराकर प्रस्तुत करेंगे, जिससे दृश्य–श्रव्य सामग्री के द्वारा सीखने–सिखाने की प्रक्रिया सरल, आनन्ददायी एवं प्रभावी होगी।

गतिविधि 2

प्रशिक्षक पद्य–पाठ ''वन्दना'' में आए योजक चिह्न (–) एवं विराम चिह्नों के प्रयोग का अभ्यास कराएँगे। इसके लिए प्रशिक्षक चार्ट पेपर पर पूरा पद्य लिखकर लाएँगे तथा प्रशिक्षुओं से पाठ में आए पूर्ण विराम एवं योजक चिह्न का प्रयोग कराएँगे एवं दिए गए रिक्त–स्थान में विराम चिह्नों को भरवाएँगे।

ईशं विश्व....निदानं वन्दे
निगम....गीत ....गुण....गानं वन्दे....
परितो वितत....वितानं वन्दे
शोभा....शक्ति....निधानं वन्दे....
मन्दिर....मस्जिद....वासं वन्दे
गिरजाभवन....निवासं वन्दे....
जन....जन....हृदय.... विलासं वन्दे
कण....कण....कलित ....प्रकाशं वन्दे....

गतिविधि 3

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से रिक्त स्थानों की पूर्ति के लिए कहेंगे–

1. नव–लतिकासु लसन्तं ________ ।
2. निगम–गीत–गुण–गानं ________ ।
3. मन्दिर–________ –वासं वन्दे।
4. जन–जन–हृदय–________ –वन्दे।
5. शुचि–________ वसन्तं ________ ।
6. कण–कण–________ –प्रकाशं ________ ।

प्रस्तुतीकरण

प्रशिक्षक पद्य–पाठ में आए विषय वस्तु पर चर्चा करेंगे तथा पाठ से जुड़े बिन्दुओं पर प्रशिक्षुओं से बातचीत करेंगे। इसी प्रकार प्रशिक्षु अनिवार्य संस्कृत के अन्य पाठों की भी शिक्षण योजना बना सकेंगे। शिक्षण योजना के अन्तर्गत पद्य–पाठ को पढ़कर अर्थ एवं उसमें निहित भावों को समझ सकेंगे। पद्य–पाठों में समाहित भावों को अपने जीवन में आत्मसात् करके अपने अन्दर जीवन मूल्यों का विकास कर सकेंगे। पद्य–पाठ के अन्तर्गत व्याकरण के अंशों में विराम–चिह्नों, उपसर्ग, प्रत्यय, वचन, पुरुष आदि को समझकर

अपने कक्षा–कक्ष में प्रयोग कर सकेंगे, जिससे प्रशिक्षुओं में संस्कृत पढ़ने, बोलने तथा लिखने की दक्षता विकसित हो सकेगी।

प्रशिक्षु वन्दना पाठ के आधार पर पूजा/वन्दना–स्थलों की सूची बनवाएँगे।

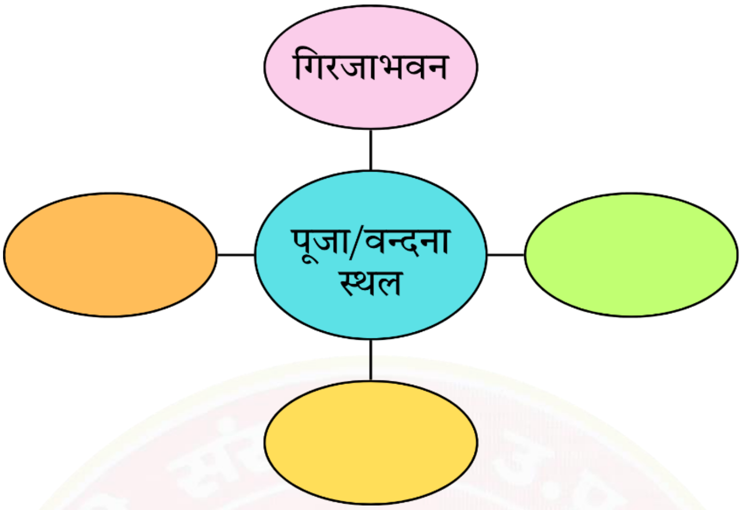

निर्देश–चित्र के गोलों में विभिन्न धर्मों द्वारा स्वीकृत पूजा–स्थलों को भरवाएँगे।

गतिविधि 4 **समय–5 मिनट**

सहायक सामग्री– चार्ट पेपर पर लिखी हुई उच्च प्राथमिक स्तर की कक्षा 8 की हिन्दी पाठ्य पुस्तक 'प्रज्ञा' के अनिवार्य संस्कृत की 'वन्दना' कविता।

प्रशिक्षक ''वन्दना'' कविता को चार्ट पेपर पर लिखकर प्रशिक्षुओं को दिखाएँगे तथा उसमें से वर्णित सजीव वस्तुओं में ईश्वर के वास–स्थान की सूची बनाने को कहेंगे।

निर्देश– कविता की सहायता से चित्र में ईश्वर के वास–स्थानों के नाम भरिए–

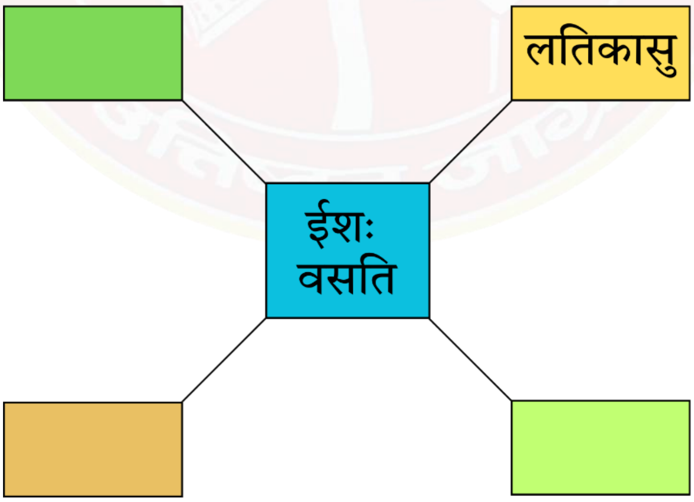

निर्देश–प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से लतिकासु, कुसुमेषु, वदनेषु एवं हृदयेषु को बॉक्स में भरवाएँगे एवं प्रत्येक के साथ ईशः वसति को भी भरवाएँगे।

गतिविधि 5

प्रशिक्षक पाठ में निहित सप्तमी–विभक्ति के पदों का प्रयोग चार्ट पेपर पर लिखकर लाएँगे–

सप्तमी विभक्ति: वदनेषु, कुसुमेषु, हृदयेषु, लतिकासु

सप्तमी विभक्ति से सम्बन्धित पदों से युक्त वाक्य पद्य से खोजकर बनवाएँगे,

जैसे– लतिकासु लसन्तं वन्दे।

वदनेषु............................ ।

हृदयेषु............................ ।

कुसुमेषु.......................... ।

गतिविधि 6

प्रशिक्षुओं से श्यामपट्ट पर मिलान करने के लिए कहेंगे–

परितः	पवित्र
शुचिः	वेद
निगमः	शोभा पाते हुए
वितानं	भण्डार
निधानं	फैला हुआ
लसन्तं	चारों ओर

बोध परीक्षण

1. प्रस्तुत पाठ में किसकी वन्दना की गई है?
2. वन्दना पाठ में वर्णित पूजा स्थलों के नाम बताइए।
3. वन्दे शब्द का अर्थ बताइए?

समेकन

प्रशिक्षक ''वन्दना'' पद्य–पाठ के अन्तर्गत ईश्वर की सर्वव्यापकता पर चर्चा करेंगे। पद्य–पाठ में आए संस्कृत के कठिन शब्दों को श्यामपट्ट पर लिखकर उनका हिन्दी में अर्थ स्पष्ट करेंगे। प्रशिक्षक ईश्वर के प्रति अपनी श्रद्धा एवं समर्पण के विषय में प्रतिभागियों को अपने–अपने उद्गार व्यक्त करने के लिए अवसर प्रदान करेंगे। अंत मे प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से उक्त पद्य–पाठ को सस्वर कण्ठस्थ कर सुनाने के लिए कहेंगे।

मूल्यांकन हेतु कार्यपत्रक

1. सही शब्द पर गोला बनाएँ–

   (अ) सुचिः (ब) सोचिः

   (स) शुचिः (द) शूचिः

2. निगमः को क्या कहते हैं?

   (अ) रामायण (ब) गीता

   (स) वेद (द) पुराण

3. परितः को कहते हैं?

   (अ) एक ओर (ब) तीन ओर

   (स) चारों ओर (द) ऊपर

4. हसन्तं पद में विभक्ति है–

   (अ) द्वितीया (ब) तृतीया

   (स) पञ्चमी (द) सम्बोधन

प्रोजेक्ट वर्क

❖ शैक्षिक भ्रमण के अन्तर्गत प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से विविध धर्मों के पूजा स्थलों की सूची बनाने के लिए कहेंगे।

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से विभिन्न धर्मों के उपासना स्थलों में प्रयुक्त होने वाली दो–दो सामग्रियों के नाम संस्कृत में लिखने को कहेंगे।

प्रदत्त कार्य

❖ प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से सामाजिक समरसता के विषय में अपने विचारों को लिखकर लाने को कहेंगे।

❖ प्रशिक्षु दैनिक समाचार–पत्र में प्रकाशित सामाजिक सौहार्द से सम्बन्धित वार्ता का संकलन कर प्रस्तुत करेंगे।

गद्य–पाठ

5.1 अनिवार्य संस्कृत के पाठों का अध्यापन तथा नीति–श्लोकों को कंठस्थ कराना।

प्रशिक्षण सम्प्राप्ति

- प्रशिक्षु गद्यांश का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण करते हैं।
- विराम चिह्नों का ध्यान रखते हुए गद्यांश का वाचन करते हैं।
- गद्यांश के शब्दों का अर्थज्ञान रखते हैं।
- गद्यांश में आए हुए शब्दों से मिलते–जुलते अन्य शब्दों का भी उच्चारण करते हैं।

संस्कृत साहित्य का सृजन गद्य, पद्य दोनों रूपों में हुआ है। पद्य विधा में यति, गति, छंद, लय, तुक, ताल आदि का प्रयोग किया जाता है।

गद्य विधा काव्य रचना के सम्पूर्ण कथनों से युक्त, परिष्कृत एवं आलंकारिक शैली में लिखी जाती है, किन्तु यह छंद–युक्त तथा श्लोक–युक्त नहीं होती है।

यह गद्य विधा वैदिक काल के साहित्य (यजुर्वेद, ब्राह्मण, आरण्यक, उपनिषद) में सर्वप्रथम दिखायी देती है एवं लौकिक संस्कृत साहित्य में इसका प्रयोग बाणभट्ट के 'कादम्बरी' में, दण्डी के 'दशकुमारचरितम्' में सुबन्धु की रचना 'वासवदत्ता' आदि में पूर्ण रूप से विकसित दिखायी देती है।

आचार्य दण्डी के अनुसार यह गद्य–शैली कवियों की कसौटी मानी जाती है–

"गद्यं कवीनां निकषं वदन्ति।"

प्रशिक्षकों हेतु निर्देश

- प्रशिक्षक गद्य शैली की अवधारणा की समझ को विकसित करने हेतु सरल गद्य–युक्त लिखित चार्ट पेपर का प्रयोग करेंगे।
- कठिन एवं सन्धियुक्त पदों का उच्चारण सरलता–पूर्वक करेंगे।
- गद्य विधा के प्रति रोचकता जागृत करने के लिए संस्कृत में सरल वाक्यों का प्रयोग करेंगे।

प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1. गद्यांश में आये हुए शब्दों का शुद्ध एवं स्पष्ट उच्चारण करवाएँगे।
2. कठिन पदों के उच्चारण का अभ्यास विशेष रूप से करवाएँगे।
3. सन्धि युक्त पदों के विच्छेदों को बताते हुए शब्दों के अर्थ भी बताएँगे।
4. गद्य विधा में रुचि उत्पन्न करने हेतु संस्कृत में छोटे–छोटे सरल वाक्यों का प्रयोग करवाएँगे।

गतिविधि 1

छोटे–छोटे संस्कृत वाक्यों को ह्वाइट–बोर्ड पर लिखकर प्रशिक्षक छात्रों को पढ़ने हेतु प्रेरित करेंगे।

जैसे–

1. मोहन! त्वं किं करोषि ?
2. ललिते! भवती पुस्तकं पठतु।
3. राम! अत्र किं भवति ?

प्रस्तुतीकरण

प्रशिक्षक कक्षा–8 हिन्दी विषय की 'प्रज्ञा' नामक पुस्तक से अनिवार्य संस्कृत भाग के 'तृतीयः पाठः' 'महादानम्' शीर्षक का प्रस्तुतीकरण दो छात्रों को खड़ा करके कर सकते हैं–

सुधा – दीपक! अत्र किं भवति ?

दीपक – सुधे! अत्र जनाः रक्तदानं नेत्रदानं च कुर्वन्ति। शरीरस्य कृते रक्तम् आवश्यकं भवति।

सुधा – दीपक! रक्तनिर्माणं तु बहुपरिश्रमेण भवति, तर्हि जनाः कथं रक्तदानं कुर्वन्ति? किं रक्तदानेन शरीरे रक्ताल्पता न भवति ?

दीपक – सुधे! रक्ताल्पतायाः कारणं तु अन्यत् भवति। अस्वस्थाः जनाः रक्तदानं न कुर्वन्ति। यदा कोऽपि स्वस्थः जनः रक्तदानं करोति तदा तस्य शरीरे क्षिप्रमेव रक्तनिर्माणं भवति।

गतिविधि 2

प्रशिक्षु उपर्युक्त पठित गद्यांश में प्रयुक्त सम्बोधन चिह्नों को स्पष्ट करने हेतु छात्रों से अभ्यास करवाएँगे।

नीचे दिए गए वाक्यों में यथोचित स्थान पर उचित विराम चिह्न लगाएँ–

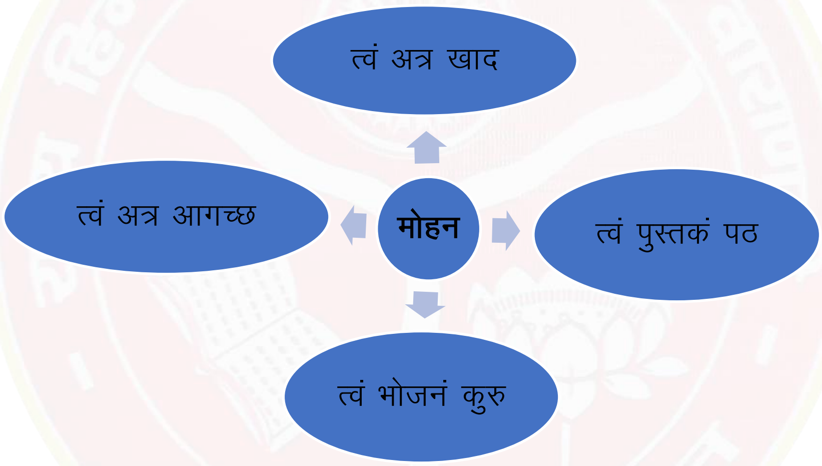

प्रशिक्षक बच्चों से नीचे दिए गए वाक्यों में प्रश्नवाचक चिह्न लगवाएँ–

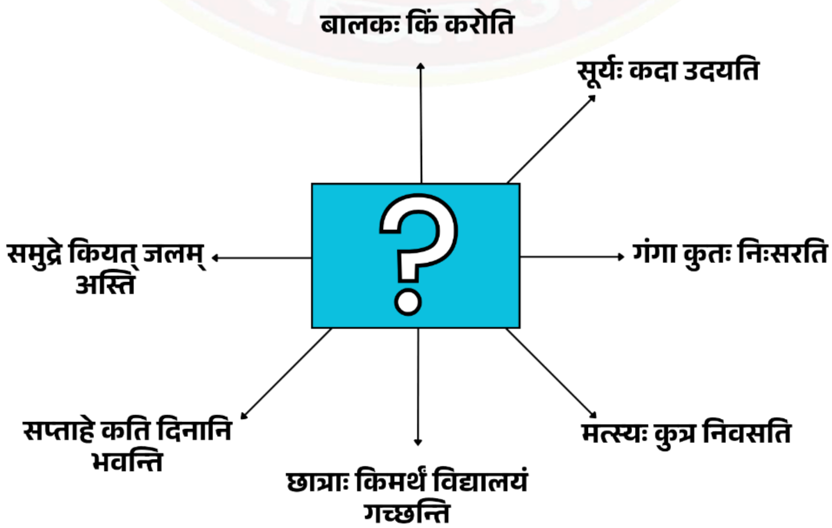

प्रशिक्षक गद्यांश में आए हुए शब्दों का सन्धि विच्छेद भी पूर्व निर्मित चार्ट के माध्यम से प्रदर्शित कर सकते हैं–

रक्ताल्पता = रक्त + अल्पता
कोऽपि = कः + अपि
क्षिप्रमेव = क्षिप्रम् + एव

गद्यांश में आए हुए कठिन एवं सामासिक पदों का उच्चारण भी कराएँगे–

शरीरस्य कृते, बहुपरिश्रमेण, रक्ताल्पतायाः, क्षिप्रमेव, अस्वस्थाः

प्रशिक्षक छात्रों को सरलता से गद्यांश के अर्थज्ञान हेतु शब्दार्थ भी बताएँ–

अत्र	=	यहाँ
रक्तदानम्	=	रक्त का दान
शरीरस्य कृते	=	शरीर के लिए
बहुपरिश्रमेण	=	बहुत परिश्रम से
कोऽपि	=	कोई भी
क्षिप्रमेव	=	जल्दी ही

बोध परीक्षण

प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं के मध्य विराम चिह्न अंकित कार्ड वितरित करेंगे एवं उनके कार्ड पर अंकित विराम चिह्नों से युक्त एक–एक वाक्य लिखने या बोलने के लिए कहेंगे–

!	?
।	,

प्रशिक्षक पुनः प्रश्नोत्तर विधि के माध्यम से उपर्युक्त गद्यांश पर आधारित प्रश्न करेंगे–

1. शरीरस्य कृते किम् आवश्यकं भवति?
2. के रक्तदानं न कुर्वन्ति?
3. के रक्तदानं नेत्रदानं च कुर्वन्ति?

बोध को स्पष्ट करने हेतु श्यामपट्ट के उपयोग से रिक्त स्थानों की पूर्ति भी प्रशिक्षुओं से कराएँ–

1. अत्र.. रक्तदानं नेत्रदानं च कुर्वन्ति।
2. ....बहुपरिश्रमेण भवति।
3. तस्य शरीरे क्षिप्रमेव..भवति।

समेकन

इस प्रकार से कह सकते हैं कि गद्य के अंशों को शुद्ध एवं स्पष्ट रूप से उच्चारण करके तथा शब्दों के अर्थज्ञान के द्वारा सही तरीके से समझा जा सकता है।

मूल्यांकन हेतु कार्य–पत्रक

1. गद्य विधा से आप क्या समझते हैं?
2. बॉक्स में लिखे हुए वाक्यों के सामने सम्बोधन के चिह्न और प्रश्नवाचक के चिह्न दिए गए हैं।

   उचित चिह्न को चुनकर उस पर सही (✓) का चिह्न लगाएँ–

वाक्य	चिह्न
राम त्वं पुस्तकं पठ	?, !
मनोजः किं पठति	! , ?
केशव पुस्तकं पठ	?, !
सः किं पिबति	!, ?
जनाः कथं रक्तदानं कुर्वन्ति	?, !

3. निम्नलिखित क्रियाओं से मिलती–जुलती दूसरी क्रियाओं को भी लिखें–

खादति	
पिबति	
वदति	
इच्छति	

प्रोजेक्ट कार्य

1. स्तम्भ (क), (ख) एवं (ग) मे दिए गए शब्दों को सुमेलित करते हुए वाक्य निर्माण कीजिए–

स्तम्भ (क)	स्तम्भ (ख)	स्तम्भ (ग)
रामः	वने	खादति
सिहः	भोजनं	अस्ति
वानरः	पुस्तकालये	करोति
पुस्तकम्	फलं	निवसति

2. दिए गए कर्ता को उचित क्रिया से सुमेलित कीजिए–

कर्ता	क्रिया
शिक्षकः	पचति
माता	रोदिति
शिशुः	पाठयति
जलं	तपति
सूर्यः	प्रवहति

इकाई 6

संस्कृत के शब्द भंडार में वृद्धि हेतु कठिन शब्दों को चुनना, संकलन करना और वाक्य प्रयोग कराना

6.1 कठिन शब्द और उनके अर्थ स्पष्टीकरण की प्रक्रिया

प्रशिक्षण संप्राप्ति

1. संस्कृत के शब्दों का शुद्ध उच्चारण करते हुए उसको लिख लेते हैं।
2. संस्कृत के कठिन शब्दों की पहचान कर उनको अलग से लिख लेते हैं।
3. संस्कृत के कठिन शब्दों का अर्थ समझकर उनका वाक्य में प्रयोग कर लेते हैं।

संस्कृत की गणना विश्व की प्राचीनतम भाषाओं में की जाती है। संस्कृत से हमारी भारतीय संस्कृति का विशेष सम्बन्ध है। यही कारण है कि संस्कृत भाषा को भारतीय परम्परा एवं संस्कृति का वाहक एवं पोषक माना जाता है।

आज के बदलते परिवेश में संस्कृत भाषा का प्रयोग करते समय व्यावहारिक संस्कृत शब्दों से परिचित न होना, उनका शुद्ध उच्चारण न कर पाना एवं शब्दों का वाक्य में यथोचित प्रयोग का अभाव आदि अनेक कठिनाइयों एवं चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है।

वर्तमान परिप्रेक्ष्य को ध्यान में रखते हुए संस्कृत के कठिन शब्दों के अर्थ बताएँ तथा उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग कराएँ, जिससे संस्कृत के प्रति बच्चों में रुचि जागृत हो सके तथा बच्चे अधिक से अधिक शब्दों को समझ सकें एवं अपने संस्कृत शब्द भंडार में वृद्धि कर सकें।

प्रशिक्षक/प्रशिक्षुओं हेतु निर्देश

1– संस्कृत शब्दों का उच्चारण स्पष्ट होना चाहिए।

2– शब्दों के चुनाव में संस्कृत के सरल तथा कठिन दोनों शब्दों का प्रयोग करना चाहिए।

3– कक्षा–कक्ष का वातावरण सहज हो।

4– कठिन शब्दों का अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनका परिचित संदर्भों में तथा छोटे–छोटे सरल वाक्यों में प्रयोग करना चाहिए।

5– कठिन शब्दों के उच्चारण का अभ्यास बार–बार कराया जाना चाहिए।

प्रस्तुतीकरण

गतिविधि–1

सहायक सामग्री– चार्ट पर संस्कृत में लिखी हुई पंक्तियाँ या श्लोक।

षड्दोषाः पुरुषेणेह हातव्या भूतिमिच्छता।
निद्रा तन्द्रा भयं क्रोधः आलस्यं दीर्घसूत्रता।।

श्लोक का प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं से कई बार सस्वर वाचन कराएँगे। इसके बाद कठिन प्रतीत हो रहे शब्दों को रेखांकित करने को कहेंगे। इन सभी शब्दों का काठिन्य निवारण श्यामपट्ट पर करेंगे।

षड्दोषाः <u>पुरुषेणेह</u> <u>हातव्या</u> <u>भूतिमिच्छता</u>।
निद्रा <u>तन्द्रा</u> भयं क्रोधः <u>आलस्यं</u> <u>दीर्घसूत्रता</u>।।

पुरुषेणेह– (पुरुषेण+इह) पुरुष के द्वारा ये
हातव्या– छोड़ देना चाहिए
भूतिमिच्छता– (भूतिम्+इच्छता) सम्पत्ति या ऐश्वर्य चाहने वाले
तन्द्रा– जागते हुए सोना
आलस्यं– सुस्ती/शिथिलता
दीर्घसूत्रता– धीरे–धीरे कार्य करना

अब पूरे श्लोक का भावार्थ प्रस्तुत करेंगे कि ऐश्वर्य की कामना करने वाले मनुष्य के द्वारा ये छह दोष छोड़ दिए जाने चाहिए– आवश्यकता से अधिक सोना (निद्रा), जागते हुए सोना (तन्द्रा), विघ्नों का डर (भयं), अनावश्यक क्रोध (क्रोधं), कार्य सम्पादन में शिथिलता (आलस्यं), और धीरे–धीरे कार्य करने का स्वभाव (दीर्घसूत्रता)।

छात्रों को वाक्य प्रयोग करने हेतु अवसर दें–

1. षडदोषाः हातव्या/षडदोषाः त्यक्तव्या।
2. आलस्यं मा कुरु/आलस्यं मा करणीयम्।
3. तन्द्रा त्याज्या।
4. भयं त्यजतु/भयं मास्तु।
5. दीर्घसूत्री मा भवतु। दीर्घसूत्री विनश्यति।

इसी तरह के और भी वाक्यों का निर्माण करके प्रयोग कराएँ।

नोट– शिक्षक/प्रशिक्षु अन्य गतिविधियों का भी उपयोग कर सकते हैं।

गतिविधि–2

शब्द–कार्ड एवं चित्र–कार्ड द्वारा वाक्य बनाना

इस गतिविधि के माध्यम से वाक्य निर्माण करते समय यह ध्यान रखना होगा कि चित्र–कार्ड (क), चित्र–कार्ड (ख) तथा शब्द–कार्ड तीनों स्तम्भों में से एक–एक कार्ड का प्रयोग करते हुए वाक्य निर्माण कराया जाएगा।

चित्र–कार्ड (क) | चित्र–कार्ड (ख) | शब्द–कार्ड

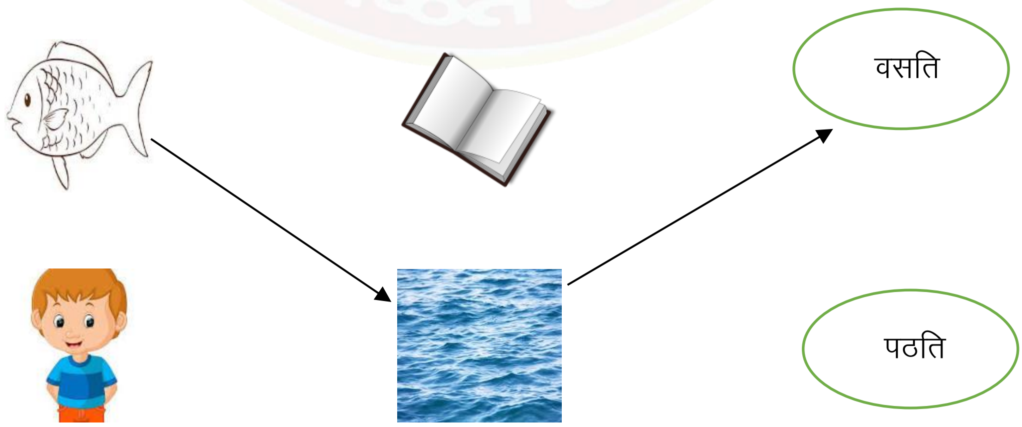

नृत्यति

खादति

प्रशिक्षक कक्षा में चित्र–कार्ड (क), चित्र–कार्ड (ख) एवं शब्द–कार्ड को दिखाते हुए प्रत्येक कार्ड में से एक–एक को जोड़कर वाक्य–निर्माण कराने का निर्देश दे सकते हैं। इस गतिविधि के माध्यम से छात्र पूर्ण मनोयोग से कक्षा में जुड़े रहेंगे। इसके द्वारा जहाँ एक ओर उनके शब्द भंडार में वृद्धि होगी, वहीं दूसरी ओर वाक्य–निर्माण एवं उनका प्रयोग करना सीख सकेंगे।

यथा–

(अ) मीनः जले 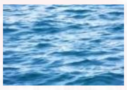 वसति।

(ब) ....।

(स) ....।

(द) ....।

इसी तरह के अन्य चित्र एवं शब्दकार्डों का प्रयोग किया जा सकता है।

6.1 कठिन शब्द और उनके अर्थ–स्पष्टीकरण की प्रक्रिया

वस्तुतः वे शब्द जो हमारे व्यवहार में नहीं होते हैं और जब वे पहली बार हमारे सामने आते हैं तो उनके संदर्भगत अर्थ की जानकारी नहीं होने के कारण वे कठिन प्रतीत होते हैं। ऐसे शब्दों से युक्त वाक्य/पंक्ति का आशय स्पष्ट नहीं होता है। भाव/विचार ग्रहण करने की प्रक्रिया रुक जाती है। ऐसी स्थिति में उस शब्द का अर्थ स्पष्ट करना प्रशिक्षक का तात्कालिक दायित्व बन जाता है।

पठित अंश का मौन पठन करते हुए उसमें आए हुए अपरिचित शब्दों को प्रशिक्षुओं से रेखांकित करने के लिए कहते हैं। रेखांकित शब्दों को प्रशिक्षुओं से पूछकर प्रशिक्षक श्यामपट्ट पर लिख लेते हैं। कभी–कभी प्रशिक्षुओं को बारी–बारी से क्रम में बुलाकर उनके द्वारा चिह्नित कठिन शब्दों को दोहराव से बचते हुए लिखने की छूट देते हैं, जिससे प्रशिक्षक को प्रशिक्षुओं की वास्तविक कठिनाइयों का पता चलता है।

अब इन चिह्नित कठिन शब्दों का अर्थ/भावार्थ/संदर्भगत अर्थ स्पष्ट करने के लिए शिक्षण प्रक्रिया के दौरान निम्नांकित कारगर कदम उठाते हैं–

1. प्रायः शिक्षक कठिन शब्दों का सीधा अर्थ अपनी ओर से बता देते हैं/लिखा देते हैं। इसे शब्दार्थ लेखन कहते हैं; किन्तु यह शिक्षण का नितान्त सतही तरीका है।
2. कुछ शब्द संधि/समास/उपसर्ग/प्रत्यय के योग से बने होते हैं। ऐसे शब्दों का विग्रह/विच्छेद कर पहले संधि/समास/उपसर्ग/प्रत्यय स्पष्ट करना आवश्यक होता है। ऐसा करने पर उनका सही–सही अर्थ स्पष्ट हो पाता है। यह व्याख्या विधि बड़ी प्रभावी होती है।
3. कुछ कठिन शब्द ऐसे होते हैं जिनके पर्यायवाची शब्द प्रशिक्षु पहले से ही जानते हैं। उन पर्यायवाची शब्दों की मदद से कठिन शब्दों के अर्थ वे सहजता से समझ लेते हैं। यह विधि अत्यन्त सरल है और प्रशिक्षुओं के शब्द भंडार की वृद्धि में सहायक होती है।

4. कुछ कठिन शब्दों के अर्थ स्पष्ट करने के लिए प्रशिक्षक ऐसे शब्दों को सरल एवं छोटे–छोटे वाक्यों में प्रयोग करते हैं जिससे प्रशिक्षु सहजता से उन कठिन शब्दों के अर्थों को सीख लेते हैं। आवश्यकतानुसार यह विधि अधिक कारगर होती है और शिक्षण प्रक्रिया को रोचक बनाती है।
5. कभी–कभी प्रशिक्षक प्रशिक्षुओं की जिज्ञासा और खोजी प्रवृत्ति को बढ़ावा देने के लिए कुछ कठिन शब्दों के अर्थों को पुस्तकों/शब्दकोश/सोशल मीडिया से खोजकर लाने को देते हैं। प्रशिक्षुओं की यह अन्वेषी प्रवृत्ति सीखने की प्रक्रिया के प्रति उनमें गहरा लगाव पैदा करती है। इस तरह का प्रयोग सीमित मात्रा में ही संभव होता है।

गतिविधि–3

शब्द अन्त्याक्षरी

प्रशिक्षक कक्षा में प्रशिक्षुओं को दो समूह में बाँटकर यह गतिविधि करा सकते हैं। संस्कृत के कठिन शब्दों के कार्ड दोनों समूहों के प्रशिक्षुओं में वितरित कर दिए जाएंगे।

प्रथम समूह के बच्चों द्वारा एक शब्द–कार्ड दूसरे समूह के बच्चों को दिखाया जाएगा। द्वितीय समूह शब्द–कार्ड पर लिखे शब्द के अन्तिम वर्ण से बने कार्ड को दिखाएगा। द्वितीय समूह द्वारा दिखाए गए शब्द–कार्ड को पुनः प्रथम समूह के द्वारा अन्तिम वर्ण के अनुसार दिखाया जाएगा। यह गतिविधि (5–7) मिनट तक करवायी जा सकती है।

अजः	जयः	यवः	वटः
टोपिका	काकः	करः	रसः
सरः	रजः	जलजः	जलम्
मकरः	रज्जुः	जनकः	कपोतः
तनयः	यानम्	मधुपः	पवनः

शब्द–कार्ड द्वारा पर्याप्त अभ्यास के पश्चात् इन्हीं दो टोलियों में बच्चों को क्रमवार (पहला, दूसरा, तीसरा.............) खड़ा करके यह गतिविधि बिना कार्ड के कराई जाएगी। प्रथम समूह के पहले क्रमांक का दूसरे समूह के पहले क्रमांक के साथ, एवं इसी प्रकार शेष जोड़ियों का। यहाँ स्कोर बोर्ड और निर्णायक का चयन कर गतिविधि रोचक बनाई जा सकती है।

समूह–1	समूह–2
क्रमांक–1	क्रमांक–1

प्राप्तांको का योग–

नोट– गलत बोलने वाले/रुक जाने वाले को शून्य अंक और सही उत्तर देने वाले को 1 अंक दिया जाएगा। इसी प्रकार पहली जोड़ी, दूसरी जोड़ी, तीसरी जोड़ी.......................के बीच गतिविधि चलेगी। अंत में दोनों समूह के प्राप्तांकों का योग बताते हुए हार/जीत की जगह अमुक समूह इतने अंको से आगे है, कहा जाएगा।

अभ्यास प्रश्न

1. मिलान कीजिए–

सहसा	एकः नृपः आसीत्।
नगरे	बालकाः सन्ति।
वृक्षाः	सः एकां रोटिकां प्राप्तवान्।
अत्र	परोपकाराय फलन्ति।
त्वम्	भारतदेशः वर्तते।
अस्माकं राष्ट्रः	बुभुक्षितः असि।

2. निम्नांकित शब्दों का अर्थ बताते हुए वाक्य बनाइए–

संस्कृत–शब्द	हिन्दी–अर्थ	संस्कृत–वाक्य
मक्षिका	मक्खी	मक्षिका उड्डयति
इतस्ततः		
ग्रामम्		
पिबति		

बोध परीक्षण

1. दिए गए शब्दों के अर्थ लिखकर वाक्य–प्रयोग कीजिए–

संस्कृत–शब्द	हिन्दी–अर्थ	संस्कृत–वाक्य–प्रयोग
अपि		
भूषणम्		
एकादश		
क्रीडकाः		
पश्यन्तु		
इदम्		
इतस्ततः		

2. दश अव्यय शब्दों को चुनकर उनका वाक्य–प्रयोग कीजिए।

3. सुमेलित कीजिए–

(क)	(ख)
आसन्दिका	
पुस्तकम्	
लेखनी	
व्यजनम्	

4. उचित विकल्प का चयन कर रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिए–

(वाटिकाम्, बुभुक्षितः, नरकस्य, नृपः, खादामि)

(क) कामः क्रोधः लोभः च त्रिविधं.................... द्वारम् अस्ति।

(ख) उत्तानपाद नामकः एकः...................... आसीत्।

(ग) काकः........................ आसीत्।

(घ) बालिका......................अगच्छत्।

(ङ) अहम् आम्रफलं .... ।

5. नीचे दिए गए शब्दों का प्रयोग करके संस्कृत वाक्य बनाइए–

जलम्–

वृक्षम्–

ग्रामम्–

आपणिक–

सैनिक–

समेकन

संस्कृत भाषा अत्यन्त मधुर एवं वैज्ञानिक भाषा है। इसे भारतीय संस्कृति का मेरुदण्ड भी कह सकते हैं।

संस्कृत भाषा शिक्षण के समय कठिन/अपरिचित शब्दों का चयन एवं उनका अर्थ स्पष्ट करने के लिए उनके पर्यायवाची शब्दों का प्रयोग तथा उन शब्दों का वाक्यों में प्रयोग आदि संस्कृत भाषा के प्रति बच्चों में रुचि जागृत करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते है।

मूल्यांकन हेतु कार्यपत्रक

1. चित्र देखकर संस्कृत में वाक्य प्रयोग कीजिए–

(क)		गजः	....
(ख)		बालकः	....
(ग)		खगः	....
(घ)		कृषकः	....

2. चित्रानुसार नीचे दिए गए पदों का प्रयोग करके वाक्य का निर्माण करें–

अत्र		....
तौ		....
इदम्		....
अस्माकम्		....
मोहनः		....
रचना		....
वाराणसीनगरे		....
वृक्षे		....

प्रोजेक्ट कार्य

1. अपने आस–पास की पाँच वस्तुओं के संस्कृत नाम लिखकर वाक्यों में प्रयोग कीजिए।
2. पाँच पालतू और पाँच जंगली पशुओं के संस्कृत नाम की तालिका बनाइए।

पाठ योजना प्रारूप

(व्याकरण)

दिनांक–
कक्षा– 6
विषय– हिंदी
कालांश– तृतीय
प्रकरण – 'काल'
अवधि– 35 मिनट

सामान्य उद्देश्य	1. विद्यार्थियों में हिंदी भाषा के प्रति रुचि उत्पन्न करना। 2. विद्यार्थियों में मानसिक, सामाजिक गुणों का विकास करना। 3. विद्यार्थियों में व्याकरण के प्रति अवबोध उत्पन्न करना। 4. विद्यार्थियों को बोली जाने वाली भाषाओं का ज्ञान कराना। 5. विद्यार्थियों को व्याकरण सम्मत हिंदी भाषा का संदर्भ अनुरूप प्रयोग करने में सक्षम बनाना।
विशिष्ट उद्देश्य	1. विद्यार्थी काल की परिभाषा बता सकेंगे। 2. विद्यार्थी काल के विभिन्न भेदों में अंतर कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी काल के विभिन्न भेदों के आधार पर क्रिया–रूपों का प्रयोग कर पायेंगे। 4. विद्यार्थी काल आधारित क्रिया के विभिन्न रूपों का मौलिक लेखन में प्रयोग कर सकेंगे।
पूर्वज्ञान	विद्यार्थी क्रिया से संबंधित सामान्य जानकारी रखते हैं।

प्रस्तावना

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका कथन	विद्यार्थी अनुक्रिया
प्र०– क्रिया किसे कहते हैं?	उ०– किसी कार्य के होने को प्रतिबिंबित करने वाले शब्द क्रिया कहलाते हैं।
प्र०– 'वह पुस्तक पढ़ता है' वाक्य में क्रिया शब्द पहचानिए।	उ०– 'पढ़ता है'
प्र०– 'वह पुस्तक पढ़ेगा' वाक्य में क्रिया शब्द पहचानिए।	उ०– 'पढ़ेगा'
प्र०– 'पढ़ता' और 'पढ़ेगा' एक ही मूल धातु 'पठ' से उत्पन्न हैं जो क्रिया के घटित होने के समय को दर्शा रहे हैं। क्रिया के समय को दर्शाने वाले रूप को व्याकरण में क्या कहते हैं?	समस्यात्मक

उद्देश्य कथन– बच्चों! आज हम सभी 'काल' और 'काल के भेदों' के बारे में अध्ययन करेंगे।

प्रस्तुतीकरण

शिक्षण बिंदु	छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका कथन	विद्यार्थी कथन	श्यामपटट कार्य
	सर्वप्रथम छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका विद्यार्थियों के समक्ष कुछ वाक्यों को प्रस्तुत करेंगे। यथा– –ऋषभ विद्यालय जा रहा है। –ऋषभ विद्यालय गया। –ऋषभ विद्यालय जाएगा। –मयंक पुस्तक पढ़ रहा है। –मयंक पुस्तक पढ़ चुका। –मयंक पुस्तक पढ़ेगा। इन वाक्यों से स्पष्ट है कि सभी क्रियाएँ एक ही समय में नहीं हो रही हैं, कुछ बीते हुए काल या समय में हुई हैं, कुछ हो रही हैं और कुछ क्रियाएँ आने वाले समय में होने वाली हैं।	विद्यार्थीगण ध्यानपूर्वक सुनेंगे।	मैं पढ़ रहा था। मैं पढ़ रहा हूँ। मैं पढ़ूंगा।
काल की परिभाषा	क्रिया के जिस रूप से उसके होने के समय का बोध होता है, उसे 'काल' कहते हैं।	विद्यार्थी अपनी उत्तरपुस्तिका में लिखेंगे।	–
काल के कुछ उदाहरण	राम घर जा रहा है। मोहन घर चला गया। सोहन घर जाएगा।	–	<u>जा रहा है।</u> <u>चला गया। जाएगा।</u>
काल के भेद	काल के मुख्यतः तीन भेद होते हैं– 1– भूतकाल 2– वर्तमान काल 3– भविष्यत् काल	विद्यार्थी उत्तरपुस्तिका में लिख रहे हैं।	भूतकाल वर्तमान काल भविष्यत् काल
भूतकाल	बच्चों इन वाक्यों को ध्यानपूर्वक देखो– 1– दृष्टि बाजार से आई। 2– शालू घर गई।		

	3– समृद्धि ने पुस्तक पढ़ी। इन वाक्यों से स्पष्ट है कि क्रिया का क्रम वर्तमान समय से पहले हो चुका है। अतः इन क्रियाओं में भूतकाल का बोध हो रहा है। क्रिया का वह रूप जिससे किसी कार्य के बीते हुए समय का बोध हो, उसे भूतकाल कहते हैं।	विद्यार्थी ध्यानपूर्वक सुन रहे हैं। विद्यार्थी उत्तरपुस्तिका में लिख रहे हैं।	आई गई पढ़ी
भूतकाल की परिभाषा	बच्चों इन वाक्यों को ध्यानपूर्वक देखो–		
वर्तमान काल	शाश्वत घर जा रहा है। हिमांशु खाना खा रहा है। कुशाग्र दौड़ रहा है। क्रिया के जिस रूप से किसी कार्य के वर्तमान समय में संचालित होने का बोध हो, उसे 'वर्तमान काल' कहते हैं।		जा रहा है। खा रहा है। दौड़ रहा है।
वर्तमान काल की परिभाषा	बच्चों! इन वाक्यों को ध्यान से देखो–	विद्यार्थी उत्तरपुस्तिका में लिख रहे हैं।	
भविष्यत् काल	1– रीशू कल वाराणसी जाएगा। 2– अर्यमा विद्यालय जाएगा। 3– स्तुति कल पढ़ेगी। क्रिया के जिस रूप से यह ज्ञात हो कि कार्य व्यापार आने वाले समय में शुरू होगा, 'भविष्यत् काल' कहलाता है।		जाएगा जाएगा पढ़ेगी
भविष्यत् काल की परिभाषा		विद्यार्थी उत्तरपुस्तिका में लिख रहे हैं।	

अंतिम चरण– बच्चों! आज हम सभी ने काल और उसके भेदों के बारे में अध्ययन किया।

पुनरावृत्ति प्रश्न

1. काल किसे कहते हैं?
2. भूतकाल एवं भविष्यत् काल में अन्तर बताइए।

3. वर्तमान काल तथा भूत काल के दो–दो उदाहरण दीजिए।
4. 'वह लिखता है' वाक्य में क्रिया को भविष्यत् काल में परिवर्तित करिए।

गृहकार्य

1. तीनों कालों से संबंधित 6–6 वाक्य अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
2. नीचे दिए गए वाक्यों में प्रयुक्त काल के प्रकार लिखिए।
   (क) अन्वी खाना खा रही है।
   (ख) शाश्वत विद्यालय गया था।
   (ग) ऋषभ घर जाएगा।
   (घ) अदित खेल रहा है।

पाठ योजना

(कहानी)

दिनांक –
कक्षा – 7
विषय – हिन्दी
कालांश – द्वितीय
प्रकरण – 'राजधर्म'
अवधि – 35 मिनट

सामान्य उद्देश्य	1. विद्यार्थियों में हिन्दी विषय के प्रति रुचि जागृत करना। 2. विद्यार्थियों को कल्पनाशक्ति के प्रयोग के अवसर प्रदान करना। 3. विद्यार्थियों में स्पष्ट एवं तर्कसंगत ढंग से विचाराभिव्यक्ति के कौशल का विकास करना। 4. विद्यार्थियों में कहानी के माध्यम से सदाचार का भाव जागृत करना। 5. विद्यार्थियों में नैतिकता की भावना जागृत करना। 6. विद्यार्थियों में शुद्ध व्याकरणिक भाषा की समझ तथा शब्द भंडार में वृद्धि करना।
विशिष्ट उद्देश्य	1. विद्यार्थी 'राजधर्म' कहानी के आधार पर राजा के प्रमुख कर्तव्यों की सूची बना सकेंगे। 2. विद्यार्थी पठित कहानी अंश में प्रयुक्त तत्सम शब्दों के तद्भव शब्दों की सूची से मिलान कर सकेंगे। 3. विद्यार्थी पठित कहानी में प्रयुक्त क्लिष्ट शब्दों के अर्थ एवं विलोम शब्दों को लिख सकेंगे। 4. विद्यार्थी कहानी के सारांश को अपने शब्दों में अभिव्यक्त कर सकेंगे।
सहायक सामग्री	 किसी राजदरबार का चित्र, पाठ्यवस्तु, I. C. T. वीडियो आदि।
पूर्व ज्ञान	विद्यार्थी कहानी के आरंभिक अंश को पूर्व की कक्षा में पढ़ चुके है। अतः वे 'राजधर्म' कहानी की पृष्ठभूमि, पात्र एवं आरंभिक घटनाक्रम से परिचित हैं।

प्रस्तावना

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका कथन	विद्यार्थी अनुक्रिया
1. ब्रह्मदत्त कौन थे?	एक विवकेशील राजा
2. राजा घूमते–घूमते हिमालय प्रदेश क्यों पहुँचे थे?	अपने दोष सुनने के लिए
3. राजा के अन्यायी होने पर सभी वस्तुएँ कड़वी और नीरस हो जाती है और सारा राष्ट्र कैसा हो जाता है?	ओजरहित
4. बोधिसत्व से शिक्षा प्राप्त कर राजा ने क्या संकल्प लिया?	समस्यात्मक

उद्देश्य कथन– बच्चों! आज हम लोग जातक कथा से उद्धृत एवं दीक्षा पाठ्यपुस्तक में संकलित 'राजधर्म' कहानी के शेष कहानी अंश को पढ़ते हुए एक आदर्श राजा के गुणों को समझेंगे।

प्रस्तुतीकरण

अन्विति– "राजा के और जिज्ञासा ....धन–धान्य से भर गया।" **आदर्श वाचन–** छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा प्रस्तुत अन्विति का उचित विराम चिह्नों, आरोह–अवरोह के साथ आदर्श वाचन किया जाएगा। **अनुकरण वाचन–** कतिपय विद्यार्थियों द्वारा उचित विराम चिह्नों तथा आरोह–अवरोह के साथ प्रस्तुत कहानी अनुच्छेदों का अनुकरण वाचन किया जाएगा।	

काठिन्य निवारण

शब्द	युक्ति	अर्थ	विद्यार्थी अनुक्रिया
जिज्ञासा	अर्थ निर्देश	जानने की इच्छा	विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में लिख रहे हैं।
गाय	पर्याय कथन	गौ, गौरी, गौंवत्री, धेनु	
कुमार्ग	विलोम कथन	सुमार्ग	
दुःख	विलोम कथन	सुख	
धर्म	वाक्य प्रयोग विधि	ब्रह्मदत्त एक धर्मप्रिय राजा थे।	
राजा	पर्याय कथन	नृप, भूप, नृपति, नरेश, नरेन्द्र	
मार्ग	अर्थ निर्देश	रास्ता	

बोध प्रश्न

1. 'प्रजा कुमार्ग पर चलती है।' इस वाक्य में 'कुमार्ग' शब्द का क्या अर्थ है?	बुरा मार्ग
2. कहानी में श्रेष्ठ मनुष्य को क्या माना गया है?	नेता
3. 'अनुसरण' शब्द का क्या अर्थ है?	पालन करना
4. राजा के विमुख होने पर किसे दुःख प्राप्त होता है?	राज्य, प्रजा
5. गाएँ नदी कैसे पार कर लेती है?	अपने नेता (बैल) के सीधे चलने का अनुकरण कर।

श्यामपट्ट कार्य

छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका काठिन्य निवारण तथा बोध प्रश्नों के उत्तर को श्यामपट्ट पर लिखेंगे।	विद्यार्थी अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखेंगे।

निरीक्षण कार्य– छात्राध्यापक/छात्राध्यापिका द्वारा कक्षा में घूम–घूम कर विद्यार्थी अनुक्रियाओं का निरीक्षण कार्य किया जाएगा।

पुनरावृत्ति प्रश्न

1. 'राजधर्म' कहानी के अनुसार राजा के प्रमुख कर्तव्यों की सूची बनाइए।
2. निम्नांकित शब्दों का तद्भव लिखिए–

तत्सम	**तद्भव**
धर्म	....
प्रजा	....

3. निम्नांकित शब्दों का अर्थ बताइए–
   जिज्ञासा, विमुख, अनुसरण, संकल्प
4. पठित कहानी के आधार पर 'सदाचार का महत्व' अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखिए।
5. 'राजधर्म' कहानी की प्रमुख शिक्षाओं का सार बताइए।

गृहकार्य

1. नीचे लिखे शब्दों के विलोम शब्द लिखिए–
   अधार्मिक, सुगम, गुण सरस, विषाद
2. एक आदर्श राजा की कहानी अपने शब्दों में लिखिए।
3. किसी नीतिपरक कथा का सारांश अपने शब्दों में लिखिए।

प्रारूप–20

क्रियात्मक अनुसंधान

प्रस्तावना

- अनुसंधान का उद्देश्य
- अनुसंधान के प्रश्न
- आवश्यक परिभाषाएँ
- अनुसंधान का महत्व

अनुसंधान की समीक्षा

- विश्लेषण के पाँच संदर्भ
- सारांश (अनुसंधान का)

विधि

- अनुसंधान करने में प्रयुक्त मुख्य विधियाँ
- प्रविधि तथ्य संकलन के उपकरण
- स्थान एवं प्रतिभागी
- अनुसंधान की योजना
- तथ्यों का विश्लेषण
- विधि का सारांश

संकलन

- प्राप्तियाँ
- तथ्य
- प्रश्नों का पुनः प्रस्तुतीकरण व परिणाम
- प्राप्तियों का सारांश

विवेचना

- निष्कर्ष
- उपयोगिता
- अनुसंधान के गुण व सीमाएँ
- अंतिम निष्कर्ष

संलग्नक

- विभिन्न प्रश्नावलियाँ, सर्वेक्षण आदि

डी०एल०एड० चतुर्थ सेमेस्टर
प्रतिदर्श प्रश्न–पत्र
षष्टम प्रश्न–पत्र

समय : 1 घंटा | विषय : हिंदी | पूर्णांक : 25

निर्देश

1. सभी प्रश्न अनिवार्य है। प्रत्येक प्रश्न के निर्धारित अंक प्रश्न के सम्मुख दिए गए हैं।
2. इस प्रश्न पत्र में तीन प्रकृति के प्रश्न सन्निहित है।
3. वस्तुनिष्ठ प्रश्नों के सही विकल्प छाँटकर अपनी उत्तर पुस्तिका में लिखें। अति लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लगभग तीस (30) शब्दों में, लघु उत्तरीय प्रश्नों के उत्तर लगभग पचास (50) शब्दों में लिखिए।

वस्तुनिष्ठ प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न हेतु एक अंक)

प्रश्न 1. महादेवी वर्मा की रचना है–
(क) साकेत (ख) रश्मिरथी (ग) नीहार (ग) कामायनी

प्रश्न 2. भगवती चरण वर्मा द्वारा लिखा गया उपन्यास है–
(क) गोदान (ख) आकाशदीप (ग) चित्रलेखा (ग) मृगनयनी

प्रश्न 3. 'आधुनिक मीरा' के रूप में जाना जाता है–
(क) सुभद्रा कुमारी चौहान (ख) महादेवी वर्मा (ग) मीराबाई (घ) अनामिका

प्रश्न 4. 'राम चरित मानस' की रचना की गई है–
(क) खड़ी बोली में (ख) अवधी में (ग) ब्रज में (घ) भोजपुरी में

प्रश्न 5 'सूर्योदय' शब्द में संधि है–
(क) गुण संधि (ख) दीर्घ संधि (ग) वृद्धि संधि (घ) अयादि संधि

अति लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न हेतु एक अंक)

प्रश्न 6. 'हिमालय से गंगा निकलती है' यह वाक्य किस कारक से संबंधित है।
प्रश्न 7. हिन्दी में रचित चार आत्मकथा एवं उनके लेखकों का नाम लिखिए।
प्रश्न 8. पुष्प शब्द के चार पर्यायवाची लिखिए।
प्रश्न 9. शब्द भंडार किसे कहते हैं।
प्रश्न 10. 'अँधेर नगरी' एकांकी के लेखक का नाम लिखिए।
प्रश्न 11. 'नमन' और नायक' शब्दों का संधि विच्छेद कीजिए।

लघु उत्तरीय प्रश्न (प्रत्येक प्रश्न हेतु 2 अंक)

प्रश्न 12. लीवरी और आत्मकथा के मूलभूत अंतर को स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 13. कहानी के प्रमुख तत्वों का उल्लेख कीजिए।
प्रश्न 14. भाषा में उच्चारण के महत्त्व को स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 15. अनुस्वार किसे कहते हैं, सोदाहरण स्पष्ट कीजिए।
प्रश्न 16. पाठ्येतर विषयवस्तु से आप क्या समझते हैं? संक्षिप्त टिप्पणी लिखिए।
प्रश्न 17. अनुच्छेदों में शीर्षक देने हेतु ध्यान रखने वाले प्रमुख बिंदुओं को रेखांकित कीजिए।
प्रश्न 18. कंठस्थ किए गए नीतिपरक श्लोक लिखते हुए अर्थ स्पष्ट कीजिए।

शुद्ध वर्ण उच्चारण हेतु ऑडियो

ऑडियो लिंक

https://drive.google.com/file/d/1PS7vNPVbauAL2sKRNLMVhr9IQqU7ZcIA/view?usp=sharing

संदर्भग्रंथ सूची

1. **हिंदी के निर्माता**	–	**कुमुद शर्मा**, भारतीय ज्ञानपीठ प्रकाशन, तीसरा संस्करण
2. **अपनी हिंदी सुधारे**	–	**डॉ० विजय अग्रवाल**, प्रकाशन विभाग, सूचना और प्रसारण मंत्रालय, भारत सरकार, तृतीय संस्करण 2002
3. **सही हिंदी सुंदर हिंदी**	–	**डॉ० विजय अग्रवाल**, अखबार पब्लिशिंग हाउस, भोपाल, प्रथम संस्करण 2015
4. **संप्रेषणमूलक हिंदी**	–	**डॉ० राम प्रकाश**, डॉ० दिनेश गुप्त राधाकृष्ण प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, दूसरा संस्करण 2009
8. **हिन्दी व्याकरण प्रशिक्षण साहित्य**	–	राज्य हिन्दी संस्थान, वाराणसी।
9. **देवनागरी लिपि तथा हिंदी वर्तनी का मानकीकरण**	–	केंद्रीय हिंदी निदेशालय, शिक्षा मंत्रालय, भारत सरकार।
10. **हिंदी व्याकरण**	–	कामताप्रसाद गुरु
11. **आधुनिक हिन्दी व्याकरण और रचना**	–	डॉ० वासुदेवनन्दन प्रसाद
12. **मातृभाषा हिंदी शिक्षण**	–	एन०सी०ई०आर०टी०, नई दिल्ली
13. **हिंदी शिक्षण**	–	डॉ० उमा मंगल

समग्र शिक्षा
Samagra Shiksha

राज्य हिन्दी संस्थान, उत्तर प्रदेश, वाराणसी

(स्थापना वर्ष-1975)

निकट पुलिस लाइन, वाराणसी (पिनकोड-221001)

ई-मेल : rajyahindisansthan1975@gmail.com
वेबसाइट : rajyahindisansthanupvns.org.in